₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

अप्रैल 2018

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

RNI NO.- BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PT.-35

ब्राह्मणों की दुर्दशा

केवल सच सामाजिक संस्थान

भारतीय सोसायटी एक्ट 21, 1860 के तहत निबंधित

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, कंकड़बाग,

पटना-800020,

सम्पर्क संख्या :- 09431073769, 9955077308, 9308727077

ई-मेल :-kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com

निबंधन संख्या : 1141 (2009-10), आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

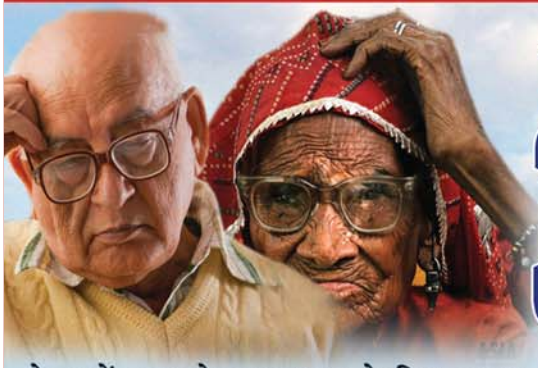

शीघ्र अपने प्रदेश में

अपना घर

बेसहारों का बने सहारा। इसके लिए आपका अनुदान आवश्यक है।
आपका सहयोग कई जीवन को दिशा दे सकता है।
निश्चित सहयोग करें :-

केवल सच सामाजिक संस्थान

खाता संख्या (A/C No.)	-	0600010202404
बैंक (Bank Name)	-	युनाईटेड बैंक ऑफ इंडिया
आईएफएससी कोड (IFSC Code)	-	UTBIOKKB463
पैन नं. (Pan No.)	-	AAAAK9339D

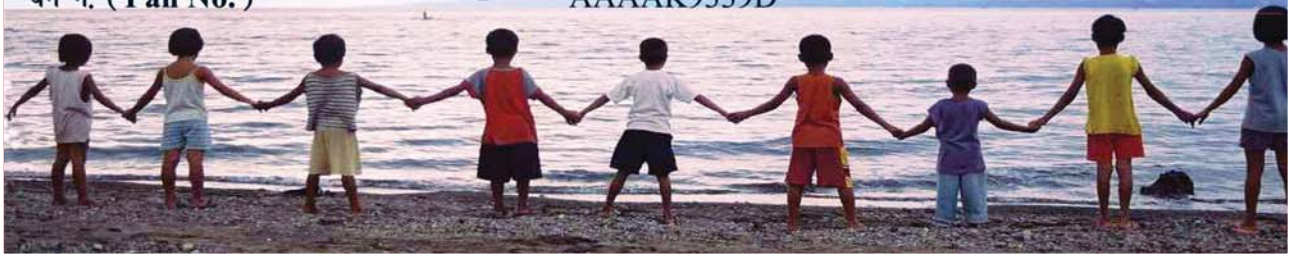

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

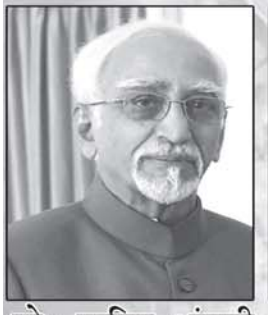

मो० हामिद अंसारी
01 अप्रैल 1937

अजय देवगन
02 अप्रैल 1969

प्रभु देवा
03 अप्रैल 1973

जया प्रदा
03 अप्रैल 1962

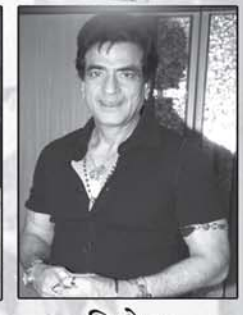

जितेन्द्र
07 अप्रैल 1942

रामगोपाल वर्मा
07 अप्रैल 1962

अल्लु अर्जुन
08 अप्रैल 1983

जया बच्चन
09 अप्रैल 1948

जयराम रमेश
09 अप्रैल 1954

मणिशंकर अय्यर
10 अप्रैल 1941

टैरेंस लेविस
10 अप्रैल 1975

सतीश कौशिक
13 अप्रैल 1956

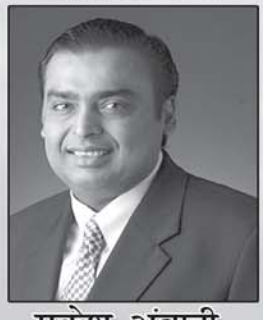

मुकेश अंबानी
14 अप्रैल 1957

मंदिरा बेदी
15 अप्रैल 1972

लारा दत्ता
16 अप्रैल 1978

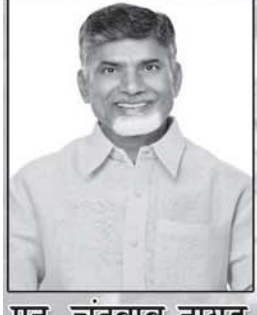

एन. चंद्रबाबू नायडू
20 अप्रैल 1950

चेतन भगत
22 अप्रैल 1974

मनोज बाजपेयी
23 अप्रैल 1969

सचिन तेन्दुलकर
24 अप्रैल 1973

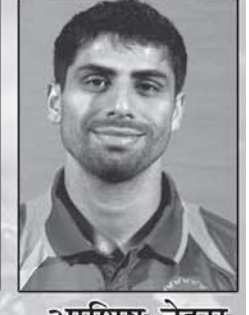

आशिष नेहरा
29 अप्रैल 1979

निर्भीकता हमारी पहचान

www.kewalsach.com

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769, 09308727077
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Sector- 1, Block - 14, Flat No.- 501, Khelgown Houseing Colony, Ranchi - 834009 (Jharkhand)
Mob.- 09955077308,
E-mail:- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha, 97A, DDA Flat, Gulabi bagh, New Delhi- 110007
Mob.- 09868700991, 09955077308
E-mail:- kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube, 131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880 09339740757

Advertisement Rates Per Issue

COLOUR

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE	Qr. PAGE
Cover Page	5,00,000/-	N/A	N/A
Back Page	1,60,000/-	N/A	N/A
Back Inside	1, 00000/-	60,000/-	35000
Back Inner	90,000/-	50,000/-	30000
Middle	1,50,000/-	N/A	N/A
Front Inside	1, 00000/-	60,000/-	40000
Front Inner	90,000/-	50,000/-	30000

B & W

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Inner Page	60,000/-	35,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsach.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

मैं हिन्दुस्तान हूं !

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

भारत देश विश्व का ऐसा अनोखा देश है जहां उसकी पहचान एक नाम से नहीं बल्कि कई नाम से होती है और सभी नाम का अपना अलग महत्व। कुछेक इसको इंडिया कहते हैं तो कई लोग इसको भारत की संज्ञा से नवाजते हैं और तो और बहुसंख्यक इसे हिन्दुस्तान भी कहते हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ इसे हिन्दुस्थान कहता है पर देश धर्मनिरपेक्ष के रूप में विश्व में पहचाना जाता है जहां दर्जन भर धर्म कार्य कर रहा है। यह वही हिन्दुतान है जिसको सोने की चिड़ियाँ के नाम से भी जाना जाता है जिसके सोने को कभी मुगल तो कभी अंग्रेजो ने लूटा। देश में नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री के रूप में कार्य कर रहे हैं और एक भारत - श्रेष्ठ भारत बनाने का सपना तो देख रहे हैं लेकिन इस देश में एक देश -एक कानून बन जाये तभी श्रेष्ठ भारत का सपना साकार होगा। गत 02 अप्रैल 2018 को अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम पर हुए बदलाव को लेकर भारत बंद का आयोजन किया और कई लोगों की जान चली गयी, जिसको बाद में कुर्बानी का भी नाम दिया जायेगा क्योंकि यह हिन्दुस्तान है। सुप्रीम कोर्ट ने 20 मार्च को फैसला सुनाया इसके बाद इस एक्ट से जुड़े राजनेता एवं आमजनों ने भी अपना गुस्सा जाहिर किया और आक्रोश के रूप में भारत बंद में फूट पड़ा। इस मामले को राजनीति से जुड़े लोगों ने जोड़ दिया ताकि उनकी कुर्सी की बादशाहत कायम रहे पर सच तो यही है की भारत बंद से कानूनी मामलों के फैसले नहीं बदले जा सकते अन्यथा राम मंदिर का विवाद कब का समाप्त हो जाता। SC/ST Act 1989 बनाकर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम बनाकर दबंग लोगों पर नकेल कसने की कोशिश की गई थी लेकिन इस एक्ट का सदुपयोग से कहीं ज्यादा राजनीतिक एवं व्यापारिक कारणों से इसका दुरूपयोग भी होने लगा जिसकी वजह से बिना गलती के भी लोग को इस एक्ट के तहत जेल जाना पड़ता है और नहीं तो इससे बचने के लिए मोटी रकम चुकानी पड़ती है। इस देश में जम्मू-कश्मीर में धारा 370 अलग कानून है और उसी की आड़ में पड़ोसी दुश्मन देश पाकिस्तान हमारे जवान का कत्ल करता है और जम्मू-कश्मीर के स्थानीय लोगों यानि के अपने ही देश के लोगों से सेना के जवानों पर पत्थर फेंके जाते हैं और गाल पर तमाचा भी मारने की राजनीति की जाती है, ऐसे में श्रेष्ठ भारत का सपना कैसे साकार होगा? देश के भीतर स्वच्छ भारत - स्वस्थ्य भारत का योजना काम कर रहा है पर हिन्दुस्तान तो तभी स्वस्थ्य होगा जब देश के भीतर स्वच्छ रहने एवं रखने के लिए सरकारी योजना के दम पर कार्य नहीं करना पड़ेगा। 02 अप्रैल के भारत बंद के दरम्यान देश के सभी राजनीतिक दल के दलित-महादलित ने बिना भय के एकत्रित होकर मानव श्रृंखला बनाकर अपनी एकजुटता का परिचय दिया है लेकिन क्या 10 अप्रैल 2018 को सामान्य एवं पिछड़ा-अतिपिछड़ा के द्वारा आहुत भारत बंद में यही एकजुटता दिखेगी या पार्टी निष्कासन की डर की वजह से पर्दे के पीछे से ही राजनीतिक खेल का संचालित किया जायेगा? इस प्रकार की राजनीति से भारत कैसे विश्वगुरू बन सकता है, मोदी जी? 21वीं सदी में पूरी दुनिया अंतरिक्ष में आशियाना बनाने पर कार्य कर रहा है और हिन्दुस्तान जाति-जनजाति के चक्रव्यूह में फंसा हुआ है। आरक्षण एवं जाति के लिए उसी देश में अलग-अलग कानून से क्या वैमनस्ता नहीं उपजेगी? किसी भी जाति को अपमानित किया जायेगा तो उसे बुरा लगेगा लेकिन अलग से कानून सिर्फ SC/ST के लिए ही क्यों? आखिर इस देश के मुस्लिम के लिए अलग से कानून क्यों? तमाम कानून के बाद भी प्रताड़ित होना और उसके लिए आन्दोलन करना सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना नहीं तो क्या है? क्यों नहीं भारत बंद के बजाय मामले को न्यायालय के शरण में ले जाया जाता? पूरा मामला राजनीति से प्रेरित और वोट बैंक का खेल हैं जिसमें मरे लोगों को कोई लाभ नहीं मिलने वाला और सरकार के राजस्व की क्षति वह अलग मामला है। महादलित और दलित परिवार को अपमानित करने वाला सामान्य एवं अन्य वर्ग भले ही अपने आप को दबंग घोषित करे पर हिन्दुस्तान की संस्कृति में अपने भाई को आंख दिखाना सबसे बड़ा अधर्म है। विकसित होती सोच और तकनीक का इस्तेमाल करने वाला भारत का हर जाति देश के विकास के बजाय अपना और अपनी जाति का विकास के मायाजाल में क्यों फंस जाता है? आजादी के बाद से लेकर आज तक हिन्दुस्तान के किसी एक राजनेता या अधिकारी ने यह नहीं कहा कि आरक्षण के लाभ से हम आगे बढ़ चुके हैं असलिए मुझे इस श्रेणी से अलग किया जाये अलबत्ता राजनेता और अधिकारी बड़े ओहदे पर रहने के बाद भी मानसिकता को बदलने में आज तक कामयाब नहीं हुए हैं जैसा प्रतित होता है। मैं वही हिन्दुस्तान हूं जिसको अपने ही सदैव विश्वासघात और षडयंत्र रचते हैं? मैं वही हिन्दुस्तान हूं जिसको किसी बाहरी दुश्मन से ज्यादा अपनो से भय लगता है? मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां बहुतों को मुफ्त में रोटी-कपड़ा-मकान और नौकरी भी मिल जाती है और बेहतर शिक्षा भी? मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां कुछेक को यह सुविधा नहीं मिल पाता क्योंकि वह सामान्य जाति का गरीब है? मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां दुश्मन देश का नारा लगता है? मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां रग-रग में जातिवाद घुस गया है? मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां व्यक्तिगत लाभ के लिए किसी पर जातिगत एक्ट लग जाता है? मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां कानून का ही बलात्कार होता है? अगर ऐसे ही हिन्दुस्तान मैं हूं के चक्कर में रहा तो गुलामी ने दस्तक दे दिया है और परिणाम आना शेष है।

माँ भारती देशवासियों से यह पूछ रही है कि मैं क्या वही हिन्दुस्तान हूं जहां सभ्यता एवं संस्कृति और संस्कार का लोहा मुगल शासक एवं अंग्रेजों ने स्वीकारा था? क्या मैं वही हिन्दुस्तान हूं सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग में भगवान को भी अवतरित होना पड़ा था? क्या मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां बर्बर हत्यारा बाबर का भी साम्रराज्य कायम हो गया था? क्या मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां सनातन धर्म को कुचला गया? क्या मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां व्यापार करने आये अंग्रेजों ने 200 वर्ष गुलाम बना लिया? क्या मैं वहीं हिन्दुस्तान हूं जिसकी आजादी के लिए सभी धर्म के लोगों ने संयुक्त प्रयास करके आजाद किया? क्या मैं वही हिन्दुस्तान हूं जहां जाति से उपर मानवता का प्रभाव था? अगर हाँ तो मुझे जाति एवं धर्म की जंजीर में बांधकर क्यों फिर जख्मी किया जा रहा है? कभी राम मंदिर के नाम पर मेरे बच्चे काटे जाते हैं तो कभी साबरमती एक्सप्रेस में जिन्दा जला दिये जाते हैं और अब तो जातिगत लाभ लेने के लिए भारत बंद कर दिया जाता है और आरक्षण का लाभ लेने के लिए देश की गति को रोक दिया जाता है। 02 अप्रैल 2018 को भारत बंद था और उस बंद से देश को नुकसान हुआ होगा और उसका आंशिक असर उस जाति पर भी पड़ेगा जिसने बंद का आयोजन किया था। भारत बंद अगर देशहित में है तो फिर इसका असर सुखद संदेश देता है लेकिन किसी गाड़ी में आग लगा देना और सिस्टम पर प्रहार करना हिन्दुस्तान की जनता को शोभा नहीं देता जहां अतिथि देवो भवः की परिभाषा को महत्व देती है। मैं अब वह हिन्दुस्तान हूं जहां एक देश तो है पर एक कानून नहीं.....

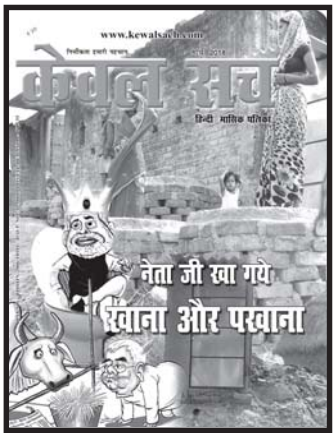

मार्च 2018

हमारा ई-मेल

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

हमारा पता है :-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
द्वारा:- ब्रजेश मिश्र
पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28
कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
फोन:-0612/3240075, 9431073769, 9955077308
kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

नरक निगम

संपादक जी,

पटना नगर निगम की खबर से जानकारी भी मिली और साक्षात्कार से निगम की हकीकत का भी पता चला। जिस अंदाज में खबर को लिखा गया है और उसी तेवर के साथ सरकार एवं निगम के अधिकारी काम करे तो सच में पटना नगर निगम को नरक निगम कहना उचित नहीं होगा परन्तु फिलहाल तो निगम में भ्रष्टाचार चरम पर है। बिना चढ़ावे के कुछ भी काम नहीं होता और पदाधिकारी सिर्फ आश्वासन देते हैं।

✦ **संजय सिन्हा, राजेन्द्र नगर, पटना**

खाना और पखाना

ब्रजेश जी,

केवल सच पत्रिका के मार्च 2018 अंक के आलेख '' नेता जी खा गये खाना और पखाना'' में सरकार के योजनाओं की पोल खोलकर रख दी है। किसी योजना को पदाधिकारी एवं जनप्रतिनिधी मिलकर इस कदर लूटते हैं की खबर सच में प्रकाशित करना चुनौतीपूर्ण तो है पर आप बेबाकी से योजना और योजना में लूट दोनों विषयों को साक्ष्य के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। 100 प्रतिशत सही व सटीक खबर है।

✦ **पप्पु महतो, हिलसा बाजार, नालन्दा**

विक्ट्री मैन मोदी

मिश्रा जी,

मैं आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूं और इसकी सभी खबर को पढ़ता हूं। ऐसा लगता है कि यह पत्रिका भाजपा से प्रभावित है लेकिन खबर में किसी को भी नहीं छोड़ती। मार्च 2018 अंक में अमित कुमार की खबर ''विक्ट्री मैन मोदी'' में त्रिपुरा, मेघालाय और नागालैण्ड में मिली भाजपा की जीत पर सटीक राजनीतिक समीक्षा से लवरेज लगी। राजनीतिक समीक्षा और भ्रष्टाचार की खबर को प्रमुखता के साथ साक्षात्कार को भी प्राथमिकता के साथ पत्रिका के प्रत्येक अंक में स्थान देना वास्तव में सकून दायक है। भ्रष्ट थानेदार नारदीगंज की खबर भी बहुत सटीक लगी।

✦ **युगल किशोर शर्मा, सिकन्दरा, जमुई**

जिम्मेवार कौन

संपादक जी,

मार्च 2018 अंक में आपका संपादकीय ''देश की समस्या जिम्मेवार कौन!'' में आपने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कार्य-पद्धति पर तीखा प्रहार किया है और उन विषयों पर सभी का ध्यान केन्द्रीत किया है जिसके लिए वह जिम्मेवार है। बहुत ही सरलता के साथ आप पूरी बात को स्पष्ट रूप से कह जाते हैं भले ही जिसकी जो प्रतिक्रिया हो। आपकी पत्रिका केवल सच सच्चाई को बड़ी बेबाकी से पाठकों के समक्ष रखती है और खबर में सामने किसी ओहदे पर है उसके परिणाम के परवाह की लिखना सच में काबिले तारिफ एवं पत्रकारिता का सकारात्मक पक्ष है। सटीक खबर।

✦ **जितेन्द्र वर्णवाल, हनुमान नगर, पटना**

शहादत

ब्रजेश जी,

मार्च 2018 अंक में जुमई का शहीद मुजाहीव, किशोर कुमार मुन्ना और सुनील कुमार मुर्मू की खबर को पत्रकार अजय कुमार ने बहुत भावनात्मक ढ़ंग से लिखा है और मामले को सोचने के लिए पाठकों के बीच छोड़ दिया है। दूसरी खबर दोहरे हत्याकांड पर भी सटीक खबर पुलिस को सोचने पर विवश करने लायक है बना दिया है। मदन एवं प्रमोद कोड़ की हत्या पर विश्लेषण के साथ पूरी सच्चाई को रखने का सार्थक पहल किया गया है और पुलिस की कार्य-प्रणाली पर भी पटाक्षेप किया गया है। केवल सच सही मायने में आम आदमी की आवाज है।

✦ **दिनकर सिंह, घंटा घर, भागलपुर**

फर्जी है मैकू राम

मिश्रा जी,

केवल सच लिखने के साथ-साथ भ्रष्टाचार को उजागर करना ही पत्रिका का मूल उद्देश्य प्रतीत होता है। मार्च 2018 अंक में राहेतास जिला के तिलौथू प्रखण्ड के उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य मैकू राम का फर्जीवाडा की खबर को गंभीरता पूर्वक प्रकाशित किया गया है तथा उन तथ्यों को भी फोकस किया गया है जिससे मैकू राम की करतूत के साथ-साथ प्रशासनिक पदाधिकारी की लालच भी स्पष्ट तौर पर झलकता है। रिकॉर्ड रूम को जला देने वाला शिक्षक राजनीतिक एवं प्रशासनिक पकड़ का माहिर है और ऐसे शिक्षकों पर सरकार को नकेल कसना चाहिए।

✦ **मोहन यादव, नासरीगंज, रोहतास**

अन्दर के पन्नों में

न्याय के लिए भटक रही महिला.....41

पत्रकार की हत्या.....91

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, DAVP No.- 129888

समृद्ध भारत खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:- 12 अंक:- 143 माह:- अप्रैल 2018, मूल्य:- 20/- रू०

फाउंडर

गोपाल मिश्र **0612/2362784**

संपादक

ब्रजेश मिश्र 9431073769, 9955077308, 9308727077

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

kewalsach_times@yahoo.com

प्रधान संपादक

सच्चिदानन्द मिश्र 09431878843

संपादकीय सलाहकार

अमोद कुमार (अधिवक्ता) 09431075402

दीपक मिश्रा 09334096060, 09819447012

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद 09308815605, 09122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल 9430000482, 9798874154

रीता सिंह 9471867210, 9308729879

उपसंपादक

डॉ० निर्मल आनन्द 08581837557

अरबिन्द मिश्रा 9934227532, 09576438501

शिवचन्द्र झा 08521329144

संयुक्त संपादक

अमित कुमार ''गुड्डू' 9905244479

amit.kewalsach@gmail.com

सहायक संपादक

रामपाल प्रसाद वर्मा 9939086809, 7079501106

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र 09608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा 9386901616, 7762089203

ललन कुमार 9430243587, 9334813587

विधि सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र 08873004350

शिवानन्द गिरी 09308454485

रणविजय सिंह यादव 09334612716, 09801111138

रवि कुमार पाण्डेय 09507712014

चीफ क्राइम ब्यूरो

प्रिया सिंह मौर्य 7764062233, 9471280310

मिथिलेश कुमार 9934021022, 9431410833

गगन कुमार मिश्र 8210810032, 9835585560

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार 09905244479

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार 09905203164

झारखण्ड सहायक संपादक

अभिजीत दीप 9835916650, 9430192929

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो चीफ

ब्रजेश कुमार मिश्र 9431950636, 9631490205

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची :- अभिषेक मिश्र 09431732481

साहेबगंज :- अनंत मोहन यादव 09546624444

खूँटी :-

जमशेदपुर :-

हजारीबाग :-

जामताड़ा :-

दुमका :-

देवघर :-

धनबाद :-

बोकारो :-

रामगढ़ :-

चाईबासा :-

कोडरमा :-

गिरीडीह :-

चतरा :-

लातेहार :- रविकांत पासवान 9801637947

गोड्डा :-

गुमला :-

पलामू :-

गढ़वा :-

पाकुड़ :-

सरायकेला :-

सिमडेगा :-

लोहरदगा :-

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०) :- श्रीधर पाण्डेय 09470709185

(ग्रा०) :-

भोजपुर :-

बक्सर :- बिन्ध्याचल सिंह 8935909034

कैमूर :-

रोहतास :- अशोक कुमार सिंह 7739706506

:-

गया (श०) :-

(ग्रा०) :-

औरंगाबाद :- मयंक कुमार 9852569398

जहानाबाद :- नवीन कुमार रौशन 9934039939

अरवल :- संतोष कुमार मिश्रा 9934248543

नालन्दा :-

:-

नवादा :-

:-

मुंगेर :-

लखीसराय :-

शेखपुरा :-

बेगूसराय :-

:-

खगड़िया :-

समस्तीपुर :-

जमुई :- अजय कुमार 09430030594

वैशाली :-

:-

छपरा :-

सिवान :- सनोज कुमार 9955672241

:-

गोपालगंज :-

:-

मुजफ्फरपुर :- अविनाश कुमार 9470659050

सीतामढ़ी :-

शिवहर :-

बेतिया :-

बगहा :-

मोतिहारी :-

दरभंगा :-

:-

मधुबनी :-

:-

सहरसा :-

मधेपुरा :-

सुपौल :-

किशनगंज :-

:-

अररिया :-

पूर्णिया :-

कटिहार :-

भागलपुर, :-

(ग्रा०) :-

नवगछिया :-

बांका :-

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
97 ए, डी डी ए फ्लैट
गुलाबी बाग, नई दिल्ली- 110007
मो०-09868700991, 09431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०-09433567880, 09339740757

झारखण्ड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
सेक्टर- 1 ब्लॉक नं.- 22,
फ्लैट नं.- 303,
खेलगांव, होटवार, राँची- 834009
मो०- 9955077308, 9431073769

मध्य प्रदेश कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- नूर आलम
हाउस नं.-74, अटल आवास,
बेलभाँटा, अभनपुर, रायपुर
(छत्तीसगढ़)
मो०-09835845781,
08602674503

दिल्ली हेड

संजय कुमार सिन्हा 09868700991

झारखण्ड हेड

राजेश मिश्रा 09608645414
08083636668
rajeshmishrarti@gmail.com

पश्चिम बंगाल हेड

अजीत दुबे 09433567880
09339740757

उत्तर प्रदेश हेड

गदाधर नाथ मिश्रा 09452127278

महाराष्ट्र हेड

कमोद कुमार कंचन 07783822144

महाराष्ट्र कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- कमोद कुमार कंचन
Swapnapoorti Society,
Phase- 1, Sector - 26,
Nigdi, Pune- 411044
Mob:- 7492868363

आंध्र प्रदेश

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- श्रवण कुमार चंचल
एस के प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज,
प्लॉट संख्या-116, रोड नं.- 25,
आई पी काटेदान,
जिला-रंगारेड्डी, हैदराबाद-500077
मो०- 09700475872, 07842218598

उत्तर प्रदेश कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

उत्तराखण्ड कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

गुजरात कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

राजस्थान कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

हरियाणा कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

कर्नाटक कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

उड़ीसा कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

आसाम कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- शम्भू नाथ मिश्र
रेलवे गेट नं.- 02 राजेन्द्र नगर
वार्ड नं.- 08, लंका, पोस्ट- लंका
जिला-नगावॅ, दिसपुर (आसाम)
मो०- 08135023285, 07631376135

एक नजर इधर भी

संपादकीय व प्रधान कार्यालय:-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ e-mail:- kewalsach@gmail.com,
editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए-17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक-ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☛ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☛ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☛ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☛ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ सभी पद अवैतनिक हैं।

☞ विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- United Bank Of India
IFSC Code :- UTBI0KKB463
PAN No. :- AAJFK0065A

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

प्रदेश अध्यक्ष, बिहार राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

09431016951, 09334110654

झारखण्ड राज्य प्रमंडल ब्यूरो		
संथाल परगना दुमका	आवश्यकता है	
दक्षिणी छोटानागपुर राँची	आवश्यकता है	
उत्तरी छोटानागपुर हजारीबाग	आवश्यकता है	
कोल्हान चाईबासा	आवश्यकता है	
पलामू डाल्टेनगंज	आवश्यकता है	

जुड़ने के लिए सम्पर्क करें:- 9431073769

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो		
पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया		
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

पत्रिका संरक्षक

श्री जय कुमार सिंह :- मंत्री, उद्योग विभाग, बिहार सरकार 9431821104

डॉ० उमाकान्त पाठक :- जेनरल फिजिशियन, MBBS 9835291966

भगवान सिंह कुशवाहा :- पूर्व मंत्री, बिहार सरकार 9431821525

श्री ललन पासवान :- विधायक, चेनारी रालोसपा 9431483540

डॉ० ए० के० सिंह :- शिशु रोग विशेषज्ञ MBBS 9431258927

श्रीमती अरूणा सिंह :- सदस्य, जिला पार्षद, बिक्रमगंज 9931610437

www.kewalsach.com

पर पूरी पत्रिका 30 दिनों तक उपलब्ध

विशेष प्रतिनिधि

राजेश कुमार मिश्र 8757834700, 7004296529

लक्ष्मी नारायण सिंह 9204090774

मणिभूषण तिवारी 9693498852

मनीष कुमार कमलिया 9934964551

कामोद कुमार कंचन 7492868363

आशुतोष कुमार 9430202335, 9304441800

राजीव रंजन 9431657626

दीपनारायण सिंह 9934292882, 8409308484

आनन्द प्रकाश पाण्डेय 9931202352, 7808496247

अनु कुमारी 9471715038, 7542026482

प्रदीप कुमार सिन्हा 9472589853, 9431423138

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद 9122003000, 9431096964

मुकेश कुमार 9835054762, 9304377779

जय प्रसाद 9386899670

कृष्णा प्रसाद 9608084774, 9835829947

दो साल में व्यवस्थित दिखेगा बिहार - शर्मा

नगर विकास एवं आवास मंत्री सुरेश शर्मा का साक्षात्कार करते संपादक ब्रजेश मिश्र

★ नगर विकास मंत्री के रूप में आपकी प्राथमिकता क्या है?

देखिए जो शहरी क्षेत्र की बिहार की प्राथमिकता है, नगर विकास मंत्री की भी वही प्राथमिकता है। पहली प्राथमिकता है कि जल जमाव की समस्या शहर के अंदर कई शहरों में जल जमाव की समस्या है उसमें पटना काफी पीड़ित होता है, उसके लिए हमलोगों ने व्यवस्था किया है। क्योंकि पूरे पटना में सिवरेज नाला की व्यवस्था सभी जगह हो, लगातार हमलोग मिटिंग कर रहे हैं। पटना में पानी कहाँ से कहाँ निकलेगा, इस पर हमलोग काम कर रहे हैं। हमारा प्रयास है कि करीब-करीब पानी नहीं लगने दिया जाएगा, इसकी व्यवस्था हमलोगों ने की है और कर रहे हैं। शहर से पानी निकल कर चला जाए और वह साफ होकर के सिंचाई के काम में आए। अगर शहर का कोई भी पानी नदी में जाता है। जैसे पुनपुन में जाता है तो वह पानी गंदा नहीं जायेगा, वह पानी साफ होकर नदी में जायेगा तो यह हमारी पहली प्राथमिकता है और दूसरी हमारी प्राथमिकता है कि कचरा है इसका प्रबंधन सही नहीं होगा तो प्रधानमंत्री जी का जो सपना है, उनका मिशन है, आप स्वच्छ रहे तो स्वस्थ रहेंगे। उसके लिए हमलोगों ने कचरा प्रबंधन की व्यवस्था किया है, उसको दो रूप में किये है। पहला एक फर्टिलाइजर बनाने के काम में सही जगह प्रोजेक्ट लग रहा है। जिससे जैविक खाद बनाया जायेगा क्योंकि केमिकल खाद का कम से कम प्रयोग हो और जैविक खाद का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा कृषि में हो इसका बहुत बड़ा लाभ होगा और दूसरा है उससे हम सौलिड एनर्जी का प्रयोग कर रहे हैं। प्रतिदिन 500 टन कचरा निकलता है। उस कचरा से बिजली पैदा हो, जिससे देश में बिजली की समस्या भी न हो और तीसरा हमारा पीने का पानी और जो नली-गली है, जो सात निश्चय में मुख्यमंत्री जी का निश्चय है। उन निश्चय में तीन निश्चय है। उस निश्चय में तीन निश्चय नगर निगम, नगर विकास से जूड़ा हुआ है। जिससे शुद्ध पेयजल की व्यवस्था उसके लिए अभी हमलोगों ने त्वरित व्यवस्था इस गर्मी में किये हैं। सेमेरसेबुल लगाकर किसी तरह पानी की व्यवस्था की जाए। पाईप लाईन बिछाकर सभी जगह पानी को पहुंचाया जाए। इसके बाद सड़क को एन.एच. से जोड़ा जा रहा है। जितने भी वार्ड के अंदर सड़के है, उसे भी बनाया जा रहा है। इस वित्तीय वर्ष 2018-2019 में हमारी योजना है कि कोई भी पटना एवं अन्य शहरों में कच्ची या टूटी हुई सड़क नहीं रह जाए, इस योजना पर काम चल रही है। जहां वार्ड है, उस वार्ड में वार्ड पार्षद के अनुशंसा पर काम हो रहा है। साथ-साथ ईएसएल कंपनी से शहर में रौशनी की व्यवस्था के लिए बात हुए है। जहां-जहां बड़े-बड़े लाइट लगी हुई है। वहां-वहां पर एलईडी लाइट लगाकर रौशनी के साथ-साथ खर्च को नगर विकास विभाग बचाने के काम कर रही है। ये सब चार-पांच चीजें हैं जो हमारी प्राथमिकता में है।

★ बिहार प्रदेश के किन-किन शहरों को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने का कार्य कर रहा नगर विकास विभाग?

देखिए, स्मार्ट सिटी चार के चार योजना में था और चार के चार कम्पलिट किया है। उसमें पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर और बिहारशरीफ किया। चार का काम का उसका प्राधिकरण बन रहा है। मुजफ्फरपुर का भी बन रहा है, अभी तुरंत बना है। बिहार शरीफ अभी प्रोसेस किया गया है और भागलपुर का पहले से बना हुआ है तो ऐसा शहर बनना चाहिए जिसमें सड़के, नाला, पीने का पानी, पार्क, लाइटिंग की व्यवस्था हो और कम्युनिकेशन का भी। ये सभी चीजों की व्यवस्था करा रहे हैं जिससे ये चारो शहर स्मार्ट सिटी बने और काम शुरू हो गया है।

★ पटना नगर निगम को शहर की जनता पटना नरक निगम कहती है, आपकी नजर में इसपर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

देखिए, नरक निगम जो कहती है, वह यही जल-जमाव और कचरा के चलते कहती है। मैने पहले ही आपसे कहा है कि इसका प्रबंधन हमलोग काफी तेजी से कर रहे हैं और 2018 में ये दोनों चीजे सॉल्भ होते नजर आयेगा, तब जनता कहेगी कि पटना नरक निगम नहीं, पटना स्वर्ग निगम है।

★ निगम के क्षेत्र में फूटपाथ पर निगम के लापरवाही के कारण अतिक्रमण है, इससे निजात दिलाये बगैर नगर कैसे व्यवस्थित दिखेगा?

देखिए, फूटपाथ पर से सभी को हटाया जा रहा है। उनलोगों को फूटपाथ से हटाकर के वेंडिग जोन बनाकर बसाने का काम चल रहा है। हमलोग आइडेंटीफाई करके, जैसे जो लोग गरीब हैं, उसे फूटपाथ से हटाने के बाद उसे कहा रखा जाए इस पर कम चल रहा है। उसे रहने के साथ-साथ उसे रोजी-रोटी के लिए दुकानदारी करने के लिए कही न कही जगह की व्यवस्था भी हम कर रहे हैं। हटाना और बसाना, दोनो समांतर प्रयास है। सरकार का जो हो रहा है।

★ क्या यह सच नहीं है कि पटना, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, गया, भागलपुर, सिवान एवं पूर्णिया जैसे नगर की हालत भी नहीं सुधर रही है, वैसे में अन्य

नगरों के विकास का दावा करने सिर्फ राजनीतिक आते हैं?

देखिए, सवाल इस बात का है कि शहर बने लेकिन शहर का पॉपुलेशन जस्ट डबल-ट्रीपल हो गया है और वह लोग सही ढ़ंग से नहीं बसे हैं। एक होता है कि स्मार्ट सीटी बनाना और दूसरा कि पुराने शहरों को व्यवस्थित ढ़ंग से ठीक करके स्मार्ट सिटी बनाना, उसको स्मार्ट किया जा रहा है। उसमें तो टाइम लगेगा। स्मार्ट बनाने के लिए काम हो रहा है। जैसे सड़कों का चौड़ीकरण किया जा रहा है। सभी शहरों से जल-जमाव की समस्या को निजात दिलाना है, जितने भी नाम लिए हैं। शहर का उन सभी शहरों को 150 करोड़ रूपया नाला के द्वारा पानी निकालने के लिए दिया गया है, तो यह सब कार्य भी शहर को सुंदर बनाने के लिए ही किया जा रहा है और लगभग दो सालों में आपको लगेगा कि इन सभी शहरों में काफी परिवर्तन हुआ है। जनता जिस सुख-सुविधा के लिए अर्बन एरिया में आती है। वह सुख-सुविधा दिखेगा और मिलेगा।

★ नगर विकास एवं आवास विभाग किस योजना के तहत प्रदेश के किन-किन जिलों में आवासीय व्यवस्था पर कार्य कर रहा है?

देखिए नगर आवास जो है, वह बिल्कुल ही अलग है उसमें जो लोग काम किए हैं वह बहुत कम काम हुआ है। उसमें कुछ लोग अवैध रूप से कब्जा किए हुए हैं। हमलोग इसकी सूचि बना रहे हैं और खाली करवा भी रहे हैं। नए बिल्डिंग बनाने के लिए बॉयलॉज भी बनाये हैं। हमलोगों ने और उसके तहत मकान पटना में, भागलपुर में, छपरा में, मुजफ्फरपुर में, दरभंगा में, आरा में भी, गया में, इन सब शहरों में जो जमीन है, उस पर बिल्डिंग बनाने का निर्णय लिया गया है। इसलिए हम फंड भी अरेंज कर रहे हैं कि इन सभी शहरों में कैसे जल्द से जल्द बने और पी.पी. मोड पर भी उसको बनायेंगे, जो प्रधानमंत्री जी की योजना है कि हर व्यक्ति को घर मिलना चाहिए, उसे मिलेगा।

★ नीतीश कुमार का बार-बार इस्तीफा एवं शपथ ग्रहण की वजह से बिहार के विकास में कितना नुकसान हुआ है? इस बात की क्या गारंटी है की नीतीश कुमार फिर भाजपा से अलग नहीं होंगे?

देखिए, विकास का मुद्दा केन्द्र का है। केन्द्र सरकार कहती है कि सबका साथ-सबका विकास। पहले जो सरकार थी, उसके मुद्दे कुछ और थें। गरीबी हटाओ देश बचाओ। गरीबी हटा ही नहीं। न ही गरीबी हटा और न ही गरीब हटा। अभी प्रधानमंत्री का जो एजेंडा है उस ट्रैक पर सारा देश आ रहा है, तभी तो 21 राज्यों में इसकी सरकार है। बिहार में हमारे माननीय नीतीश कुमार जी सरकार में हैं। वह भी समझ रहे हैं कि एक मात्र विकास ही सत्ता में रहने का विकल्प मात्र है और वह उसी सोच के साथ बिहार के विकास में भिड़े हुए हैं। बिहार सरकार और केन्द्र सरकार साथ मिलकर बिहार के विकास पर काम कर रही है। पहले भी एनडीए सरकार काम कर रही थी। बीच में कुछ हद तक डाउन हुआ था, अब सब ठीक है। अब ट्रैक पर मामला आ रहा है। जब तक केन्द्र सरकार और राज्य सरकार साथ मिलकर नहीं चलेगी तो किसी भी राज्य का विकास नहीं होगा यानि दोनो चक्का साथ मिलकर चलने से ही गाड़ी आगे बढ़ती है। अब देखिए विकास हो रहा है।

★ बिहार की आर्थिक राजधानी का दर्जा रखने वाला मुजफ्फरपुर नगर के विकास के लिए आपकी कोई विशेष पहल, जिसको लोग वर्षों तक आपको बतौर नगर विकास मंत्री के रूप में याद करते रहें?

देखिए मुजफ्फरपुर की जितनी भी सड़के हैं, वहां आप देख रहे हैं कि वह सारी सड़के कितनी चौड़ी और अच्छी बन रही है। आप देख रहे हैं और बाकि बचे सड़कों का टेंडर हुआ है। सबसे जरूरी है कि वहां सड़के अच्छी बने और पाइप लाईन से पानी मिलने की व्यवस्था उनको हो रही है और जल-जमाव से निजात पाने के लिए टेंडर में चला गया है। पानी निकालने की व्यवस्था हो रही है, इसके अलावा उस शहर में पार्क की भी बेहतर व्यवस्था हम देख रहे हैं, जो पुराने हो गए थे खेल मैदान, उसको भी हमलोग नए ढ़ंग से मरम्मत करवा कर नए ढ़ंग से व्यवस्थित कर रहे हैं। वहां इंडोर स्टेडीयम बना है। यह सब सारी चीजें वहां बन रही है। वहां पर वेडिंग जोन भी आइडेंटीफाई भी हुआ है। यह सबके लिए जो लेबर बाहर से आते हैं, उनके लिए भी आश्रय घर भी बनवा रहे हैं। यह सब काम हो रहा है। यह सब वहां के लिए यादगार होगा। यहां पर कचरा प्रबंधन का काम हो रहा है। प्रोजेक्ट भी लगने जा रहा है जो विदेश से यूएसए की टेक्नोलॉजी है। उस कचड़ा से बिजली एवं जैविक खाद बनाकर उपयोग करेंगे। वहां पर एयरपोर्ट का भी प्रपोजल हमने दिया है कि वहां पर एयरपोर्ट भी बने। एयरपोर्ट कभी समय में था, लेकिन अभी उसे नए ढ़ंग से इनोरेट करके नए ढ़ंग से बनाया जाएगा।

★ नगर के विकास के लिए आपके विभाग के पास सभी संसाधन एवं पर्याप्त धन उपलब्ध है या जनता को जुमला दिखाया जा रहा है?

देखिए, धन की कमी नहीं है। सभी लोग धन देने के लिए सभी बैंक बैठा हुआ है। कही पैसे की कमी नहीं है। कमी थी तो स्टाफिंग क्षमता की कमी थी, टेक्नीकल स्टाफ विंग की कमी थी और टेक्नीकल स्टाफ विंग मजबूत नहीं था। यह सब समस्या के लिए कैबिनेट में भेजा गया है। उसको भी दूर कर दिया जायेगा।

★ नगर एवं आवास विभाग के मंत्री बनने के बाद ऐसी कौन सा कार्य किया जिससे विभाग को नुकसान और विकास में बाधक था?

देखिए, बाधक तो यही है कि स्टाफ की कमी थी। हमने इसको आसान तरीका किया है और बहाली भी हो रही है और स्टाफ भी आ रहे हैं और नगर निगम की जो कमियां थी, उसको हमलोग दूर कर रहे हैं। टेंडर जल्द फाईनल होगा, फाइनेलाईज जल्द होगा। स्टाफ रहने से काम की गति तेज हो जायेगी, काम की गुणवत्ता सही हो जायेगा।

★ बिहार के सभी नगरों के नगर निगम में भ्रष्टाचार चरम पर है उसपर नकेल कसने की आपकी कोई योजना?

देखिए, भ्रष्टाचार जो है, यह कहना की सभी में है वह सही नहीं है। जो सरकार की नीति है कि सभी विभाग को ऑनलाईन कर देना, वह हो रहा है। जहां जाने से लोगों को दिक्कत होती थी, जैसे जन्म प्रमाण पत्र लेना है, मृत्यु प्रमाण पत्र लेना है, अन्य बहुत सारी चीजे हैं जिसे ऑनलाईन किया जा रहा है तो इससे भी भ्रष्टाचार कम होगा। दूसरी चीज यह है कि सिस्टम को इनोरेट किया है। ट्रांसफर, पोस्टिंग का केस हमलोगों ने लिया है। इन सभी काम को करने से आज काफी भ्रष्टाचार में कमी हो रहा है। हम समझते हैं कि एक-दो साल के अंदर लगेगा कि कोई आदमी गलत करने से पहले सोचेगा हमने कईयों को सस्पेंड भी किया है। जेल भी भेजा, जो लोग गलत किये है। उसमें मेयर भी जेल गये हैं, वार्ड पार्षद भी जेल गये हैं। एग्जीटीव ऑफिसर भी जेल गये है, जो गलत करेगा वह मेरे कलम से बचेगा नहीं, वह कोई भी हो।

★ नगर विकास के लिए आपकी कोई ऐसी प्रोजेक्ट जिसको आपके पूर्व के मंत्री ने सोचा भी नहीं होगा?

देखिए, हर मंत्री का अपना-अपना सोच होता है। हमें मुख्यमंत्री जी ने जो विभाग दिया है, वह जानते हैं कि नगर विकास विभाग है। उनको मालूम है कि नगर विकास विभाग के बारे में मुझे बहुत सारी चीजों की जानकारी है और तभी वह यह विभाग मुझे दिया है। बेहतर काम हो रहा है, यह बात मैं नहीं बल्कि लोग कह रहे हैं। लेकिन मेरा कहना है कि अभी तो इसकी शुरूआत हुई है और अब इसका असर एक साल में देखने को सही में मिलेगा।

★ सफाई के नाम पर भयंकर लूट है और इसका हिस्सा विभाग के पदाधिकारी, कर्मचारी सहित राजनेताओं तक पहुंचता है, क्या यह आरोप सच नहीं है।

नहीं यह आरोप गलत है। कोई नेताओं तक पहुंचने की बात गलत है। ठीक है कोई स्टाफ कुछ खा लिया होता हो तो, मैं यह नहीं कह सकता। लेकिन, उसमें क्या ले सकता है। इसलिए यह सब बात गलत आरोप है।

★ कई मंत्री कहते हैं कि उनके विभाग के पदाधिकारी एवं प्रधान सचिव मंत्री की बात नहीं सुनते, आपको क्या लगता है इस विषय पर?

मेरे प्रधान सचिव तो एक-एक बात अक्षरस: सभी सुनते हैं। अगर मैं कुछ बोल देता हूं तो अगले दिन इसका रिजल्ट होता है। वह सभी स्टाफ को बोल देते हैं कि मंत्री जी का यह आदेश हुआ है और वह सभी बातों को सुनते हैं।

★ दिल्ली एवं मुम्बई की तरह कोई आवासीय कॉलोनी बनाने की आपके विभाग की योजना है?

देखिए मैने पहले ही कहा है कि जो भी सरकार की जमीन हैं एवं आवास बोर्ड की जमीन हैं उन पर मकान बनायेंगे फिर गरीब लोगों को वहां बसाने का कार्य करेंगे। प्रधानमंत्री जी का सपना को पूरा करना है और एक-दो साल के भीतर सबकुछ दिखने लगेगा।

★ विभाग में प्राईवेट गाड़ियों के भ्रमण का जाँच पद्धति क्या है और किस आधार पर भुगतान किया जाता है?

हमारे विभाग में जो गाड़ी है, वह तो हमारे विभाग की ही है और हमारे यहां भाड़े पर कोई भी गाड़ी नहीं आई है।

★ नगर विकास विभाग के बतौर मंत्री बिहारवासियों से क्या अपील करना चाहते हैं?

मैं बिहारवासियों को यही अपील करना चाहता हूं कि वह सरकार के नियमानुसार सड़क पर अतिक्रमण न करे और सड़क के चौड़ीकरण होने में बाधक नहीं बने। पानी निकलने के लिए नाला बनने दे और सहयोग करे और विकास की गति को बढ़ाए, जिसमें जनता की भूमिका अहम होती है। सरकार के साथ चले और सहयोग करे। दोनों के आपसी सहयोग से ही विकास का कार्य किया जा सकता है।

कोई निर्दोष नहीं फंसेगा- द्विवेदी

डीजीपी बिहार कृष्ण स्वरूप द्विवेदी का साक्षात्कार करते संपादक ब्रजेश मिश्र

★ बतौर पुलिस महानिदेशक, बिहार क्या प्राथमिकता है आपकी?

अपराध नियंत्रण। विधि-व्यवस्था को कारगर बनाना! जनमानस के विश्वास की कसौटी पर खरा उतरना। आवाम को पुलिस के प्रति विश्वास बढ़ाना। जनमानस को अपराध नियंत्रण के लिए जागृत करना। यह सभी डीजीपी के प्राथमिकता रही है और मेरी भी है।

★ बिहार में अपराधियों एवं माफियाओं का वर्चस्व फिर से कायम होता जा रहा है, इसपर अंकुश कैसे लगेगा?

सबसे पहले तो यह बात समझ लें की बिहार में अपराधियों एवं माफियाओं का वर्चस्व फिर से कायम नहीं हो रहा है बल्कि इनका मनोबल भी गिर चुका है और साम्राज्य भी पत्तन हो चुका है। अंकुश का ही तो नतीजा है की अपराधियों का मनोबल गिरा हुआ है। बिहार पुलिस सक्रियता के साथ काम कर रही है।

★ रामनवमी 2018 में बिहार के कई जिलों में आगजनी और दंगा पर बिहार पुलिस क्या कर रही है और निर्दोश लोगों को भी इस कांड में क्यो घसीटा जा रहा है?

रामनवमी 2018 में हुए साम्प्रदायिक माहौल में बगैर साक्ष्य के एक भी व्यक्ति पर चार्जशीट नहीं दाखिल होगा और दोषी लोगों को बख्शा भी नहीं जायेगा। इस मामले के लिए वरीय पुलिस पदाधिकारियों की कमिटि बनायी गई है और यह रिपोर्ट में जिन दोषी का नाम होगा उन्हें जेल जाना होगा और जिनकी भूमिका नहीं रही है उन्हें पुलिस परेशान नहीं करेगी और उन्हें केश से बाहर निकाल दिया जायेगा। पुलिस कानून के तहत ही कार्य करेगी और किसी को बेवजह फंसाया नहीं जायेगा।

★ एक थाना प्रभारी एक ही थाना में कितने साल लगातार थाना प्रभारी उसी थाने में किस नियमावली के तहत रह सकता है डीजीपी साहेब?

नियमावली के तहत पोस्टिंग एवं ट्रांस्फर होता और नियम के विरूद्ध कार्य करने वाले को विभाग दंडित करता है और ऐसा कोई मामला है तो उसे देखा जायेगा।

★ शराबबंदी एवं दहेजबंदी की वजह से पुलिस विभाग को अपराध नियंत्रण में किस प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, आपकी नजरों में?

कोई परेशानी नहीं है। हम काम करने में विश्वास रखते हैं बोलने में नहीं। शराबबंदी और दहेजबंदी एक मजबूत कानून है और कानून के तहत बिहार पुलिस का जो कार्य है उसे हम मुस्तैदी के साथ कर रहे हैं।

★ पूरे बिहार में अतिक्रमण से प्रत्येक माह करोड़ों रूपये पुलिस अवैध रूप से वसूलती है, क्या यह सच नहीं है?

ऐसा आरोप सच नहीं है और कुछ लोग व्यक्तिगत इस प्रकार का कार्य करते हैं तो निगरानी उनको दबोचती भी है और उनपर कार्रवाई भी होता है।

★ पुलिस विभाग को यह नहीं पता कि थाने के मुंशी ही थाना चलाते हैं?

ऐसा बिल्कुल ही नहीं है और अगर ऐसा आपके भी संज्ञान में हैं तो बतायें उसपर काईवाई अवश्य होगी। थाना को थानेदार चलाते हैं और चलायेंगे।

★ बिना नजराने के थाना एवं अनुंडल स्तर पर कुछ काम नहीं होता इसकी मुख्य वजह

क्या मानते हैं आप डीजीपी साहब?

ऐसी कोई बात ही नहीं है और जो गलत पकड़े जाते हैं उनपर ठोस कार्रवाई होती है और आगे भी होती रहेगी।

★ क्या आप भी यह मानते हैं कि किसी भी केश के सुपरवीजन रिपोर्ट में डीएसपी घटना स्थल पर पहुंचे ही रीडर के द्वारा हो जाता है सुपरवीजन में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार है?

मैं नहीं मानता। ऐसा होता है तो उसके वरीय अधिकारी उसकी जांच करते हैं और गलत होगा तो उसपर काईवाई हो सकती है। सिर्फ आरोप लगाने का कार्य नहीं होना चाहिए बल्कि किसी समस्या के समाधान के लिए मार्ग को प्रशस्त करना चाहिए।

★ सामाजिक व्यक्ति से अधिक दलालों का प्रभाव ज्यादा असरकारी लगता है थानों में, आखिर शांति कमिटि के क्या मायने हैं आपकी नजरों में?

ऐसा बिल्कुल नहीं है। कहीं ऐसा लगे तो बताईये, उसपर कार्रवाई होगी। अच्छे लोगों की कद्र सभी जगहों पर होती है और पुलिस विभाग भी अपनी मर्यादा जानता है।

★ किसी दलित एवं महादलित को जाति का नाम लेने पर हरिजन एक्ट लग जाता है पर पूजा-पाठ के कार्य करने वालों को पंडितवा किसी एक्ट के तहत आता है?

किसी भी व्यक्ति को किसी के प्रति भेद-भाव नहीं रखना चाहिए और दूसरे का सम्मान करने वाला व्यक्ति खुद भी सम्मानित होता है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति एक्ट है और वह सही दिशा में काम कर रहा है। किसी गलत को कोई फंसा नहीं सकता और दोषी शिकंजे में जायेंगे ही।

★ क्या पुलिस विभाग से जुड़े हुए बहुसंख्यक पुलिस पदाधिकारी एवं कर्मचारी भी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं, वैसे में सरकारी योजनाओं का लाभ कैसे बिहारवासी तक पहुंचेगा?

यह आरोप बेबुनियाद है और आपका प्रश्न सिर्फ इलीगेशन वाला है। अगर कोई भी भ्रष्टाचार करेगा या कानून को नहीं मानता उसको दंड मिलता है और अभी जब एसपी पर कार्रवाई हो सकती है। कोई भी भ्रष्ट की जानकारी आपको है और उसका प्रमाण है तो आप मुझे दें उसपर ठोस एवं त्वरित कार्रवाई अवश्य होगी और कानून का राज स्थापित है बिहार में। सरकार की योजनाओं का लाभ जनमानस तक पहुंचाना हमारा काम नहीं है लेकिन भ्रष्टाचार पर नकेल कसना हमारी जिम्मेवारी है और पुलिस विभाग अपनी जिम्मेवारी को समझती है की उसको क्या करना है।

★ अपराध नियंत्रण एवं किसी केश के अनुसंधान करने के सभी मशीनरी उपलब्ध है पुलिस विभाग में?

बिल्कुल सभी संसाधन उपलब्ध हैं विभाग में। पुलिस का मुख्य संसाधन होता है उसका विवेक एवं मनोबल और बिहार पुलिस इस मामले में पूर्णत: सक्रिय है।

★ आखिर किन कारणों की वजह से बेसरा की रिपोर्ट वर्षों बाद भी नहीं मिलते?

ऐसा नहीं है की बेसरा में वर्षों लग जाते हैं बल्कि मामले की गंभीरता से पुलिस कार्य करती है और हमेशा करेगी।

★ जितनी मुस्तैदी एवं सक्रियता हेलमेट चेकिंग में पुलिस दिखाती है, उतनी चौकसी अपराध नियंत्रण में क्यों नहीं दिखता?

दोनों का काम अलग - अलग है और पुलिस दोनों ही कार्य को मुस्तैदी से करती है और करेगी। आंकड़े बताते हैं कि हेलमेट चेक करने में भी हमारी पुलिस सक्रिय है और अपराध नियंत्रण एवं विधि-व्यवस्था को दुरूस्त रखने में भी बिहार पुलिस चौकस है।

★ कलियुग में कृष्ण का बहुत महत्व है और आपका नाम भी कृष्ण स्वरूप द्विवेदी है, अपने डीजीपी कार्यकाल में ऐसा क्या कुछ करना चाहते हैं जो मिसाल बने?

जनमानस का विश्वास जीतने के साथ-साथ विधि-व्यवस्था को मजबूत बनाना और अपराध नियंत्रण को प्रभावकारी बनाना। अच्छा कार्य संपादित हो और सभी का विश्वास जीत सकें तथा अपराध पर नियंत्रण सदैव हो यह करना चाहते हैं।

★ भागलपुर दंगा का आपको आरोपी मानते हैं विपक्षी दल, सच क्या है साहब?

विपक्षी दल वाले क्या सोचते एवं क्या मानते हैं मैं नहीं जानता और मैं भागलपुर दंगा का कभी आरोपी नहीं रहा हूं बल्कि गवाह था।

★ आखिर किन कारणों की वजह से अपराधी के बजाय आम आदमी ही पुलिस से डरती है?

ऐसा बिल्कुल नहीं है की आम आदमी या शरीफ व्यक्ति कभी पुलिस से डरती है। हाँ अपराधी एवं असामाजिक लोगों को डर लगता होगा और उन्हें डर लगना भी चाहिए। पुलिस दिन प्रतिदिन लोगों का विश्वास जीतने में कामयाब हो रही है ।

★ मोबाइल, गाड़ी चोरी हो या अन्य कोई मामला केश का आईओ पीड़ित व्यक्ति से पैसे क्यों मांगता है?

गलत आरोप है। ऐसा करने वाले पर कार्रवाई होगी। ऐसे कार्य करने वाले के विरूद्ध वरीय अधिकारी से शिकायत करें। मेरे यहां ऐसे कार्य की गुंजाईश नहीं है।

★ पुलिस विभाग में एसपी भी जातिवाद करने से परहेज नहीं करते, क्या होगा उस जिले में जहां एसपी ही जातिवाद को बढ़ावा दे रहा हो?

यह आरोप गलत है और जो वरीय पदाधिकारी ऐसा करता है उसको उसकी करनी ही दंड की भागीदार बना देती है। कानून से कोई बड़ा नहीं होता और वक्त सभी विषयों का सही समय पर मूल्यांकन करती है।

★ आप भी मानते हैं की बीएमपी के जवान सिर्फ वीआईपी सुरक्षा में लगे हैं और थाना होमगार्ड के जवान के भरोसे है?

ऐसा कतई नहीं है। बिहार पुलिस के सभी अंग हैं और सभी की अपनी-अपनी जिम्मेवारी है और उसका निभाना ही पुलिस का धर्म है।

★ क्यों नहीं थाने में सीसीटीवी कैमरा लगाया जाता जहां मुंशी की मुंशीगिरी पुलिस महकमे को कलंकित करती है?

इस दिशा में कार्रवाई चल रही है और इसके लिए विभाग सक्रिय है।

★ पुलिस विभाग के भ्रष्टों को कोई नसीहत भी देंगे क्या?

गलत कार्य को करने वाले को एक न एक दिन उनकी करनी का दंड मिलता है और वह कितनी भी पहुंच क्यों न रखें वह बच नहीं सकते। वरीय अधिकारी हो या जवान सभी के प्रयास से बेहतर माहौल दिया जा सकता है और व्यक्तिगत लालच रखने वाले एक दिन सार्वजनिक हो जाते हैं और उन्हें परेशानी झेलनी पड़ती है।

★ पुलिस विभाग के बतौर डीजीपी बिहारवासियों से क्या अपील करना चाहते हैं?

बिहार की जनता से यह कहना चाहूंगा की आप निर्भिक होकर थाने में जाकर प्राथमिकी दर्ज करें और पुलिस को सहयोग करें। आप पुलिस विभाग पर दिल से भरोसा रखें हम अपना दायित्व एवं कर्त्तव्य को समझते हैं। विधि-व्यवस्था को कारगर बनाने में आमजन की भी सहभागिता काफी महत्वपूर्ण होती है और आपसी सहयोग से एक सुन्दर एवं भयमुक्त माहौल बनाया जा सकता है। सत्य का सदैव साथ दें और जब तक आवाम नहीं चाहती तब तक बेहतर माहौल नहीं बन पाता। पुलिस एवं जनता एक दूसरे की पूरक है और दोनों मिलकर कार्य करे तो निश्चित तौर पर सुखद संदेश जायेगा।

नासमझी की प्रकाष्ठा है जल के महत्व को नकारना

● **ललन कुमार प्रसाद**

पानी के बगैर हम जिन्दा नहीं रह सकते। मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी, कीड़े-मकौड़े और पेड़- पौधे भी पानी के बगैर जिन्दा नहीं रह सकते हैं। जल जीव तो जल जीव हैं, वे 24 घंटे पानी में रहते हैं। वे भला पानी के बाहर कैसे जीवित रह सकते हैं। मछली को पानी से निकाल लिजिए, वह पानी के बाहर कुछ ही मिनटों तक जीवित रह सकती है।

पानी के बगैर न तो कोई अनाज पैदा कर सकते हैं और ना ही कोई सब्जी और फल। ऐसे में हम खाएंगे क्या? और बगैर कुछ खाए जिंदा कैसे रह सकते हैं? पानी के बगैर हम अपना नित्य क्रियाक्रम भी संपन्न नहीं कर सकते हैं। न शौच जा सकते हैं, न ब्रश कर सकते हैं, ना हांथ-मुंह धोह सकते हैं और न स्नान कर सकते हैं।

विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को सही ढ़ंग से कार्य करने के लिए शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी का रहना बेहद जरूरी है। पानी हमारे शरीर में बनने वाले विभिन्न जहरीली पदार्थों को जैसे मल, मूत्र, पसीना आदि के रूप में निरंतर शरीर से बाहर निकालता रहता है, शरीर की प्रत्येक कोशिकाओं को खून के माध्यम से पोषक तत्वों को पहुंचाता रहता है। नाक, कान, गला, आंख आदि के उत्तकों को नम वातावरण उपलब्ध कराता रहता है। जिससे की पलक झपकाते रहने के दौरान आँखों को कोई तकलीफ नहीं होती है। शरीर में उचित मात्रा में पानी बने रहने से शरीर का तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) संतुलित बना रहता है। दैनिक कार्य क्षमता को सुदृढ़ बनाए रखने तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाए रखने के लिए शरीर में समुचित मात्रा में पानी का बने रहना बेहद जरूरी है।

यह मत भूले की हवा, पानी और भोजन बुनियादी तत्व होने के साथ-साथ जीवन की मूलभूत जरूरतों में से एक है। यही कारण है कि जब हम जीवन की खोज करते हैं तो हवा के बाद सबसे पहले एक बूंद पानी ढूंढ़ते हैं।

दरअसल, पानी हमारी सभ्यता और संस्कृति के साथ गहराई से जुड़ा रहा है, इसलिए संसार के सभी सभ्यताएं चाहे वह सिंधु घाटी सभ्यता हो मिस्त्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता। नदियों तथा अन्य जलस्त्रोतों के आस-पास ही विकसित हुई है।

बिना भोजन के हम तीस दिनों तक जीवित रह सकते हैं लेकिन बिना पानी के हम तीन दिन से ज्यादा जीवित नहीं रह सकते हैं। ऐसा इसलिए कि हम पानी को अपने शरीर के अंदर स्टोर करके नहीं रख सकते हैं। पानी हमारे शरीर से बाहर दिन-रात चौबिसों घंटे निकलता ही रहता है। किडनी से पेशाब के रूप में 1.5 लिटर, त्वचा से पसीना के रूप में 0.65 लिटर, मल मार्ग से शौच के रूप में 0.13 लिटर और सांस के द्वारा फेफड़ों से 0.32 लिटर पानी प्रतिदिन शरीर से बाहर निकल जाता है। गर्मियों में तो पानी बहुत अधिक मात्रा में पेशाब के रूप में शरीर से बाहर निकल जाता है। हमारे देश में साल में 9 महीने गर्मी और बरसात का मौसम रहता है। सबसे लंबा गर्मी का मौसम होता है। इसलिए हर एक व्यस्क व्यक्ति को प्रतिदिन 2.5 से 4.0 लिटर पानी अवश्य ही पीना चाहिए, जिससे कि शरीर में पानी की मात्रा ज्यों की त्यों बनी रहे।

धरती का 71% भाग पानी से ढ़का हुआ है, जिसका 97.4% खारा पानी के रूप में समुद्रों में भरा है जो पिया नहीं जा सकता है, 1.08% पानी

ध्रुवों पर वर्फ के रूप में जमा हुआ है और केवल 1.52% भाग पानी नदियों, झीलों और झरनों में ताजा पानी के रूप में उपलब्ध है, जो पीने योग्य है। 1.6% पानी जमीन की कोख में है, जो पीने योग्य है और 0.001% वाष्प और बादलों के रूप में है। इससे स्पष्ट है कि धरती पर पानी की कोई कमी नहीं है, लेकिन मीठे पानी की उपलब्धता बहुत सीमित है। फिर भी हम दोनो हांथों से पानी उचिल रहे हैं। धरती पर उपलब्ध इस मीठे पानी का 70% कृषि में, 25% उद्योगों में और 5% घरेलू कार्यों में किया जाता है। अर्थात् पूरी दुनिया में पानी का सर्वाधिक इस्तेमाल खेती किसानी में किया जाता है। लेकिन हमारे देश में उपलब्ध कुल पानी का 90% खेती किसानी में, 7% उद्योगों में और 3% घरेलू कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। ऐसा इसलिए कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। दुनियां में सर्वाधिक अधिक किस्म के अनाज, तेलहन, दलहन, फल, सब्जियाँ, मसाले, जड़ी-बुटियां इत्यादि यही उगाई जाती है। इस दृष्टि से हम दुनियां के शांहशाह है। भारत से भारी मात्रा में मसाले, फल, शब्जियां, चाय, कॉफी, चावल, चीनी, इत्यादि विदेशों को निर्यात किए जाते हैं।

दरअसल भोजन हमारी मूलभूत आवश्यकता है, क्योंकि इसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते हैं। इसलिए सारी दुनियां के लोगों का सर्वाधिक ध्यान भोजन की उपलब्धता पर लगा रहता है। भले ही आप विश्वास करे या ना करे किन्तु यह सच है कि एक किलोग्राम चावल के उत्पादन में 2400 लिटर पानी लग जाता है। आप देखते हैं कि धान की रोपनी करते समय

खेतों में जमीन के ऊपर आधा से एक फूट तक पानी जमा रहता है। एक किलोग्राम चीनी प्राप्त करने के लिए खेतों में गन्ना उगाने से लेकर चीनी मिलों में चीनी का उत्पादन करने तक 2000 लिटर पानी खर्च करना पड़ता है। बात यह है कि उद्योगों के लिए भी जल बेहद जरूरी है, जो कि समाज तथा देश की समृद्धि और विकास का बहुत ही मजबूत स्तंभ है। मिसाल के रूप में पेपर को ही ले लिजिए। इसका उपयोग छोटे-बड़े बच्चों से लेकर बड़े-बुढ़े सभी विभिन्न रूपों में दिन-रात करते रहते हैं और जिसका उपयोग किताबों, अखबारों, पत्रिकाओं आदि को छापने के लिए किया जाता है। एक टन पेपर के उत्पादन में लगभग 40 टन पानी खर्च होता है। एक कॉटन शर्ट तैयार करने में 2600 लिटर पानी की खपत होती है। एक जोड़ी जिंस तैयार करने में 6800 लिटर पानी लग जाता है। एक टन सिमेंट के उत्पादन में 5200 लिटर पानी की जरूरत पड़ती है। एक टन स्टील के उत्पादन में 2350 लिटर पानी की खपत होती है। एक कार के उत्पादन में 148000 लिटर पानी लग जाता है। इतना पानी तो एक स्वीमिंग पुल को भरने में लग जाता है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि जल ही जीवन का आधार है। हमारे शरीर का लगभग 65% भाग पानी से बना हुआ है। खून में 83%, गुर्दे में 82.2 प्रतिशत, मांसपेशिओं में 75.6%, मस्तिष्क में 74.5% और त्वचा में 20% पानी ही होता है। हमारी हड्डियाँ जो देखने में ठोस और कड़ी होती है, में 22% पानी होता है और हमारी दांतों में 10% पानी होता है। एक व्यस्क आदमी के शरीर में औसतन 38 से 45 लिटर पानी हमेशा बना रहता है। एक व्यस्क पुरूष के शरीर में उसके शरीर के कुल भाग का लगभग 65% और एक व्यस्क महिला के शरीर में उसके शरीर के कुल भाग का लगभग 55% पानी होता

है। कमजोर व्यक्ति के शरीर में पानी की मात्रा उसके कुल वजन का 70% तक हो सकता है। आकाश में बादलों के रूप में, धरती पर पानी के रूप में, धरती की कोख में पानी के रूप में और ध्रुवों पर वर्फ के रूप में पानी रहता है। वायुमंडल में नमी बनाए रखने के लिए पानी ही जलवाष्प के रूप में वातावरण में मौजूद रहता है।

स्पष्ट है कि हमारे शरीर का लगभग 70% भाग पानी है और हमारा शरीर सभी ओर से पानी से घिरा हुआ है। अर्थात, हमारे शरीर के अंदर हमारे शरीर का 70% भाग पानी है और हम जीवन भर पानी तथा हवा के बीच रहते हैं। फिर भी कुदरत के इस अद्‌भुत व्यवस्था के प्रति न जाने क्यों अंजान बने हुए हैं।

सभी धर्मों में पानी का बड़ा महत्व है। हमारे तीर्थ नदियों के किनारे ही बसे हैं। प्रत्येक मंदिर के बगल में अनिवार्य रूप से एक तालाब होता था। प्राचीन समय के राजा की महानता इस संदर्भ में भी मापा जाता था कि उसने कितने तालाब बनवाए हैं। हम संकल्प से लेकर तर्पण तक हांथ में जल लेकर करते हैं। जल छिड़क कर हम अपवित्र जगह को पवित्र करते हैं। बड़े-बुर्जुग, अतिथियों का स्वागत हम पानी से पाव पखारकर करते थें, अब ऐसा शायद ही कभी-कभार देखने को मिलता है। नदियां हमारे जनमानस की स्वच्छता, पवित्रता और निर्मलता की प्रतीक हैं। हम नदियों की पूजा करते हैं, आरती उतारते हैं और उनमें स्नान कर खुद का पवित्र करते हैं। हमारे पूर्वज जानते थें कि जल ही जीवन है। इसलिए जल को बचाने के लिए जल का संरक्षण करते थें। कुंए, तालाब, बांवड़ियाँ, जोहड़ें, डबड़ें, पईन, चौर, नहरें आदि का निर्माण कर जल के संरक्षण पर विशेष ध्यान देते थें।

आज सारी दुनियां के पर्यावरणविद्‌ , जल प्रबंधन के वैज्ञानिक और सभी देशों की सरकारें पानी की कमी की भयावह स्थिति को लेकर शोर मचा रही है, जल संरक्षण को लेकर चिंतित हैं। लेकिन बहुत ही थोड़े जल प्रबंधन के वैज्ञानिकों और बहुत ही कम पर्यावरणविदों तथा देशों की सरकारों द्वारा जल प्रबंधन को लेकर सराहनीय कार्य किए गए हैं और आज भी किए जा रहे हैं। इनकी संख्या ऊँट के मुंह में जीरा के समान है। दरअसल, ज्यादातर पर्यावरणविद्‌ और जल प्रबंधन के वैज्ञानिक काम बहुत ही कम और दिखावा बहुत ही ज्यादा कर रहे हैं, अधिक से अधिक सोहरत बंटोरने में लगे हुए हैं। कारण कि उनमें से ज्यादातर में जल की अहमियत को लेकर समझदारी की पर्याप्त कमी है। इसलिए वे आम जनता में जल संरक्षण की उपयोगिता के प्रति जागरूकता पैदा करने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। नतीजा सारी दुनियां में जल संकट की समस्या उत्तरोत्तर बद्‌ से बद्‌तर होती जा रही है। आज की पीढ़ी जल संरक्षण के प्रति आश्चर्यजनक रूप से असंवेदनशील और दूरदर्शी

और नासमझ हो गई है। आज के जनमानस की सोच पशु-पक्षियों से भी बद्‌तर हो गई है। इतना तो पशु और पक्षी भी जानते हैं कि जीवन के लिए जल क्यों जरूरी है, इसलिए वह जंगलों में रहते हुए भी पेयजल के स्त्रोंतों के आसपास गंदगी करने से बचते हैं। लेकिन हम मानव तो जानते हैं कि जल हमारी जिंदगी के लिए कितना जरूरी है। बावजूद इसके हम वर्षा के पानी को सहेज नहीं रहे हैं। भूजल का बहुत तेजी से दोहन कर रहे हैं, उपलब्ध पानी को बेरहमी से बर्बाद कर रहे हैं और नदियों, तालाबों, झीलों आदि के पानी को तेजी से प्रदुषित कर रहे हैं। वास्तव में जल संरक्षण के प्रति हमारी मानसिकता पशु-पक्षिओं से भी बद्‌तर हो गई है। नतीजा आज हम भयंकर जल संकट की समस्या से जुझ रहे हैं। हम भावी पीढ़ी के बारे में जरा भी सोच नहीं रहे हैं। हम अपने पूर्वजों से भी कुछ सीख नहीं रहे हैं। हम धार्मिक होने के बजाए पापी होते जा रहे हैं। संस्कारी से कुसंस्कारी होते जा रहे है। नतीजा हममे प्राकृतिक संसाधनों के प्रति अपनापन की भावना ही लुप्त हो गई है। हम तथ्य से विमुख होते जा रहे हैं और गफलत में जीने लगे हैं।

दरअसल, हम बचपन से पानी को मुफ्त और अथाह समझते आ रहे हैं। इसलिए जी भरके इस्तेमाल करते हैं और बर्बाद करते हैं। आज हालत यह है कि बहुत ही थोड़े से लोग पानी का सदुपयोग करते हैं और बहुत ही ज्यादा लोग मुफ्त व अथाह समझकर दुरूपयोग करते हैं। पानी के संरक्षण को महत्व नहं देते हैं। अर्थात, खुद ही अपना कब्र खोदने में लग हुए हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कभी न कभी कुबेर का खजाना भी खाली होता है। यदि अविलंब हम नहीं सुधरें तो एक दिन हमारे लिए पानी का भी यही हश्र होगा। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

प्रभावी नहीं कागजी योजनाएँ

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

सरकार को पूरी ताकत किसानों के लिए तैयार कल्याण योजनाओं को कागजों से निकालकर अमल करने में झोंकनी होगी। अगर किसी भी किसान को लोन दिया जाता है तो पहले उसका फसल बीमा होगा तो किसान लोन डिफॉल्टर कैसे होगा? अगर फसल बर्वाद होती है तो लोन चुकाने का जिम्मा बीमा कंपनियों का होगा। समस्या ये भी है कि बैंक योजनाओं को लेकर किसान तक नहीं पहुंच पाते। ऐसे में किसान बिचौलिए के चंगुल में फंस जाते है। कोर्ट ने कहा कि ये गंभीर मामला है कि किसानों की आत्महत्या के मामले बढ़ते जा रहे है। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि यह सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है कि कोई किसान आत्महत्या न करे। गरीब किसान कर्ज में ही रहने को मजबूर है, जो हर साल बढ़ता ही जाता है। पंजाब में ही 98 फीसदी ग्रामीण परिवार कर्ज में डूबे हैं और इनमें से 94 फीसदी की आमदनी से ज्यादा खर्च है। पंजाब में अनुमानित 35,000 करोड़ रुपए का लोन किसानों पर बकाया है। सरकारी रिकार्ड में, पंजाब में, 7000 किसान आत्महत्या कर चुके हैं। ऋणग्रस्तता के कारण किसानों की आत्म हत्याओं के संबंध में लोकसभा के 12 सदस्यों द्वारा पूछे गए अतारांकित प्रश्न संख्या 903 के उत्तर में प्रकट किया गया था कि 'राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार वर्ष 2015 में 5,650 किसानों ने आत्महत्या की जो वर्ष 2016 में बढ़कर 8007 हो गई। आत्महत्याओं में 47.7 फीसदी वृद्धि हुई।' इस प्रकार एक दिन में आत्महत्या करने वालों की संख्या 21. 93 है। यह भयावह है कि पिछले 21 वर्षो के दौरान 3,18,000 किसानों ने आत्महत्या की हैं। राष्ट्रीय क्राइम रिकार्ड ब्यूरो (एन.सी.आर. बी.) के आंकड़ों के अनुसार हर 41 में मिनट कहीं न कहीं एक किसान आत्महत्या करता है। कर्ज नहीं चुका पाना किसानों द्वारा आत्महत्या किए जाने का मुख्य कारण बनकर सामने आया है। भारत सरकार द्वारा 84 योजनाए चलायी जा रही है। परन्तु अधिकांश कागजातों में ही सिमट कर रह गयी है। कुछ योजनाएं चल भी रही वह घूसखोरों के चंगुल में फंस कर कराह रही है। अधिकांश बैंक भारत सरकार के योजनाओं को ध्वस्त करने मे लगी हुई है, सरकारी कर्मचारी द्वारा घूस मांगने का रिर्पोट थानेदार दर्ज नहीं करना चाहते है। कारण है कि अधिकांश थानेदार घूसखोर है। प्रधान मंत्री आवास योजना के भारी घूसखोरी चल रही है। एसे पकड़ना आसान नहीं है। राजनीतिक कार्यकर्ता भी इस लफड़े से दूर ही रहना चाहती है, क्योंकि सता पक्ष प्रखण्ड या नगर के अध्यक्ष भी एक सीपाही को बदली तक नही करवा सकती है तबलब साफ है कि घूसखोरों से ही काम चलाएं फतुहा के जानकारा लोगों बताते है कि सरकार को चाहिए कि प्रखण्ड के संगठन कार्यकर्ता यदि सामुहिक रूप से लिखित निर्देश पर प्रखण्ड के किसी अधिकारी को हटाया जा सकता है। ऐसे आदेश कोई ईमानदार अधिकारी या मंत्री ही दे सकता है। ●

कब चेतेगी सरकार

किसानों को मजदूर बनाने पर आमादा मौजूदा सरकार ने तो उद्योगपतियों के हितों को ध्यान में रखते हुए पुराने श्रम कानूनों में व्यापक संशोधन कर यहां चीन की तरह श्रमिकों के शोषण का खाका तैयार कर दिया है लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या खेती को लाभकारी नहीं बनाया जा सकता? ऐसा क्यों हैं कि खेती से उत्पादित वस्तुओं से कारखाना चलाने वाले बेतहाशा फायदे में हैं, लेकिन किसान इतने घाटे में है कि उसे अपनी जान देनी पड़ रही है! किसान सब्जी और फल आदि का उत्पादन करते हैं उनके लिए उनकी पहुंच की दूरी में छोटे-छोटे शीतगृह बनवाए जाएं और इनमें संरक्षित सामग्री पर किसान को अगर जरूरत हो तो अग्रिम रकम देने की व्यवस्था हो। किसानों को उचित और एक खिड़की पर हल हो जाने वाली फसल बीमा सुविधा दी जाए। यह कोई कठिन काम नहीं है। आखिर इस देश में अंतरिक्ष यान और शादियों के पंडाल तक का बीमा किया जाने लगा है। कहा जा सकता है कि खेती तो हमेशा से रामभरोसे ही होती आई है। लेकिन, एक फर्क यह आया है कि पहले वह सरकार के हवाले रहती थी ओर आज बाजार के हवाले है। सरकार फिर भी जरा रहम करती थी, लेकिन बाजार बहुत निर्मम होता है। वहां जिसकी ज्यादा पूंजी, उसकी भैंस। यही कारण तो है कि आज किसानों से बहुत ज्यादा मजे में अनाज के दलाल हैं।

दबंग वित्त पदाधिकारी हैं डी.सी. झा

● ब्रजेश कुमार मिश्रा

झारखंड सरकार के वित्त विभाग में भ्रष्टाचार की सैकड़ों वित्त योजना से संबंधित प्रमाण सहित आरोप है। विभागीय कारनामे से झारखंड सरकार की क्रियाकलाप पर सवाल उत्पन्न होता है। अधिकारियो के द्वारा सरकार की ओर से जारी विभिन्न दिशा–निर्देशों का उचित पालन नहीं किया जाना, नियमों की अनदेखी करना भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने का मामला प्रकाश में आया है। सरकार के वित्त विभाग के अधिकारी अपने ही अधिकारी पर भरोसा नहीं करते, ऐसा इसलिए कहा जा रहा है कि जब विभाग के अध्यक्ष ने अपने ही अधिनस्त पदाधिकारी को संज्ञान में नही लेते और नियमों की अवहेलना करते हैं। विभाग के अपर सचिव के पास अवश्य कार्य प्रेषित और लम्बित है इसके बावजूद अधिकारी दफ्तर नहीं जातें द्य आइये जानते है विभाग के विस्तृत जनकारी जो निचे दिए गयें हैं जिसमे हर बिन्दू उजागर करती है विभाग की काली कर्तुते :–

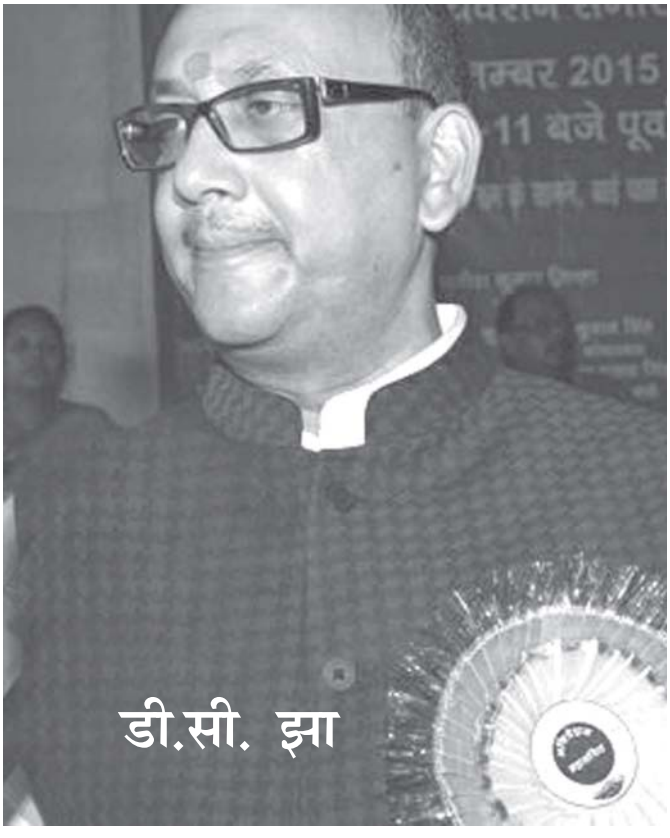

☞ श्री दिवाकर चन्द झा, उप लेखा नियंत्रक, बिहार अंकेक्षण विभाग, झारखण्ड, राँची में पदस्थापित पदा० के अंकेण भ्रष्टाचार में लिप्त रहने के प्रमाण के उपलब्ध कराने के पश्चात् भी उन पर झारखण्ड के उच्च पदा० मुख्य सचिव, अपर मुख्य सचिव, सचिव (व्यय), मुख्य लेखा नियंत्रक, विभागाध्यक्ष जैसे उच्च पदों पर आसिन पदा० द्वारा कारवाई नहीं किया जाना यह प्रमाणित करता है कि श्रीमान् के भ्रष्टाचार में उच्च पदा० भी संलिप्त है। तथा श्री झा उन्हें भ्रष्टाचार करने की खुली लाइसेंस उन उच्चाधिकारियों द्वारा प्रदान किया जा रहा है।

☞ विभाग द्वारा श्रीमान् के विरुद्ध विभागीय तथा अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं किया जा रहा है।

☞ श्री झा ने सरकार के आँखों में धुल झोंक कर सरकारी राशि को अवैध तरीके से शपथ देकर प्राप्त किया गया है।

☞ श्री झा द्वारा अपने उपस्थिति को पूर्ण माह का उपस्थिति का प्रमाण विभाग को उपलब्ध कराया जिसे वर्ष 2015–16 से 2016–17 के उपस्थिति विवरणी की संचिका में देखा जा सकता है।

☞ झारखण्ड सरकार, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग द्वारा बायोमेट्रिक उपस्थिति नियमावली नियम (5) के तहत आधार आधारित बायोमैट्रीक उपस्थिति प्रणाली के अन्तर्गत उभयकाल दैनिक उपस्थिति दर्ज करने का दायित्व सभी सरकारी कर्मियों पर लागू है।

☞ वर्णित बायोमैट्रीक उपस्थिति नियमावली के नियम (4) के तहत दर्ज उभयकाल की दर्ज उपस्थिति की दैनिक समीक्षा की जाएगी। स्थापना ईकाई के द्वारा नामित नोडल पदाधिकारी बायोमैट्रीक उपस्थिति के आनलाइन आंकड़े प्राप्त कर समीक्षोपरान्त कार्यालय/प्रधान/नियंत्री पदाधिकारी के आदेश के लिए उपस्थापित करेंगे।

☞ बायोमैट्रीक उपस्थिति नियमावली के नियम 11(1) के अन्तर्गत सभी कर्मी अपने निर्धारित कार्यालय पर ही उभयकाल उपस्थिति दर्ज किये। इसका उल्लंघन करने वाले कर्मी को चिन्हित कर संबंधित स्थापना के नोडल पदाधिकारी कार्यालय प्रधान/नियंत्री पदाधिकारी के स्तर से स्पष्टीकरण निर्गत कराना सुनिश्चित करेंगे। स्पष्टीकरण अस्वीकार होने की स्थिति में नियंत्री पदाधिकारी अपने विवेकानुसार संबंधित कर्मी के अवकाश लेखा से अधिकृत उपस्थिति का समायोजन कर सकेंगे।

☞ बायोमैट्रीक उपस्थिति नियमावली 13(1) के अन्तर्गत सचिवालय एवं संलग्न कार्यालय के लिए 10:30 बजे पूर्वाहन तथा 6:00 बजे अपराहन उभय काल से उपस्थिति दर्ज करना अनिवार्य है अन्यथा की स्थिति में यदि उपस्थिति 10:30 के बाद अथवा 6:00 बजे के पहले दर्ज की जाती है तो वैसे सरकारी सेवक को आदेश अवकाश से स्वतः एक दिन की उपस्थिति की कटौती कर ली जाएगी।

☞ बायोमैट्रीक उपस्थिति नियमावली (11) के अन्तर्गत सचिवालय एवं संलग्न कार्यालयों में कुल मासिक कार्यालय एवं अवधि 8 घंटे जिसे करना अनिवार्य है।

उपरोक्त नियमावली में वर्णित किसी भी कंडिकाओं का पालन निकासी एवं व्ययन पदा० द्वारा नहीं किया गया है और बायोमैट्रीक उपस्थिति नियमावली का उपलब्ध किया गया जिसके लिए निकासी एवं व्ययन पदा० के पूर्णतः दोषी है। निकासी एवं व्ययन पदा० द्वारा केस मद में छलपूर्वक, कपटपूर्ण और अवैध राशि की निकासी की गई है और अवैध राशि की निकासी कर श्रीमान् को अभी

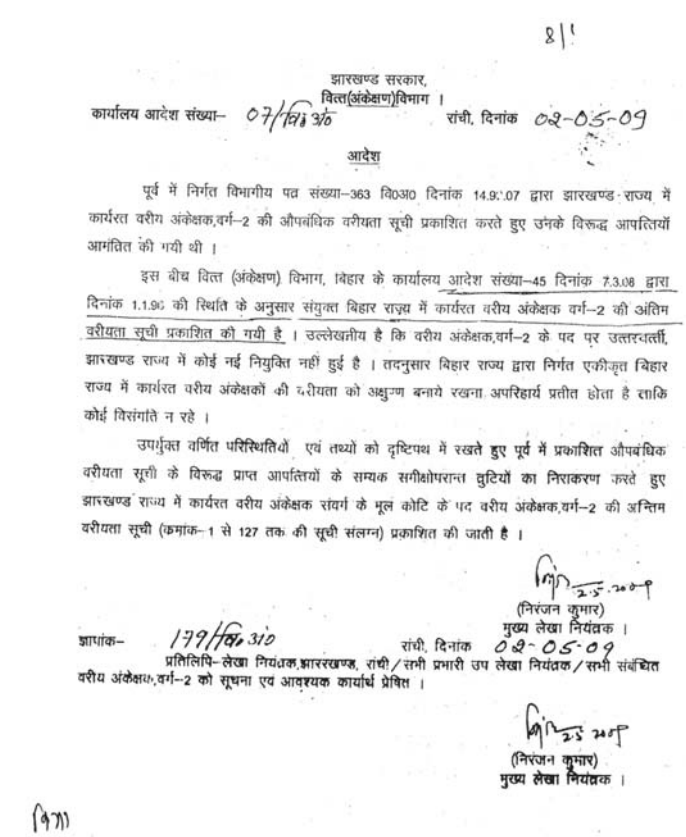

झारखण्ड सरकार,
वित्त(अंकेक्षण)विभाग ।
कार्यालय आदेश संख्या– 07/वि॰ अं॰ रांची, दिनांक 02-05-09

आदेश

पूर्व में निर्गत विभागीय पत्र संख्या–363 वि0अ0 दिनांक 14.9.'07 द्वारा झारखण्ड राज्य में कार्यरत वरीय अंकेक्षक,वर्ग–2 की औपबंधिक वरीयता सूची प्रकाशित करते हुए उनके विरूद्ध आपत्तियाँ आमंत्रित की गयी थी ।

इस बीच वित्त (अंकेक्षण) विभाग, बिहार के कार्यालय आदेश संख्या–45 दिनांक 7.3.08 द्वारा दिनांक 1.1.96 की स्थिति के अनुसार संयुक्त बिहार राज्य में कार्यरत वरीय अंकेक्षक वर्ग–2 की अंतिम वरीयता सूची प्रकाशित की गयी है । उल्लेखनीय है कि वरीय अंकेक्षक,वर्ग–2 के पद पर उत्तरवर्त्ती, झारखण्ड राज्य में कोई नई नियुक्ति नहीं हुई है । तदनुसार बिहार राज्य द्वारा निर्गत एकीकृत बिहार राज्य में कार्यरत वरीय अंकेक्षकों की वरीयता को अक्षुण्ण बनाये रखना अपरिहार्य प्रतीत होता है ताकि कोई विसंगति न रहे ।

उपर्युक्त वर्णित परिस्थितियों एवं तथ्यों को दृष्टिपथ में रखते हुए पूर्व में प्रकाशित औपबंधिक वरीयता सूची के विरूद्ध प्राप्त आपत्तियों के सम्यक समीक्षोपरान्त त्रुटियों का निराकरण करते हुए झारखण्ड राज्य में कार्यरत वरीय अंकेक्षक संवर्ग के मूल कोटि के पद वरीय अंकेक्षक,वर्ग–2 की अन्तिम वरीयता सूची (क्रमांक–1 से 127 तक की सूची संलग्न) प्रकाशित की जाती है ।

(निरंजन कुमार)
मुख्य लेखा नियंत्रक ।

ज्ञापांक– 179/वि॰ अं॰ रांची, दिनांक 02-05-09
प्रतिलिपि– लेखा नियंत्रक,झाररखण्ड, रांची/सभी प्रभारी उप लेखा नियंत्रक/सभी संबंधित वरीय अंकेक्षक,वर्ग–2 को सूचना एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित ।

(निरंजन कुमार)
मुख्य लेखा नियंत्रक ।

(97)

03 हिन्दुस्तान • रांची • सोमवार • 10 अप्रैल 2017 | 37.0° अधिकतम | 23.2° न्यूनतम

पीएनबी के शाखा प्रबंधक की सड़क दुर्घटना

रांची | वरीय संवाददाता

कोरबा पैरेक के पास ट्रेलर के टैंकर के धक्का मारने से स्कूटी सवार फिलारीस टोली की पीठ हो गई। यह पंजाब नेशनल बैंक के कटहल मोड़ शाखा के प्रबंधक थे। घटना रविवार को दोपहर 3.30 बजे की है। दुर्घटना की सूचना पाकर पीएनबी स्टाफ मौके पर पहुंचे। फिलारीस को रिम्स लेकर गई, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। यह कोरबा के टेरम टोली में पत्नी मरियम टोपनो और दो बच्चे अमन टोपनो (12) और एंजेला (4) के साथ टेरम टोली में रहते थे।

फिलारीस टोपनो

कैसे हुई घटना

सात फरीद 8.30 बजे फिलारीस स्कूटी से कोहर से एचवी रोड की ओर जा रहे थे। बताते हैं की उस वक्त पीछे से आ रहे तेज टैकर ने उन्हें धक्का मार दिया और स्कूटी सहित की ओर भाग निकला। फिलारीस सड़क पर गिर गए। आसपास के लोग आते तब उन्हें रिम्स ले जाने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

स्नान बनाने को कहकर घर से निक

मौत की खबर मिलते ही घर फिलारीस की पत्नी म का गम देखते ही उनकी सब का धैर्य टूट गया। फि रिलेटर उन्हें हिलमा दे रहे थे। परिजनों ने बताय इसी दौरान उनके मोबाइल पर फोन आया। पत्नी से बस इन बोली दैर में आ रहे हैं। इसके बाद वह घर

कर्रा के रहने वाले थे फिलारीस

फिलारीस मूल रूप से कर्रा के रहने वाले थे। वह कोहर के टैरम टोली में बस लिया था। वहीं पर वह पीएनबी की अधीक्षक पद पर, मुख्यालय रांची के

खुलासा : आदिवासी कल्याण आयुक्त कार्यालय में गैर सरकारी संस्थाओं का घोटाला

फर्जी बिलों से निकाले छह करोड़

हिन्दुस्तान एक्सक्लूसिव

रांची | मुकेश बालमोची

आदिवासी कल्याण आयुक्त कार्यालय से फर्जी बिल के सहारे छह करोड़ 36 लाख रुपए गैर सरकारी संस्थाओं ने निकाल लिए। इसका खुलासा बिरसा विश्वास की ओर से कराए गए विशेष अंकेक्षण से हुआ है। यह गोपनीय रिपोर्ट राज्य सरकार को भेजी गई है। इस रिपोर्ट में दोषी पाई जानेवाली संस्थाओं से राशि वसूली की अनुशंसा की गई है।

बिरसा विश्वास के उप लेखा नियंत्रक विजयकर पाठ इस को और से आदिवासी कल्याण आयुक्त चौरी शंकर मिश्र को रिपोर्ट भेजी गई है। इसमें कहा गया है कि दस्तावेजों की जांच से स्पष्ट है कि गैर सरकारी संस्थाओं ने फर्जी बिल के सहारे एक करोड़ 32 लाख रुपए की निकासी की है। इस राशि को 12 फर्जीवाड़ा ब्लाक सहित दोषी व्यक्तियों और संस्थाओं से वसूल कर सरकारी खजाने में जमा कराई जाए। इसमें मोजक सह वित्त विभाग की अंकेक्षण टीम को भी अवगत कराया जाए। यह रिपोर्ट इस साल के मार्च को भेजी गई जो है। जो राज्य सरकार के वित्तीय ब्योरे से 2003-04 से 2014-15 तक की अवधि के लिए आदिवासी कल्याण आयुक्त कार्यालय के विशेष अंकेक्षण पर आधारित है।

आदिवासी कल्याण

- आदिवासी कल्याण आयुक्त कार्यालय के विशेष अंकेक्षण से हुआ खुलासा
- गैर सरकारी संस्थानों ने किया कारनामा, राशि वसूली की अनुशंसा

कल्याणकारी योजनाओं के पैसे में हेराफेरी

उप लेखा नियंत्रक की ओर से कहा गया है कि आदिवासी कल्याण आयुक्त कार्यालय की ओर से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, विशेष वर्ग, अल्पसंख्यक और अन्य जनजाति के कल्याण योजनाओं के लिए एकमुश्त राशि दी गई थी। इन में से कुछ गैर सरकारी संस्थाओं की ओर से उपयोगिता प्रमाण-पत्र भी पेश किए गए। इसी क्रम में धनबाद, दुमका, हजारीबाग, गढ़वा, पोड़ाहाट तथा सिमडेगा इलाके में काम करने वाली कुछ संस्थाओं ने जो कागजात दिए, वे अंकेक्षण के लायक नहीं थे। कुछ की गंभीर पुष्टियां भी अविश्वसनीय थी। कार्यों के बारे कागज पर ही बिल बनाकर दे दिए थे।

राशि समायोजित कराने की कोशिश की गई

उप लेखा नियंत्रक की ओर से गोड्डा,गोरा और सिमडेगा इलाके में काम करनेवाली एक संस्था के बारे में कहा गया है कि उसे कुल दो करोड़ 42 लाख 36 हजार 774 रुपए का भुगतान किया गया था। लेकिन इस संस्था की ओर से दिए कागजात अंकेक्षण के लायक नहीं थे। इससे स्पष्ट है कि फर्जी बिलों के सहारे राशि समायोजित कराने की कोशिश की गई है। आदिवासी कल्याण आयुक्त कार्यालय को इस तीन महीने पर उपयोगिता प्रमाण-पत्र देने के नियम का भी पालन नहीं किया गया है।

क्या कहते हैं जिम्मेवार

66 वित्त विभाग की रिपोर्ट आई है। हमलोग इसका अध्ययन कर रहे हैं। इस आधार पर कार्रवाई करेंगे। अधिकतर भागल भारती नाम के व्यक्ति के समय का है। उसी के समय का बहुत सारे कागजात नहीं मिल रहे हैं। मीसलिपुट होने के बाद उन्हीं पीठ ही दूसरी है। उनकी अवस्था कर है। इसका साथ लीकेज कागजात निकाले जाएंगे। इसमें भी बहुत सारे मामलों का जवाब मिल जाएगा

– नौरी शंकर मिश्र, आदिवासी कल्याण आयुक्त

कांके डैम के किनारे से तोड़े गए 47 घर

GALGOTIAS UNIVERSITY
RANKED AMONGST INDIA'S BEST UNIVERSITIES
GEEE-R UP!

अनुपस्थिति दिवसों का भी भुगतान कर दिया गया। इसके लिए निकासी एवं व्ययन पदा० को दैनिक उपस्थिति की दर्ज आंकड़ों को नियंत्री पदा० के समक्ष आदेश हेतु उपस्थापित नहीं किया गया। इस तरह श्रीमान् के अनुपस्थिति तिथि दिवसों को उपस्थिति मान कर वेतन मद की राशि का भुगतान कर दिया गया। उनके अनुपस्थिति अवधि का वेतन माह में निकासी कर भुगतान किया जाना बिल्कुल अवैध है जबकि निकासी करना वित्तीय नियमावली खण्ड 1 के नियम 34 तथा उल्लंघन है।

निकासी एवं व्ययन पदा० द्वारा नियमः उनकी उपस्थिति को अवैध माना जाता तथा वियेती पदा० को बायोमैट्री को दैनिक उपस्थिति के आंकड़ों को संचिका में उपस्थापित कर आदेश प्राप्त किया जाता तथा श्रीमान् से उनके अनुपस्थिति से संबंधित स्पष्टीकरण पूछा जाता पर निकासी एवं व्ययन पदा० की संलिप्तता स्पष्ट रुप से प्रकट होती है।

इस प्रकार पिछले वर्ष 2015–16 एवं 2016–17 के वित्तीय वर्ष में लाखों रुपयों की अवैध निकासी, निकासी एवं व्ययन पदा० के द्वारा कर लिया गया। उस अवैध भुगतीत राशि की वसूली करने की कार्रवाई की जाए। इस प्रकार निकासी एवं व्ययन पदा० द्वारा श्री झा के उक्त राशि की भुगतान हेतु दोषी है और श्री झा को गलत घोषित सही प्रमाणित कर उनके गलत कार्यों का संरक्षण प्रदान किया गया है। विभाग को इस अवैध कार्यो में श्री झा तथा निकासी एवं व्ययन पदा० दोनों संलिप्त हैं जिसके चलते सरकार को करोड़ो राशि की हानि हुई है। विभाग के एक अन्य पदा० भी श्री झा के इशारे पर चलते हैं उनका नाम है मनोज कुमार जो वित्त विभाग के संयुक्त सचिव है।

(1) वित्त (अंकेक्षण) विभाग में संयुक्त सचिव का कोई पद स्वीकृत नहीं है परन्तु वित्त विभाग किस हैसियत से श्री मनोज कुमार को संयुक्त सचिव को पदस्थापित किए हुए है। यह अत्यंत ही गंभीर मामला है। वित्त (अंकेक्षण) विभाग में (1) वरीय अंकेक्षक (2) अंकेक्षण पदाधिकारी (3) उप० लेखा नियंत्रक (4) लेखा नियंत्रक (5) Addition Chest Controller का पद स्वीकृत है। संयुक्त सचिव का कोई पद विभाग में स्वीकृत नहीं है। मुख्य लेखा नियंत्रक के पद पर संयुक्त सचिव स्तर के पदा० की पदस्थापना होता है। जबकि मुख्य लेखा नियंत्रक के पद पर पहले से ही श्री मनोज कुमार पदस्थापित है। संयुक्त सचिव का वित्त (अंकेक्षण) विभाग में कोई कार्य निर्धारित नही है और कोई शक्तियाँ निर्धारित है। अंकेक्षण से संबंधित प्रतिवेदन का न तो उन्हें अनुपालन, न पर्यवेक्षण और न स्थापना से संबंधित कार्य आवंटित है।

(2) यह बेकार बैठ कर अपना समय व्यतीत कर रहे हैं और श्री झा के गलत कार्यो का सम्मान करते हैं। श्री झा के विरुद्ध जब मुख्यमंत्री स्तर से, प्रधानमंत्री स्तर से, मुख्य सचिव, अपर मुख्य सचिव स्तर से कोई अभ्यावेदन कार्रवाई हेतु विभागीय मुख्य लेखा नियंत्रक कार्रवाई हेतु अभ्यावेदक विभाग को प्रेषित की जाती है। वैसे अभ्यावेदन को श्री मनोज कुमार संयुक्त सचिव द्वारा दबा दिया जाता है इस प्रकार श्री झा के इशारे पर मनोज कुमार संयुक्त सचिव द्वारा श्री झा के गलत कार्यों को संरक्षण प्रदान किया जाता है।

(3) अब तक श्री झा के भ्रष्ट आचरण

के विरुद्ध सैकड़ों अभ्यावेदन को श्री मनोज कुमार तथा अवर सचिव द्वारा दवा दिया गया और श्री झा के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं किया गया।

(4) श्री मनोज कुमार के द्वारा ज्ञापांक 38 नि०अ (1)/2016 225 वि०अ दिनांक 11.05.17 आदेश निर्गत किया जो अवैध त्रुटिपूर्ण और गलत है वे आदेश निर्गत करने के लिए अधिकृत नहीं है। मुख्य लेखा नियंत्रक विभाग के नियंत्रण पदाधिकारी हैं उनके स्तर से आदेश निर्गत किया जाना चाहिए था। परन्तु मुख्य लेखा नियंत्रक विभागाध्यक्ष के हैसियत से पदस्थापित पदा० को इग्नोर करके मनोज कुमार संयुक्त सचिव स्तर के पदा० द्वारा आदेश निर्गत किया गया तथा संचिका पर मुख्य लेखा नियंत्रक जो विभागाध्यक्ष है से संचिका पर अनुमोदन प्राप्त नहीं किया गया है। यह विभाग में घोर अव्यवस्था को दर्शाती है।

(5) अवर सचिव के द्वारा ज्ञापांक 38 वि०अं (01) 9–01/2016 46 वि०अ दिनांक 09.02.17 आदेश निर्गत किया गया है जो प्रोटोकोल का घोर उल्लंघन है। पहले इस संचिका पर विभागाध्यक्ष मुख्य लेखा नियंत्रक का संचिका पर अनुमोदन प्राप्त करना आवश्यक था नहीं किया गया था। सीधे संचिका सचिव (व्यय) को प्रासंगिक कर दिया गया। अवर सचिव से यह स्पष्टीकरण पूछा जाना चाहिए किस नियम के तहत मुख्य लेखा नियंत्रक से इग्नोर करके सीधे संचिका सचिव (व्यय) के पास किसके आदेश पर ले गई। यह अवर सचिव के पूर्वाग्रह और दुर्भावना से ग्रसित मानसिकता को दर्शाता है। अवर सचिव पर ऐसा कृत्यों पर अविलम्ब रोक लगना चाहिए और उस पर विभागीय कार्रवाई किया जाना अपेक्षित है।

इसके बाद आसिफ

☞ श्री मनोज कुमार संयुक्त सचिव द्वारा पत्रांक 387 दिनांक 18.08.2017 के आलोक में विभाग में 25.08.2017 के प्रीति द्वारा हजार अभ्यावेदन समर्पित किया गया। उस अभ्यावेदन के आलोक में यह स्पष्ट रुप से इंकार किया गया है कि अपने पति के बारे में श्रीमति प्रीति के द्वारा कोई अभ्यावेदन समर्पित नहीं किया गया है। फिर श्री मनोज कुमार के द्वारा पुनः पत्रांक 444 दिनांक 12.10.2017 को श्रीमति प्रीति के नाम से क्यों पत्र निर्गत किया गया और उन्हें अद्योहस्ताक्षरित के समक्ष उपस्थापित होने का आदेश क्यों पारित किया गया। क्या श्रीमति प्रीति, श्री मनोज कुमार के अधिन अधिस्य कर्मचारी है कि उन्हें व्यक्तिगत एवं उपस्थिति होने का आदेश श्री मनोज कुमार के द्वारा निर्गत किया गया। ऐसा आदेश संयुक्त सचिव मनोज कुमार के द्वारा निर्गत श्री झा के इशारे पर किया गया। इससे श्री झा और संयुक्त सचिव मनोज कुमार की संलिप्तता उजागर होती है।

☞ श्रीमति प्रीति के नाम से माननीय मुख्यमंत्री के नाम से फर्जी पत्र की जांच श्री मनोज कुमार के द्वारा क्यों नहीं किया गया।

☞ माननीय प्रधानमंत्री के द्वारा दिनांक 01.08.2017 को प्रेषत पत्र जो मुख्य सचिव, झारखण्ड के नाम से प्रेषित है, पर क्यूँ नहीं श्रीमान् के भ्रष्टाचार के विरुद्ध विभागीय कार्रवाई प्रारम्भ किया गया। इस पत्र को श्री मनोज कुमार के द्वारा क्यों नहीं कार्रवाई की गई।

☞ श्रीमति प्रीति द्वारा दिनांक 25.01.2017 को श्री झा के विरुद्ध कार्रवाई करने के अभ्यावेदन के विरुद्ध आज तक कार्रवाई क्यों रोक रखी गई।

☞ श्रीमति प्रीति द्वारा लोकायुक्त झारखण्ड, (2) मुख्य सचिव, झारखण्ड, (3) अपर मुख्य सचिव, वित्त विभाग, झारखण्ड के नाम से प्रेषित पत्र पर झारखण्ड सरकार द्वारा अब तक क्यूं नहीं कोई भी कार्रवाई की गई।

☞ दिनांक 22.02.2017 को श्रीमति प्रीति द्वारा विभागाध्यक्ष के नाम से प्रेषित अभ्यावेदन पर विभाग द्वारा क्यों नहीं कार्रवाई की गई

☞ माननीय मुख्यमंत्री, झारखंड को दिनांक 12.03.2017 का प्रेषित दिनांक 26.03.2017 को प्रेषित पत्र पर आज तक श्री झा के विरुद्ध क्यों नहीं कार्रवाई की गई। इन सारे अभ्यावेदनों को विभागाध्यक्ष द्वारा क्यों नहीं कार्रवाई की गई।

☞ क्या ये सारे अभ्यावेदन जिसमें श्री झा के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोप लगे है, उन अभ्यावेदनों को क्या पृथ्वी निगल गई या आसमान खा गया इसकी पड़ताल विभागाध्यक्ष द्वारा क्यों नहीं किया गया। इससे स्वतः प्रमाणित हो जाता है कि वित्त (अंकेक्षण) विभाग में तीन भ्रष्ट पदा० पदस्थापित है जो अपने विरुद्ध किसी भी कार्रवाई से संबंधित अभ्यावेदनों को दबा दिया जाता है और इन तीनों भ्रष्ट पदा० के मिलीभगत से विभाग चल रहा है और मुख्य लेखा नियंत्रक द्वारा इन तीनों भ्रष्ट पदा० के विरुद्ध कार्रवाई करने से डर रहे है और अपना समय गुजार रहे हैं। विभागाध्यक्ष को भी इन चौकड़ी के पकड़ से डर समा गया है जो इन सबों के भ्रष्टाचार के विरुद्ध कार्रवाई करना नही चाहते हैं।

☞ श्री झा अनाधिकृत रुप से सरकार की गोपनियता भंग करने के आरोपी है। श्री झा को प्रेस कान्फ्रेंस करने का अधिकार नहीं। सरकार द्वारा इन्हें अधिकृत नहीं किया गया है, परन्तु झा द्वारा सरकारी गोपनीय दस्तावेज शाखा अंकेक्षण प्रतिवेदन में पाई गई त्रुटियाँ अथवा आपत्तियों का प्रेस कान्फ्रेंस बुला कर इसकी गोपनियता का भंग किया गया है। सरकार द्वारा अधिकृत व्यक्ति ही प्रेस कान्फ्रेंस करने के लिए अधिकृत है। सरकार गोपनीयता को भंग करने के आरोपी को Bihar Govt. Servant Conduct Rule 1976 के उल्लंघन करने वाले पदाधिकारियों को इसके नियम 10–11 में सजा देने और बर्खास्त करने का प्रावधान है जिसके तहत श्री झा को बर्खास्त किया जाए। ''हिन्दुस्तान'' 2017 राँची शहर दिनांक 10 अप्रैल 2017 इसका प्रमाण है।

☞ विभागीय वरियता और अनुदेशों के तहत ज्ञापांक 319/CA के द्वारा यदि अंकेक्षण प्रतिवेदन के परीक्षण के दौरान यदि कही उसमें कोई आपत्ति पाई जाती है तो दल नेता को उस अंकेक्षण प्रतिवेदन के मूल प्रति में सुधार करना होता है। इसके विपरीत इन आदेशों का उल्लंघन कर श्री झा द्वारा टंटित प्रति में ही सुधार करवाने का निर्देश दल नेता को दे कर करवाया जाता है। इसके पीछे यह झा की मंशा रहती है कि गबन की गई राशि वाली आपत्तियों को हटवा कर इसके बदले में मोटी रकम वसुल की जाती है। इस प्रकार श्री झा द्वारा घुस के रकम के रुप में अवैध राशि वसूल की जाती है।

☞ अंकेक्षण आपत्तियों का अनुपालन कार्य विभाग के सबसे वरीयतम लेखा नियंत्रक का है ऐसा विभागीय आदेश के पत्रांक 2908 एफ दिनांक 30.08.1980 में विदित है। उसके अनुसार लेखा नियंत्रक के कर्तव्यों एवं शक्तियां का स्पष्ट रुप से उल्लेख किया गया है। परन्तु श्री झा उप लेखा नियंत्रक है यह कार्य उनके द्वारा सम्पादित किया जाता है। श्री झा इस कार्य के लिए सक्षम पदाधिकारी नहीं है। इस प्रकार झा द्वारा लेखा नियंत्रक के अधिकारों का हनन किया जा रहा है। इस कृत्य के लिए श्री झा पर विभागीय कार्रवाई चलाई जाए। विभागाध्यक्ष द्वारा इस मामले में अब तक कार्रवाई नहीं किया जाना यह प्रमाणित करता है कि इस गलत कृत्यों में उनकी सहभागिता है। ●

हर चीज में लीक और चौकीदार है वीक

● अमित कुमार

सीबीएसई 10वीं के गणित और 12वीं के अर्थशास्त्र के पेपर लीक का मुद्दा काफी गर्माया हुआ है। मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इस पूरे मुद्दे पर जानकारी दी थी। खबरों के अनुसार ये दोनों पर्चे व्हाट्सएप के जरिए लीक हुए और पेपर 35 हजार से लेकर 1 हजार तक में बिका। जैसे एक छात्र ने 35 हजार में अपने लिए पेपर खरीदा, लेकिन फिर उसी ने आगे पांच स्टूडेंट को 10–10 हजार रुपए में पेपर बेच दिया। जिन्होंने 10 हजार में पेपर खरीदा, उसने आगे 5–5 हजार में फॉरवर्ड किया। पांच हजार में पेपर खरीदने वाले ने हजार–हजार रुपए में आगे बढ़ा दिया। पेपर एक चैन की तरह आगे बढ़ते रहे और व्हाट्सएप के जरिए ये पेपर फॉरवर्ड होते रहे। ये पेपर बड़ी संख्या में छात्रों, टीचर्स और अन्य लोगों के मोबाइल में पहुंच गए। पुलिस जांच में उस व्हाट्सएप की चैन की तलाश कर रही है। पुलिस मैसेज दर मैसेज पूछताछ कर असली गुनाहगार तक पहुंचना चाहती है।

गौरतलब हो कि सीबीएसई के 10वीं कक्षा के गणित और 12वीं कक्षा के अर्थशास्त्र विषय की पुनः परीक्षा की घोषणा के खिलाफ सैकड़ों छात्र दिल्ली के जंतर–मंतर पर एकत्रित हुए और उन्होंने 'हमें न्याय चाहिए' जैसे नारे लगाए। हाथों में तख्तियां थामे इन छात्रों ने बताया कि पुनः परीक्षा की खबर के बाद उन्हें बहुत तनाव का सामना करना पड़ा। कई छात्रों ने दावा किया कि परीक्षाओं से 1 दिन पहले ही लगभग सभी प्रश्नपत्र लीक हो गए थे और उन्होंने मांग किया

कि अगर पुनः परीक्षा होती है तो यह सभी विषयों की होनी चाहिए। सेंट थॉमस स्कूल की 10वीं कक्षा की छात्रा भाविका यादव ने कहा कि हम पुनः परीक्षा की खबर सुनकर हैरान थे। अगर कुछ छात्रों को परीक्षा से पहले लीक प्रश्नपत्र मिल गया तो इसके लिए हम परेशान क्यों हों? उनकी दोस्त ओजस्वी ने कहा कि हम सत्र की शुरुआत से दबाव में थे। हम परीक्षा देकर राहत महसूस कर रहे थे, लेकिन हमने केवल डेढ़ घंटे ही राहत की सांस ली। बाद में हमें विभिन्न समाचार चैनलों से पता चला कि हमें पुनः परीक्षा में बैठना है जिसका मतलब यह हुआ कि हमें फिर से पूरा पाठ्यक्रम पढ़ना है। एक अन्य छात्र ने कहा कि यह असंभव है कि बोर्ड को लीक की जानकारी नहीं थी। उन्हें पेपर सुबह ही रद्द कर देना चाहिए था। जनकपुरी में एक निजी कोचिंग सेंटर चलाने वाले रोहित मोगा ने कहा कि पुनः परीक्षा 12वीं कक्षा के छात्रों पर अतिरिक्त दबाव बनाएगी, क्योंकि वे इंजीनियरिंग, मेडिकल और विधि जैसे विभिन्न पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा के लिए तैयारी में व्यस्त हैं। रोहित ने कहा कि मेरे कई छात्रों ने परीक्षा से एक दिन पहले अर्थशास्त्र का लीक पेपर भेजा था लेकिन मैंने उनसे कहा कि ये केवल अफवाहें हैं, इन पर भरोसा मत कीजिए। ऐसा लगता है कि वे अफवाह नहीं, सच्चाई थी। वही सीबीएसई पेपर लीक मामले में गुनहगारों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का संकल्प व्यक्त करते हुए मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि इस घटना से

सीबीएसई की छवि को दाग लगा है और ऐसी घटना दोबारा नहीं हो, इसके लिए परीक्षा व्यवस्था में बदलाव समेत सभी जरूरी उपाय किए जाएंगे। जावड़ेकर ने कहा कि 16 लाख छात्रों ने परीक्षा दी थी और पेपर लीक के कारण परीक्षा रद्द हो गई है। उन छात्रों और अभिभावकों की पीड़ा वे समझते हैं। छात्रों की क्या मनोदशा होती है, उन्हें पता है तथा जिन लोगों ने यह अपराध किया है, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। मुझे पूरा विश्वास है कि पुलिस जल्द ही दोषियों को पकड़ेगी, जैसे एसएससी मामले में 4 लोगों को गिरफ्तार किया गया। प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि यह काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं अभिभावकों और विद्यार्थियों के दर्द को समझ सकता हूं। मैं भी नहीं सो सका, मैं भी एक अभिभावक हूं। इस पेपर लीक मामले में जो भी दोषी होंगे, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। पेपर लीक मामले में सीबीएसई के निशाने पर आने के बीच मंत्री ने कहा कि सीबीएसई की व्यवस्था अच्छी है और उच्चतम न्यायालय ने नीट परीक्षा के मामले में बोर्ड की तारीफ की और कहा कि इसकी व्यवस्था सबसे चुस्त है। वैसे इस घटना से सीबीएसई की शुचिता को दाग लगा है, हम तह तक जाएंगे। एसआईटी इस मामले की जांच कर रही है और हम आंतरिक जांच करा रहे हैं। जावड़ेकर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस विषय को गंभीरता से लिया है। शिक्षा के क्षेत्र में अपराध की घटना आई है और हमारे सामने इसे खत्म करने की चुनौती है। मंत्री ने कहा कि गुनाहगारों ने व्यवस्था में सेंध लगाने का काम किया है। हम दुनिया के देशों में इस बारे में व्यवस्था को देख रहे हैं और परीक्षा व्यवस्था में जरूरी बदलाव करेंगे। 10वीं और 12वीं कक्षा के कथित प्रश्नपत्र लीक मामले की जांच के लिए दिल्ली पुलिस ने अपनी अपराध शाखा का एक विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित किया है। जांच करने वाली एसआईटी में पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) और सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) रैंक के पुलिसकर्मी शामिल हैं। सीबीएसई द्वारा अपराध शाखा में 2 मामले दर्ज करने के बाद एसआईटी का गठन हुआ है। कांग्रेस ने प्रश्नपत्र लीक मामले में मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावडेकर और सीबीएसई के अध्यक्ष का इस्तीफा मांगा है और इसकी जांच उच्च न्यायालय के जज से कराने की मांग की है।

सनद् रहे कि खबरों के मुताबिक पुलिस ने कुछ कोचिंग सेंटरों पर शिकंजा कसा है। एक टीचर को भी हिरासत में लिया गया है। टीचर ने अपनी सफाई में कहा है कि उन्हें वह पेपर व्हाट्सएप के जरिए अपने एक छात्र से मिला था। इसे उन्होंने अपने अन्य स्टूडेंट्स को फॉरवर्ड करवा दिया ताकि उनकी तैयारी अच्छी हो जाए। न उन्होंने पेपर खरीदा था, न ही आगे बेचा। द्वारका, रोहिणी, राजेंद्र नगर में कोचिंग सेटरों पर छापे भी मारे गए। इस मामले के मास्टरमाइंड बताए जा रहे विद्या कोचिंग सेंटर के मालिक विक्की को हिरासत में लिया गया है। क्राइम ब्रांच ने सीबीएसई से जानकारी भी मांगी है। पुलिस सूत्रों की मानें तो शुरुआती जांच में ऐसे कई छात्र या शिक्षक सामने आए हैं, जिनकी भूमिका लीक पेपर को सिर्फ फॉरवर्ड करने में रही है। टीवी खबरों के मुताबिक राजेन्द्र नगर के कोचिंग सेंटर संचालक विक्की को पुलिस में हिरासत में लिया। इसके समर्थन में कई छात्र और उनके माता–पिता साथ आए। उनका कहना था कि कोचिंग सेंटर के संचालक विक्की कई सालों से छात्रों को पढ़ा रहे हैं और वे ऐसा नहीं कर सकते हैं। हालांकि अभी जांच में कोई ठोस बात सामने नहीं आई है। वही कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख रणदीप सिंह सुरजेवाला ने यहां कहा कि सीबीएसई प्रश्नपत्र लीक होने की दिल्ली पुलिस की प्राथमिकी से साफ जाहिर है कि मोदी सरकार की नाक के नीचे परीक्षा माफिया फल–फूल रहे हैं। बोर्ड परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होने को कांग्रेस नेता ने अत्यधिक गंभीर बताया और कहा कि दिल्ली उच्च न्यायालय के वर्तमान न्यायाधीश से इसकी जांच कराई जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि सीबीएसई परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होने से 25 लाख परिवारों के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लग गया है और परीक्षा के लिए दिन–रात एक करने वाले बच्चों की मेहनत पर पानी फिर गया है। मामले की निष्पक्ष जांच कराने की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि जांच का काम पूरा होने तक जावड़ेकर तथा सीबीएसई की अध्यक्ष अनिता करवाल को पद से हटा दिया जाना चाहिए। जावड़ेकर तथा सुकरवाल के रहते हुए इस मामले की निष्पक्ष जांच संभव नहीं है। प्रवक्ता ने आरोप लगाया कि जावड़ेकर का शिक्षा मंत्रालय पर नियंत्रण नहीं रह गया है। सीबीएसई जैसी महत्वपूर्ण परीक्षा के भी प्रश्नपत्र लीक हो रहे हैं। जब प्रश्नपत्र लीक हो रहे हैं और लाखों बच्चों के समक्ष संकट खड़ा हो रहा है तो सीबीएसई की प्रमुख अपनी पुस्तक के प्रचार के लिए अहमदाबाद में बैठी हैं। दिगर बात है कि कांग्रेस ने सीबीएसई की 10वीं और 12वीं कक्षा के परीक्षा पत्र लीक होने के मामले में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार पर देश की युवा शक्ति के भविष्य को अंधकार में डालने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सबसे शर्मनाक बात यह है कि अब तो देश के भविष्य को भी चुराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं है कि देश

के चौकीदार को इसकी खबर नहीं है किंतु चौकीदार तो रजाई ओढ़कर सोने का स्वांग कर रहे हैं। मोदी सरकार ने सीबीएसई के 3 प्रश्नपत्र लीक करवाकर उनकी बुनियाद को चुरा लिया है। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी व्यापमं घोटाले और एसएससी परीक्षाओं में गड़बड़ी के कारण युवाओं का भविष्य अंधकार में डाला गया। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) एकाउंट्स, अर्थशास्त्र एवं गणित के परीक्षा पत्र ही नहीं लीक हुए बल्कि भौतिक शास्त्र एवं जीव विज्ञान के पेपर लीक होने की बात भी सामने आ रही है जिसकी जांच नहीं हुई। सुरजेवाला ने आरोप लगाया कि सरकार के संरक्षण

म ` . फूलने–फलने वाले शिक्षा माफिया ने लाखों विद्यार्थियों का भविष्य अंधकार में डाल दिया है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से सवाल किया कि क्या एग्जाम वॉरियर अब चीटिंग वॉरियर हो गए हैं? उन्होंने सवाल किया कि प्रधानमंत्री मोदी एवं तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने सीबीएसई के अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद को 2 साल तक खाली क्यों रखा? आखिरकार इस पद पर जुलाई 2016 को नियुक्ति की गई लेकिन उन्हें बाद में हटा दिया गया। इसके बाद सितंबर 2017 में इस पद पर अनिता करवाल को नियुक्त किया गया। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने इस मामले में 2 अलग–अलग मामले दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। ज्ञात रहे कि इस पेपर लीक की घटना ने विपक्षी दलों को राजनीति कटाक्ष का मौका दे दिया है। इसके मद्देनजर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर बड़ा हमला करते हुए कहा कि हर चीज में लीक है, चौकीदार वीक है। राहुल ने ट्वीट कर कहा कि कितने लीक? डेटा लीक, आधार लीक, चुनाव की तारीखे लीक, सीबीएसई पेपर्स लीक। हर चीज में लीक है, चौकीदार वीक है। इससे पहले उन्होंने ट्वीट कर मोदी ऐप पर सवाल खड़े कर खुद को नरेंद्र मोदी बताया था। उन्होंने लिखा था, मैं नरेंद्र मोदी हूं और मेरी ऐप को डाउनलोड करने वालों का डेटा में अमेरिका में अपने दोस्त को देता हूं। सीबीएसई मुद्दे के तूल पकड़ने के बीच कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उन छात्रों एवं अभिभावकों के लिए दूसरी पुस्तक लिखने की सलाह दी जिनकी जिदंगी परीक्षा पत्र लीक होने से 'तबाह' हो गयी है। राहुल ने ट्वीट कर प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधा और कहा कि प्रधानमंत्री ने छात्रों को परीक्षा के दौरान तनाव से राहत देने के बारे में शिक्षा देने के लिए एक पुस्तक 'एक्जाम वारियर्स' लिखी थी। उन्होंने कहा कि अगला कदम एक्जाम वारियर्स–2, छात्रों एवं अभिभावकों को परीक्षा पत्र लीक होने के कारण उनका जीवन तबाह होने के बाद उन्हें तनाव राहत के बारे में शिक्षा देने के लिए एक पुस्तक लिखने की सलाह दी।

हालांकि पुलिस ने सीबीएसई पर्चा लीक मामले में 60 लोगों से पूछताछ की है। इनमें 10 व्हाट्सएप ग्रुपों के एडमिन भी शामिल हैं। इन पर लीक हुआ प्रश्नपत्र साझा किया गया था। जांचकर्ता यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि लीक कहां से हुआ। जांच से ताल्लुक रखने वाले एक अधिकारी ने बताया कि ट्यूटरों और छात्रों से पूछताछ की गई और सभी ने कहा कि उन्हें किसी और से पेपर मिले थे। इस तरह का कोई संकेत नहीं है कि इन पेपरों को साझा करने के लिए पैसे लिए गए हैं। पुलिस ने गूगल से भी उस ई–मेल पते के बारे में जानकारी मांगी है जहां से सीबीएसई की प्रमुख को ई– मेल भेजकर सूचित किया गया था कि 10 वीं कक्षा का गणित का पर्चा लीक हो गया है। इस बीच 10 वीं के गणित और 12 वीं के अर्थशास्त्र का पेपर लीक होने के मामले में झारखंड के चतरा जिले के छह छात्रों को हिरासत में लिया गया है। गणित के पेपर से जुड़ी शिकायत पर बोर्ड ने कहा कि परीक्षा से एक दिन पहले लीक के बारे में सीबीएसई अध्यक्ष की आधिकारिक ईमेल आईडी पर एक ई–मेल आया था। उन्होंने बताया कि ईमेल भेजने वाले ने कहा था कि गणित का पेपर व्हाट्सएप पर लीक हो गया है और इसे रद्द किया जाना चाहिए। दिल्ली पुलिस ने दो मामले दर्ज किए हैं। अर्थशास्त्र का पेपर लीक होने के संबंध में पहला मामला 27 मार्च को और गणित का पेपर लीक होने का मामला 28 मार्च को दर्ज किया गया। गणित और अर्थशास्त्र की परीक्षा क्रमशः 28 मार्च और 26 मार्च को हुई थी। मामले की जांच के लिए पुलिस के दो उपायुक्तों, चार सहायक पुलिस आयुक्तों और पांच निरीक्षकों का एक विशेष जांच दल गठित किया गया है। यह दल संयुक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) की निगरानी में काम कर रहा है।

लिंगायत समुदाय कर्नाटक चुनाव में दिखायेगी अपना प्रभाव

● **अमित कुमार**

देश के पूर्वोत्तर तीन महत्वपूर्ण राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के परिणाम के साथ भाजपा 19 की बढ़त पर आगे बढ़ रही है और आईपीएल तथा वण्डे के मैचों की तरह भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह व पीएम मोदी छक्के–चौकों के साथ अगले होने वाले विधानसभा मैच के लिए कमर भी कस चुकी है और बताते चले कि इसी के अगले पड़ाव पर कर्नाटक चुनाव सामने हैं, इस बाबत कर्नाटक में वर्तमान कांग्रेस शासन को उखाड़ फेंकने की जद्दोजहद में टीम लीडर मोदी एवं टीम कैप्टन अमित शाह हर तिगड़म लगाने में जुटे हैं। गौरतलब हो कि कांग्रेस शासित राज्य कर्नाटक ने आखरिकार लिंगायत को हिन्दू धर्म से अलग धर्म का दर्जा देने का दांव केंद्र सरकार के पाले में डाल दिया है। कर्नाटक की सिद्धरमैया सरकार ने लिंगायतों को धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा देने के लिए अपनी सिफारिश केंद्र सरकार के पास भेजने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के इस कदम से बीजेपी के वोट बैंक को झटका लग सकता है। लिंगायत पारंपरिक रूप से अपना मतदान बीजेपी के पक्ष में करते रहे हैं। कर्नाटक में 6 से 7 हफ्ते बाद विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होने हैं, ऐसे में राज्य सरकार का यह कदम बीजेपी को पशोपेश में डालने वाला है। हालांकि कनार्टक बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष बीएस येदियुरपा ने इस फैसले का पहले समर्थन किया था। येदियुरपा भी लिंगायत ही हैं। बीजेपी ने येदियुरपा के नेतृत्व में ही विधानसभा चुनाव लड़ने का फैसला किया है। हालांकि अब येदियुरपा का कहना है कि इस मुद्दे पर समाज का मार्गदशन अखिल भारतीय वीरशैवा महसभा को करना चाहिए। लिंगायत समुदाय के लोग न केवल कर्नाटक में हैं बल्कि महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडू और केरल में भी हैं। यहां तक कि महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने भी इसी तरह की सिफारिश केंद्र सरकार को भेजी थी।

अब गेंद केंद्र सरकार के पाले में है कि वो राज्य सरकार की सिफारिश को स्वीकार करती है या नहीं।

गौरतलब हो कि राज्य सरकार की यह सिफारिश प्रदेश में बीजेपी के उन नेताओं को परेशान करने वाली है जो लिंगायत समुदाय से हैं। कर्नाटक में लगभग 10 फीसदी लिंगायत हैं। अगर इन्हें धार्मिक रूप से अल्पसंख्यक का दर्जा मिलता है तो समुदाय में आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों को आरक्षण का फायदा मिलेगा। प्रदेश के कानून मंत्री टीबी जयचंद्र ने कहा है कि कैबिनेट ने साफ कर दिया है कि लिंगायत धर्म के लोगों को आरक्षण मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध और सिखों के आरक्षण की कीमत पर नहीं मिलेगा। यह फायदा अन्य धार्मिक और भाषिक अल्पसंख्यकों को मिलने वाले आरक्षण में से नहीं मिलेगा। इस मामले में राज्य मंत्रिमंडल ने विशेषज्ञों की समिति की सिफारिशों को स्वीकार किया है। जस्टिस नागमोहन दास की अध्यक्षता वाली समिति ने लिंगायतों को धार्मिक अल्पसंख्क का दर्जा देने की सिफारिश की है। सभी लिंगायत और वीरशैवा–लिंगायत 12वीं सदी के समाज सुधारक बासवेश्वरा के दर्शन पर भरोसा करते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि जो वीरशैवा हैं, उनकी आस्था बासवेश्वरा में नहीं है और वे वैदिक कर्मकांडों में भरोसा करते हैं उन्हें धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा नहीं मिलेगा, क्योंकि वो व्यवहार और आस्था की कसौटी पर हिन्दू हैं। बासवेश्वरा जन्म से ब्राह्मण थे और उन्होंने हिन्दू धर्म में मौजूद जातिवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। उन्होंने अपने वचनों के माध्यम से अपने विचारों को रखा था। बड़ी संख्या में पिछड़ी जाति के साथ दलित समुदाय के लोगों ने भी खुद को लिंगायत बना लिया था। हालांकि एक कालखंड के बाद जिस मंदिर–संस्कृति के खिलाफ बासवेश्वरा ने आवाज उठाई थी, वही संस्कृति फिर से घर करने लगी। लिंगायतों को धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा दिलाने की

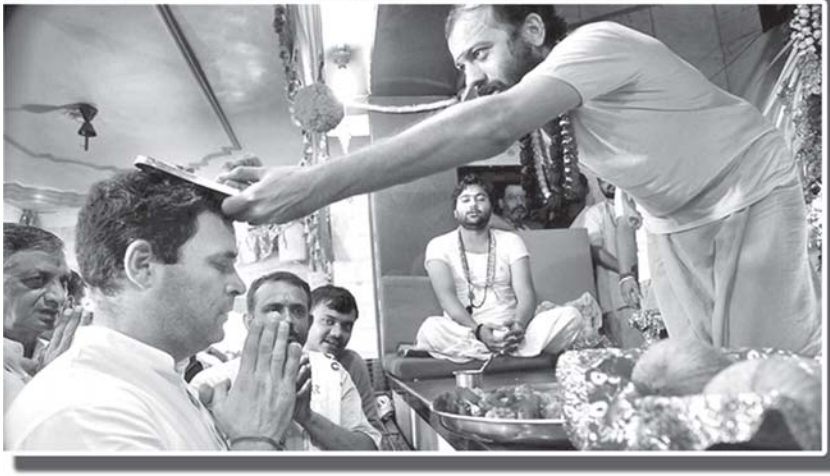

लड़ाई शुरू करने वाले फोरम के एक पदाधिकारी ने कहा कि शुरू में लिंगायतों के भीतर दलितों ने एक आंदोलन शुरू किया था। ऐसा इसलिए कि क्योंकि समुदाय के भीतर ऊंची जाति से लिंगायत बने लोगों को जो फायदा मिला, वो दलितों को नहीं मिल सका था। साथ ही इस एक्सपर्ट समिति के एक सदस्य का कहना है कि लिंगायतों में 99 जातियों में से आधे से ज्यादा दलित या पिछड़ी जातियों से हैं। लिंगायतों की पहली महिला जगद्गुरु माठे महादेवी ने बीबीसी हिन्दी से कहा कि इस फैसले का हम स्वागत करते हैं। हमलोगों की न केवल हिन्दुओं से अलग जाति है बल्कि हम धार्मिक रूप से भी अल्पसंख्यक हैं। इससे हमारे लोगों को फायदा होगा। पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव और लिंगायत धर्म होराट्टा समिति के संयोजक डॉ एसएम जामदार ने कहा कि यह सच है कि पहले से धार्मिक रूप से अल्पसंख्यक लोगों को मिलने वाले आरक्षण में कोई कटौती नहीं होगी। इसका मतलब यह हुआ कि हमारे लिए अलग से बजट का आवंटन किया जाएगा। अब सवाल उठता है कि अगर कांग्रेस को किसी भी तरह का चुनावी फायदा मिलता है तो क्या इससे बीजेपी के वोट बैंक में सेंध लगेगी? राजनीतिक विश्लेषक और लिंगायत राजनीति को करीब से देखने वाले महादेव प्रकाश कहते हैं कि उत्तरी कर्नाटक के कुछ जिलों में कांग्रेस को आंशिक रूप से मदद मिल सकती है। लेकिन दक्षिणी जिलों में मठों के प्रभाव के कारण इसका कोई फायदा नहीं होगा। मैसूर में सुत्तुर मठ और टुमकुर में सिद्धगंगा मठ का व्यापक प्रभाव है। इसे लेकर कांग्रेस में भी राय बटी हुई है। आधिकारिक रूप से बीजेपी का कहना है कि कांग्रेस समाज को बाँट रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्य सरकार ने पूरे मुद्दे का राजनीतीकरण करने का फैसला किया है। पार्टी इस बात पर शुरू से ही कायम है कि इस मुद्दे पर वीराशइवा महासभा और मठाधीशों को फैसला लेने दिया जाए।

बताते चले कि कांग्रेस और भाजपा के उपापोह में पीएम मोदी और कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का भाव शेयर बाजार की तरह उतर–चढ़ रहा है, जिससे कर्नाटक चुनाव पर खासा असर देखने को मिल सकता है और ऐसे में कांग्रेस अधिवेशन में राहुल गांधी के भाषण के बाद उनका भाव चढ़ गया है, उप–चुनाव भाजपा के लिए उफ–चुनाव साबित हुए हैं, लेकिन ये शायद कुछ ही दिनों की बात है। योगी ने मान लिया है कि पार्टी अति–आत्मविश्वास की वजह से हारी, फूलपुर और

गोरखपुर की हार पर मोदी मौन हैं, वैसे ये सच है कि पीएम ने इन सीटों के लिए प्रचार नहीं किया था लेकिन उनके नाम पर वोट माँगे जरूर गए थे। कुछ दिन पहले पूर्वोत्तर राज्यों के नतीजे आने के बाद, जब लोगों को पता चला कि राहुल गांधी तो अपनी नानी के घर छुट्टियाँ मनाने गए हैं तो उनका रेट अचानक गिर गया, उसके पहले गुजरात में बीजेपी को 100 सीटों से नीचे समेट देने के नाम पर उनका ग्राफ चढ़ा हुआ था। अभी मोदी का बाजार भाव थोड़ा डाउन है, लेकिन कुछ ही दिन पहले त्रिपुरा में ढाई दशक पुरानी कम्युनिस्ट सरकार को उखाड़ने के बाद उनका ग्राफ आसमान छू रहा था, उनकी कामयाबी के कसीदे पढ़े जा रहे थे। पकौड़ा प्रकरण और नीरव मोदी कांड से जो माहौल बिगड़ा था, त्रिपुरा की जीत से ट्रैक पर आता दिख रहा था। साझीदार रही तेलुगु देशम पार्टी ने मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाकर फिर सीन खराब कर दिया, वहीं देवदर्शन में मोदी को टक्कर दे रहे राहुल गांधी, उनकी ही शैली में कांग्रेस को पांडव और बीजेपी को कौरव बताते हुए धर्मयुद्ध का ऐलान कर रहे हैं। 2014 की भारी कामयाबी के बाद, बिहार और दिल्ली में जब बीजेपी को हार मिली तो कुछ समय के लिए लगा कि मोदी का जादू चुक रहा है, लेकिन उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में मिली भारी कामयाबी के बाद लोग पिछली नाकामियों को भूल गए, मोदी ने यूपी फतह करने के बाद बने मूड को काफी समय तक कायम रखा, लेकिन पिछले कुछ समय से जय–जयकार की आवाज मद्धिम पड़ती लग रही है, मगर 2019 तक मूड ऐसा ही रहेगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता। 2019 के नतीजे आने तक हर रोज जनता का भरपूर मनोरंजन होता रहेगा, भारत दरअसल नौटंकी प्रधान देश है जहाँ लोग तथ्यों–तर्कों पर ध्यान देने की जगह अदा पर फिदा होते हैं। यही वजह है कि कॉमेडी शो और कांग्रेस अधिवेशन दोनों जगह, नवजोत सिंह सिद्धू अपने अंदाज में कोई बदलाव किए बिना फिट हो जाते हैं। टीवी न्यूज चैनल और सास–बहू के सीरियल दिखाने वाले इंटरटेनमेंट चैनलों के बीच का अंतर मिटता जा रहा है, टीवी चैनलों पर शोर–हंगामा मचता है और माहौल बनाया–बिगाड़ा जाता है, लेकिन जमीनी सियासी हाल जानने–समझने के लिए टीवी देखना रेत से

त ` ल निकालने की कोशिश है।

गौरतलब हो कि राहुल गांधी ने अब तक क्या हासिल किया है? उन्हें कहाँ जीत मिली है? गुजरात में जिग्नेश, अल्पेश और हार्दिक का सहारा लेने के बाद भी वे जीत नहीं सके। पंजाब की जीत का श्रेय भी अमरिंदर सिंह को गया, न कि उन्हें। उत्तर प्रदेश में बीजेपी हारी है लेकिन जीत बुआ–भतीजे की जोड़ी की हुई है, फूलपुर और गोरखपुर दोनों जगह कांग्रेस के उम्मीदवार की जमानत जब्त हो गई है, लेकिन वे बीजेपी की कमजोरी पर हावी होने में फिलहाल कामयाब हुए हैं, मगर ऐसा नहीं है कि उन्होंने कोई ठोस सफलता हासिल की हो, उनकी सबसे बड़ी प्रगति यही है कि उनकी बात सुनी जा रही है। कांग्रेस के कार्यकर्ता आज भी आश्वस्त नहीं हैं कि वे ऐन मौके पर फिर छुट्टी पर नहीं जाएँगे, और अब तो छुट्टी एप्रूव करवाने की जरूरत भी नहीं रही, उपाध्यक्ष तो हैं नहीं, अध्यक्ष बन गए हैं। राहुल गांधी को पहले अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं का विश्वास जीतना है और उसके बाद उन्हें उन दलों का विश्वास जीतना होगा जो भाजपा विरोधी महागठबंधन का नेतृत्व उनके हाथ में देने को तैयार नहीं हैं। यह साल 2019 की बड़ी लड़ाई से पहले का निर्णायक समय है। राहुल अगर राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ बीजेपी से छीन पाते हैं तभी माना जाएगा कि वे मोदी के लिए चुनौती हो सकते हैं, वरना नहीं। ये वो राज्य हैं जहाँ कभी कांग्रेस मजबूत रही है और कोई दूसरा दमदार क्षेत्रीय खिलाड़ी नहीं है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में तो बीजेपी लंबे समय से सत्ता में है जिसका नुकसान उसे होना तय है, इस पर भी राहुल ये तीन राज्य नहीं छीन पाए तो कोई उनके पीछे नहीं आएगा। लेकिन, उससे भी पहले राहुल गांधी को कर्नाटक में अपनी सरकार बचानी होगी जहाँ भाजपा पूरे लाव–लश्कर के साथ हमला बोल रही है। राहुल का भविष्य इस बात पर काफी हद तक निर्भर करेगा कि अब से लेकर 2019 के नतीजे आने तक वे जी–जान से, बिना कोई बड़ी गलती किए अपनी पारी खेल पाते हैं या नहीं? हालांकि राहुल को एक छूट है कि वे अभी खूब बोल सकते हैं, उनको कोई ये नहीं कहा जा सकता कि आपको

मौका नही मिला और आपने कुछ नहीं किया। ब्रैंड मोदी की सबसे बड़ी ताकत उनके भाषण रहे हैं, लेकिन उनकी अपनी कही हुई हर बात उन तक पलटकर आ रही है। अब पौने चार साल बाद मोदी के दावे और वादे वास्तविकता की कसौटी पर परखे जा रहे हैं। 2014 का चुनाव नरेंद्र मोदी विकास और हिंदुत्व के कॉम्बिनेशन के साथ लड़े थे, गुजरात मॉडल की बात बढ़–चढ़कर हुई थी, विकास के बारे में मोदी अब भी बोल सकते हैं लेकिन उसका असर कितना होगा, ये बड़ा सवाल है। रोजगार की कमी, किसानों में असंतोष, स्मार्ट सिटी, मेक इन इंडिया जैसी अति– महत्वाकांक्षी योजनाओं का आगाज जितना शानदार था, अंजाम उतना चमकदार नहीं रहा है। ऊपर से पीएनबी घोटाला, जय शाह की कमाई पर उठे सवाल और कई ऐसे मामले हैं जिनकी वजह से विकास और भ्रष्टाचार के खिलाफ बयानबाजी करने की ताकत कम कर दी है। लेकिन, ये नहीं कहा जा सकता कि मोदी की निजी लोकप्रियता कम हुई है। गुजरात का चुनाव वे

जिस तरह अपने नाम पर और गुजरातियों की शान के सवाल पर लड़कर हार से बच गए, वो मोदी की निजी ताकत का सबूत है। वे पूरे देश का चुनाव मोदी नहीं तो कौन? के मुद्दे पर लड़ सकते हैं और ऊपर से हिंदुत्व तो है ही, आरएसएस और भाजपा का संगठन भी काफी चुस्त है। मोदी नहीं तो कौन? का जवाब राहुल अभी तक नहीं बन पाए हैं, आगे बन पाएँगे या नहीं, मालूम नहीं, लेकिन हर रोज ये साँप–सीढ़ी का खेल बहुत दिलचस्प है। शेयर बाजार की तरह रोज–रोज का उतार–चढ़ाव देखने लायक है, वोटर सोच–समझकर ही निवेश करेंगे, ऐसी उम्मीद करनी चाहिए। ●

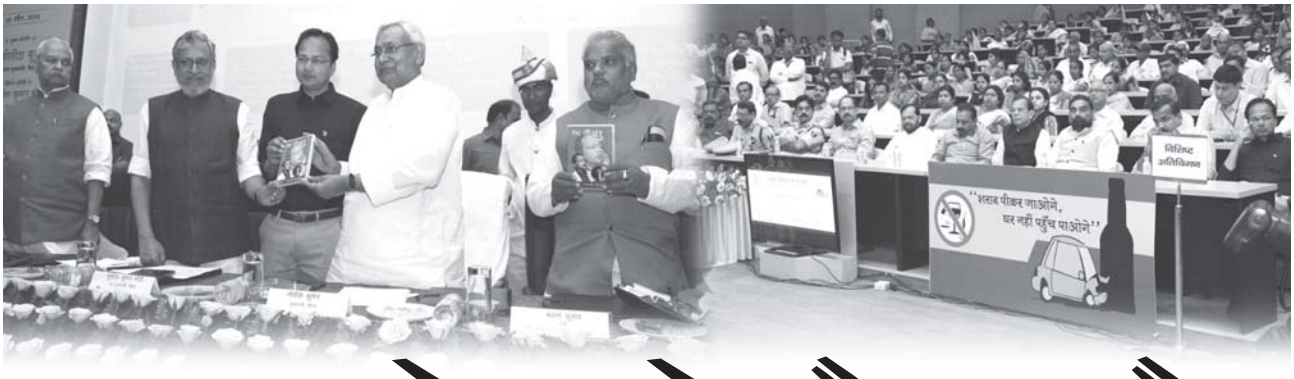

शराब को करो तौबा–तौबा

● अमित कुमार/त्रिलोकी नाथ प्रसाद

बीते 5 अप्रैल को बिहार में शराबबंदी के दो साल पूरे होने के मौके पर पटना के अधिवेशन भवन में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक म्यूजिक वीडियो 'तौबा तौबा शराब' का लोकार्पण किया। इस म्यूजिक वीडियो को इंडिया टीवी के बिहार संवाददाता नीतीश चंद्र ने तैयार किया है। गीत के बोल हैं–'कहिए कहिए जनाब, तौबा तौबा शराब, कहिए कहिए जनाब छोड़ो छोड़ो शराब' जिसे खुद नीतीश चंद्र ने लिखा और गाया है और उसकी धुन भी उन्होंने ही तैयार की है। उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग की तरफ से आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के अलावा उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी, मुख्य सचिव अंजनि कुमार सिंह, मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग के मंत्री विजेंद्र प्रसाद यादव, ग्रामीण विकास एवं संसदीय कार्य मंत्री श्रवण कुमार, DGP एस के द्विवेदी, उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग के प्रधान सचिव आमिर सुभानी और IT सचिव राहुल कुमार ने भाग लिया। शराब छोड़ने की अपील से जुड़े इस वीडियो में ये दिखाया गया है कि कैसे महिलाओं की तरफ से उठी मांग के बाद शराबबंदी का फैसला किया गया। फिर समाज के हर तबके के लोगों का इसे समर्थन मिला। वीडियो में मनोज तिवारी और रवि किशन के अलावा पटना के एसएसपी मनु महाराज, सीनियर आईएएस अधिकारी प्रत्यय अमृत और बिहार विधानसभा के अध्यक्ष विजय चौधरी ने भी नीतीश चंद्र के साथ तौबा तौबा शराब कहा है। इस वीडियो में सभी दलों के विधायकों, पटना के डॉक्टरों, वकीलों और प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों ने भी भूमिका निभाई है। गौरतलब है कि इससे पहले भी नीतीश ने शादी से जुड़े एक गीत को रिलीज किया था। नीतीश चन्द्र ने कहा कि संगीत में मेरी रुचि रही है। पत्रकारिता के दौरान मैने करीब से शराबबंदी के नुकसान को देखा है। इसलिए इस विषय पर मैं अपनी तरफ से भी कुछ योगदान देना चाहता था। शराबबंदी की पहल एक अच्छी पहल है। ●

उपचुनाव की हार योगी के लिए बड़ी सिख

● अमित कुमार

ठीक 12 महीने पहले जब योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी, तब ऐसा लग रहा था कि हिन्दुस्तान के सबसे बड़े प्रदेश में कुछ नया होने वाला है। आखिरकार इतिहास में पहली बार एक भगवाधारी साधु प्रदेश की सर्वोच्च कुर्सी पर आसीन हुआ था। आज योगी आदित्यनाथ को इस महत्वपूर्ण कुर्सी पर बैठे एक साल हो गया है और इस बीच जैसे उन्होंने कुछ पाया और कुछ खोया, वैसे ही प्रदेश ने भी कुछ पाया और कुछ खोया है। ज्ञात हो कि 19 मार्च 2017 को जब योगी ने शपथ लेते ही वादों का पिटारा खोल दिया और अपनी तेजतर्रार आवाज से प्रदेशवासियों को ये भी विश्वास दिला दिया कि वो हवाई बातें नहीं करते हैं और सच में उत्तर प्रदेश का कायाकल्प कर देंगे। सबको इस बात की समझ थी कि इस प्रदेश की हर समस्या के धरातल में भ्रष्टाचार बसा हुआ है। ये मानते हुए कि प्रदेश में बहुत समय बाद कोई ईमानदार व्यक्ति मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराजमान हुआ है, लोगों की ये धारणा बनी कि अब प्रदेश के दिन बिसरने वाले हैं। किन्तु, दिन तो बदले पर शायद केवल योगी आदित्यनाथ के लिए। गोरखनाथ मंदिर के महंत जो कि खुलेआम जनता को दर्शन देते थे और उनकी समस्याएं सुलझाते थे, अब ब्लैक कमांडो की कड़ी सुरक्षा में एक किले के अंदर रहने लगे। वो आदित्यनाथ जो जमीनी हकीकत को समझने के लिए खुद जमीन पर रहते थे, अब हेलिकॉप्टर से नीचे का दृश्य देखने लगे। सुरक्षाकर्मियों और नौकरशाही से हमेशा घिरे हुए आदित्यनाथ अब छन कर (फिल्टर्ड) आई सूचना पर निर्भर हो गए। हां, उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि ये हुई कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ ही जिलों तक सीमित रहने वाले ये साधु (योगी) भाजपा के राष्ट्रीय स्तर तक स्टार प्रचारक बन गए।

वही सूत्रों की माने तो आंख पर पट्टी बांध कर अपने सहयोगी उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और नौकरशाहों के झूठ को सच मान कर यकीन कर लिया कि उनके प्रदेश की सड़कों को गड्ढा मुक्त कर देने का वादा पूरा हो गया। असलियत ये है कि लखनऊ को छोड़ कर अन्य सभी शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कें आज भी पूरी तरह गड्ढा युक्त हैं। कानून–व्यवस्था को सुधारने के लिए उन्होंने एनकाउंटर करवाना ही सही रास्ता समझ लिया और कुछ ही महीनों में 1,100 से अधिक एनकाउंटर करवा डाले। ये बात अलग है कि इनमें मरने वालों की संख्या केवल 43 ही है, उसमें भी कई छुटभैय्ये हैं। कहने को तो एनकाउंटर में मारे गए सभी अपराधी इनामी बताए जाते हैं पर उनमें ऐसे भी हैं जिनके लिए इनाम की घोषणा उनके एनकाउंटर होने के कुछ ही दिन पहले की गई। कुछ ऐसे भी निकले जिन्हें जेल से जमानत पर छूटते ही गोली का शिकार बना दिया गया। एनकाउंटर की होड़ भी तभी तक लगी रही जब तक लखनऊ में 22–23 फरवरी को एक बहुत ही विशाल इन्वेस्टर्स समिट नहीं हो गया। आखिर इन्वेस्टर्स को यूपी से दूर रखने वाली उत्तर प्रदेश की बुरी कानून–व्यवस्था में सुधार दिखाना जरूरी था। ये सच है कि इतना बड़ा इन्वेस्टर्स समिट पहले कभी नहीं हुआ, जिसमें अरबों का खर्चा केवल साज–सज्जा और अन्य इंतजामों में कर दिया गया। लेकिन जैसे ही इस बात पर जोर दिया गया कि प्रदेश के सालाना बजट के बराबर ही इस समिट में साइन किए गए मसौदे (एमओयू) भी

4,28,000 करोड़ के हैं, ये स्पष्ट हो गया कि दाल में कुछ काला है, वरना धनराशि की ऐसी उचित व्यवस्था नहीं हो सकती। दूसरी ओर मुकेश अंबानी, कुमार मंगलम बिड़ला, गौतम अडाणी, आनंद महिंद्रा सरीखे भारी भरकम उद्योगपतियों के इस समिट में शामिल होने से योगी का कद ऊंचा हुआ, लेकिन साथ ही यह भी पता चला कि ये सभी उद्योगपति अन्य कई प्रदेशों में इस प्रकार के इन्वेस्टर्स समिट्स में ऐसे ही वादा करते आए हैं। साख बनाने में भले ही समय लगता हो, गिरने में ज्यादा वक्त नहीं लगता और ऐसा ही हुआ। सनद् रहे कि बरसों तक मठाधीश होने के कारण अपनी ही बात मनवाने की आदत उनमें बन चुकी थी, ना कि दूसरों की बात मानने की। मठ के भक्तों को तो आदत थी, दिन को भी रात कहने की। पर एक लोकतांत्रिक सरकार के सर्वोच्च पद पर बैठ कर मठाधीश बन कर रहना तो संभव नहीं था। लेकिन स्वार्थी, भ्रष्ट और नकारा नेता और नौकरशाही समय के साथ हावी होती गई। योगी और आमजन के बीच की खाई बढ़ती गई। जो वाह–वाह की बीमारी समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव और बहुजन समाज पार्टी की मायावती को ले डूबी, वो ही योगी आदित्यनाथ की सरकार को भी तेजी से दीमक लगाने लग गई, जिससे वो खुद बेखबर रहे। जी हुजुरी सुनने की आदत पड़ जाने पर जब कोई हकीकत का अहसास दिलाने का प्रयास करता तो वो दुश्मन हो जाता है। यहां तक कि जब उनके अपने शहर गोरखपुर के सरकारी अस्पताल में 70 बच्चे ऑक्सिजन की कमी के कारण मरे तब उन्होंने मीडिया को झूठी खबर फैलाने का दोषी ठहरा दिया। उल्टा उस जिलाधिकारी (डीएम) को सीने से लगा लिया जिसे इस बात का दोषी मानना चाहिए था, और तो और डीएम को तब हटाया जब पानी सिर के ऊपर चला गया और डीएम के नकारेपन का खामियाजा उनके ही लोकसभा क्षेत्र के उपचुनाव की हार के रूप में भुगतना पड़ा। ज्ञात हो कि गोरखपुर, जहां से वो स्वयं लगातार पांच बार लोकसभा सदस्य चुने गए और जहां उससे पहले उनके गुरु महंत अवैद्यनाथ तीन बार जीते, योगी आदित्यनाथ अपने नुमाइंदे को 2018 के मार्च में हुए उपचुनाव जीता नहीं पाए। उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। जम कर प्रचार किया और डेढ़ दर्जन से भी ज्यादा जनसभाएं की थीं। काश वो जमीनी हकीकत को समझने की कोशिश करते, जनता से संवाद बनाए रखा होता, अपने आप को तमाम बंदिशों में जकड़ने नहीं दिया होता, दिलों दिमाग के दरवाजों में ताले नहीं लगाए होते और सबसे जरूरी अपनी सोच को इतना सीमित ना किया होता और अपने प्रिय नारे, सबका साथ–सबका विकास को सही मायने में लागू किया होता तो इतनी जल्दी इतना सब खोना नहीं पड़ता।

खैर! राजनीति के मायने ही कुछ अलग होते हैं और आज लोकसभा की दो सीटे बीते उपचुनाव में हार जाने के बाद भाजपा और योगी में चिंता का विषय तो जरूर बन बैठा है। वही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सपा और बसपा के गठबंधन पर तीखा तंज करते हुए कहा कि कुछ लोग 'सर्कस के शेर' बन चुके हैं और वे खुद पर भरोसा करने के बजाय दूसरे की 'जूठन' पर निर्भर हो गए हैं। मुख्यमंत्री ने विधान परिषद में वर्ष 2018–19 के बजट पर चर्चा के दौरान सपा–बसपा के गठजोड़ पर कटाक्ष करते हुए किसी का नाम लिए बगैर कहा, ''कुछ लोग आजकल सर्कस के शेर हो गए हैं। सर्कस का जो शेर होता है वह शिकार करने में असमर्थ होता है, इसलिए दूसरों की जूठन पर ही अपनी पीठ थपथपाता और गौरवान्वित होने की कोशिश करता है।' उन्होंने कहा कि वह इसलिए गौरवान्वित होता है क्योंकि उसे लगता है कि उसे कोई शिकार मिल गया है, तो 'सर्कस का शेर' बनने के बजाय खुद पर और अपने स्वाभिमान पर विश्वास करें तो बहुत अच्छी बात होगी। योगी ने समाजवाद को लेकर भी एक शब्द का इस्तेमाल किया, जिस पर सपा सदस्यों ने कड़ी आपत्ति जताते हुए पीठ से इसे सदन की कार्यवाही से निकालने का अनुरोध किया। बहरहाल, योगी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि समाजवाद 'मृगतृष्णा' से ज्यादा कुछ नहीं है। देश समाजवाद नहीं, बल्कि रामराज्य चाहता है। सपा सदस्यों ने कहा कि समाजवाद तो संविधान के प्राक्कथन का हिस्सा है। मुख्यमंत्री योगी सरकार के सबसे बड़े पद पर हैं और संविधान की ही

शपथ लेकर यहां पहुंचे हैं। उन्हें समाजवाद के बारे में ऐसा नहीं कहना चाहिए। बहरहाल, मुख्यमंत्री ने समाजवाद के बारे में कहा कि उन्हें इस 'बहुरूपिए ब्रांड' के बारे में अच्छी जानकारी है। यह ब्रांड कभी जर्मनी में नाजीवाद के रूप में और इटली में फासीवाद के रूप में देखने को मिला है। क्या उत्तर प्रदेश में इसका वीभत्स रूप गुंडाराज के तौर पर देखने को नहीं मिला है? योगी ने बजट को लेकर विपक्षी दलों की टिप्पणियों को सच से मुंह मोड़ने की कोशिश करार दिया और कहा कि इस बजट को जन विरोधी और विकास विरोधी कहने वालों की बातें समझ से परे हैं। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने चार लाख 28 हजार करोड़ रुपए का अब तक का सबसे बड़ा बजट पेश किया है। पिछले साल जुलाई में पेश बजट में कृषि विभाग को आवंटित धन का 98 प्रतिशत खर्च हो चुका है। इसके अलावा ऊर्जा विभाग का 95 फीसीद, गृह विभाग का 100 प्रतिशत, पंचायतीराज का 78 फीसदी, लोक निर्माण विभाग का 65 प्रतिशत, चिकित्सा शिक्षा विभाग का 87 फीसदी धन

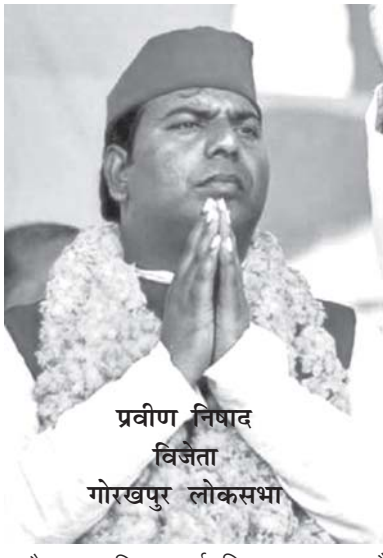

प्रवीण निषाद
विजेता
गोरखपुर लोकसभा

नगेन्द्र सिंह पटेल
विजेता
फुलपुर लोकसभा

खर्च किया जा चुका है। योगी ने कहा कि उनकी सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत नौ लाख 71 हजार मकानों का निर्माण स्वीकृत किया। करीब 32 लाख परिवारों को बिजली के कनेक्शन दिए। किसानों को कई तरीकों से राहत दी। यही राम राज्य है। प्रदेश की पूर्ववर्ती सपा और बसपा सरकारों पर प्रदेश को पिछड़ा बनाने का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि इन सरकारों की गलत नीतियों के कारण ही आज बीएड, टीईटी डिग्री धारक तथा शिक्षामित्र खून के आंसू रो रहे हैं। उनकी सरकार अब विभिन्न विभागों में बड़े पैमाने पर भर्ती करने जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बजट में हर तबके का ख्याल किया गया है। उन्होंने दावा किया कि पिछले एक साल के दौरान एक भी किसान ने सरकारी नीतियों से तंग आकर आत्महत्या नहीं की है। योगी ने कहा कि उनकी सरकार ने पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे के लिए बजट का इंतजाम कर दिया है और अगले महीने इसका शिलान्यास किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि कल सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने संसद में पेश की गई एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए सदन में कहा कि उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा दंगे हो रहे हैं। दरअसल, वह रिपोर्ट वर्ष 2016 की थी, जब सूबे में अखिलेश की ही सरकार थी। पिछली सरकार में महिमामंडित होने वाले अपराधी आज कानून के आगे 'गिड़गिड़ा' रहे हैं। आज सरकार ने ऐसा माहौल बनाया है कि अपराधी ठेला लगाने को मजबूर हैं। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने देश–दुनिया के निवेशकों की नजर में उत्तर प्रदेश के प्रति नकारात्मक सोच को बदल दिया है। ●

34 साल बाद खुलेगा जगन्नाथ मंदिर का रत्न भंडार

ओडिशा सरकार ने पुरी के श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन को 34 साल बाद रत्न भंडार खोलने की अनुमति दी। इसका पिछली बार 1984 में निरीक्षण किया गया था, तब रत्न भंडार के सात में से सिर्फ तीन चैंबरों को खोला गया था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा निरीक्षण किए जाने के लिए इसे खोलने की अनुमति दी गई है। रत्न भंडार में देवी–देवताओं के बेशकीमती जेवर और आभूषण रखे जाते हैं। इसका पिछली बार 1984 में निरीक्षण किया गया था, तब रत्न भंडार के सात में से सिर्फ तीन चैंबरों को खोला गया था। कोई नहीं जानता है कि अन्य चौंबरों में क्या रखा हुआ है। एसजेटीए के मुख्य प्रशासक पीके जेना ने कहा, 'राज्य सरकार के विधि विभाग ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के विशेषज्ञों द्वारा निरीक्षण किए जाने के लिए रत्न भंडार को खोलने की सशर्त अनुमति दी है, ताकि इसकी ढांचागत स्थिरता और सुरक्षा का आकलन किया जा सके।' हालांकि उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा लगाई गई शर्तों का अध्ययन करना बाकी है। जेना ने कहा, 'हम रत्न भंडार को खोलने से पहले निश्चित तौर पर एहतियाती कदम उठाएंगे।' उन्होंने इससे पहले स्पष्ट किया था कि रत्न भंडार के भीतर रखे आभूषणों और अन्य बेशकीमती सामानों का आकलन नहीं किया जाएगा और उसकी दीवारों और छतों का सिर्फ दृश्य निरीक्षण किया जाएगा।

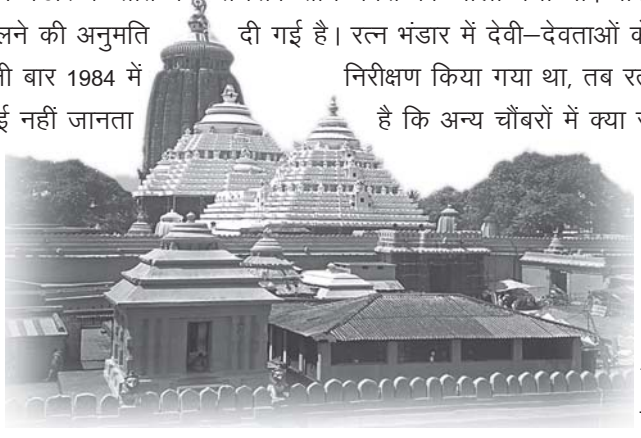

एक बार फिर बदला जमुई का राजनैतिक समीकरण

एक बार फिर जमुई जिले का राजनैतिक समीकरण बदल गया है। जिले के दिग्गज और बिहार की राजनीति में कई बार उथल-पुथल मचा देने में अहम भूमिका निभा चुके पूर्व मंत्री रहे नरेन्द्र सिंह एक बार फिर से सत्ताधारी पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर अपने पुराने घर वापसी की है। जिले में हमेशा से राजनीति की दो धुरी रही है। हालांकि जिले में कई प्रयोग किये गये पर जयप्रकाश-नरेन्द्र की धुरी के बीच तीसरी कोई धुरी कामयाब नहीं हुई है। लोजपा के चिराग के जमुई से सांसद बनने के बाद जिले में तीसरी मजबूत धुरी तैयार हुई थी पर यह प्रयोग भी कारगर साबित नहीं हो सकी। वर्तमान राजनैतिक परिवेश पर हमारे जमुई जिला ब्यूरो **अजय कुमार** की रिर्पोट :-

ऐसा पहली बार नहीं है कि बिहार के दिग्गज नेताओं में सुमार नरेन्द्र सिंह पहली बार बिहार के सियासत में फेर-बदल किया है। बिहार में कई ऐसे मौके आए जब नरेन्द्र सिंह ने बिहार की राजनैतिक दिशा बदल कर रख दिया। अबकी बार नरेन्द्र सिंह ने हम के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी को किनारा कर फिर से जदयू में शामिल होकर पुराने घर वापसी किया है। साथ में पुत्र और पूर्व चकाई विधायक पुत्र सुमित कुमार सिंह को भी जदयू ज्वाईन करा दिया। जिले के राजनीति के दूसरे और मजबूत धुरी रहे नरेन्द्र सिंह जब विदकते हैं तो जिले ही नहीं राज्य में भूचाल आ जाता है। हालांकि देखा जाय तो वर्तमान में जदयू का एक भी उम्मीदवार जिले में नहीं है और इसका भी सबसे बड़ा कारण नरेन्द्र सिंह के पिछले चुनाव में जदयू में नहीं होना है। गौरतलव है कि वर्ष 2010 के विधान सभा चुनाव में जिले के चार विधानसभा क्षेत्रों में से तीन पर जदयू का कब्जा था। उस समय राज्य में राजग गठबंधन की सरकार थी। पर वर्ष 2015 में नीतिश कुमार से अलग होकर नरेन्द्र सिंह के दिशा निर्देश पर मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने जदयू से अलग होकर हम पार्टी का गठन किया था और वे राजग में ही रह गये और जदयू महागठबंधन के हिस्सा बने। जमुई के चार में से तीन विधानसभा क्षेत्रों पर महागठबंधन की जीत हुई। चुनाव में जहॉ जिले के चार सीटें एनडीए से बदल कर तीन पर यूपीए का झंडा फहर गया। नरेन्द्र सिंह के भी दोनो बेटे भी चुनाव हार गये।

गौरतलव है कि जमुई नरेन्द्र-जयप्रकाश का खरीदा हुआ जागीर माना जाता है। नरेन्द्र सिंह का जहॉ जमुई जिले के चार में से तीन विधानसभा क्षेत्रों पर अपना दबदबा है तो वही जयप्रकाश ना0 यादव मुंगेर प्रमंडल के राजद और यादव के सर्वमान्य नेता हैं। वर्तमान में वे बांका के राजद सांसद भी हैं और जमुई से सांसद जयप्रकाश ना0 यादव के भाई विजय प्रकाश विधायक हैं। अब गौर करने वाली बात यह है कि राजद पिछले एक वर्षो से सत्ता से दूर है। नरेन्द्र सिंह जब सत्ता में नहीं भी थे तो भी प्रशासनिक पकड़ रखते थे। हालांकि सुमित जदयू में शामिल होने के बाद कई मौकों पर यह कह चुके हैं कि सत्ताधारी दल से दूर रहते हुए बहुत से मामलों पर हम अपना पक्ष मजबूती से नहीं रख पाते थे जिस कारण हमने जदयू ज्वाईन किया है और अब जमुई का विकास और तेजी से होगा। यहॉ एक बात और बता दूं कि सुमित बरनार जलाशय परियोजना के लिए लगातार प्रयासरत हैं और सत्ता में रहते या नहीं रहते हुए भी बरनार के लिए काम करते रहते हैं।

जीतनराम मांझी

आपको बता दूं कि जमुई जिला में नरेन्द्र सिह का किला ध्वस्त करने के लिए कई प्रयोग किया गया पर हर बार जमुई में हुआ प्रयोग विफल रहा। जिले में नरेन्द्र-जयप्रकाश के समानांतर धुरी बनाने में लोजपा के चिराग पासवान सफल जरूर हो गये पर आज वे जमुई के तीसरे मजबूत धुरी से कॉफी दूर हैं। ऐसा माना जा रहा था कि चिराग के आने के बाद जमुई में रहे दो धुरी की राजनैतिक पृष्ठभूमि को फुल स्टॉप लग सकता है और तीसरे धुरी की मजबूती चिराग के रूप में हो सकती थी। पर यह आज भी दूर की कौड़ी ही साबित हुआ। चिराग जमुई में न तो नरेन्द्र सिंह और न ही जयप्रकाश को नुकसान कर पाये। जमुई लोकसभा क्षेत्र जबसे सुरक्षित हुआ है तबसे जिले में राजद की ओर से श्याम रजक तथा जदयू की ओर से विधानसभा अध्यक्ष रहे उदय ना0 चौधरी को जमुई भेजा गया पर वे चुनाव जीतने में इस कारण विफल हो गये कि नरेन्द्र सिंह से बिना विमर्श कर जदयू ने जमुई के लिए उम्मीदवार घोषित कर दिया था। भूदेव चौधरी के सांसद बनने में भी नरेन्द्र सिंह का अहम भूमिका था। हालांकि मौजूदा माहौल यह है कि जमुई में आने वाले लोकसभा चुनाव में एक और प्रयोग किया जाना है। जमुई लोकसभा सीट से वर्तमान में जिले के प्रसिद्ध **समाजसेवी** रहे ई0 आई0 पी गुप्ता कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वहीं ऐसा माना जा रहा है कि नरेन्द्र-रामविलास में बिना सुलह के चिराग भी जमुई लोकसभा

आई.पी. गुप्ता

सुमित सिंह

अजय प्रताप

विजय प्रकाश

सीट से चुनाव मैदान में नहीं आ सकते। सूत्र बताते हैं कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार रामविलास और नरेन्द्र के बीच सुलह की कड़ी बन सकते हैं। वैसे देखा जाय तो नरेन्द्र सिंह जमुई से वैसे किसी भी सुलह को तैयार नहीं हो सकते जो बाद में उनके लिए उलटा पड़ जाय। वहीं चिराग का जमुई लोकसभा सीट निकलना नरेन्द्र सिंह का बिना विश्वास में लिए उम्मीदवार को उतारना रहा है। वर्तमान परिस्थिति यह है कि उदय ना0 चौधरी का राजद से नजदीकी बनते दिखाई दे रहा है। वैसे में एक बार फिर राजद जमुई में एक और प्रयोग करने का प्रयास कर सकता है। आपको बता दूं कि वर्तमान में नरेन्द्र-जयप्रकाश पर्दे के पीछे से राजनीती करते दिखाई दे रहे हैं। वैसे नरेन्द्र सिंह का विधान परिषद की सदस्यता इसी साल समाप्त हो रहा है। यदि नरेन्द्र को जदयू विधान परिषद् नहीं भेजती है तो नरेन्द्र-जयप्रकाश की धुरी कहीं बांका लोकसभा में भी दिखाई दे सकती है। वहीं जमुई लोकसभा सीट से जीतन राम मांझी भी जमुई से भाग्य आजमा सकते हैं और यदि ऐसा होता है तो यह अबतक का सबसे बड़ा प्रयोग जिले के लिए हो सकता है।

बात करें नरेन्द्र सिंह की बिहार में राजनैतिक उथल-पुथल मचाने की तो वे लालू मंत्रीमंडल में स्वास्थ्य मंत्री हुआ करते थे। लालू से मोहभंग होने के बाद वे लोजपा के प्रदेश अध्यक्ष बने। वर्ष 2005 के विधानसभा चुनाव में लोजपा को बिहार का चाभी मिल गया था। लोजपा सुप्रिमों रामविलास पासवान सत्ता के चाभी लेकर घुम ही रहे थे तभी लोजपा के आधे से अधिक विधायकों को नरेन्द्र सिंह लेकर जदयू में शामिल करा कर मध्यावही चुनाव के विगुल फुंकबा दिया। अगले ही चुनाव में जदयू-भाजपा गठबंधन की सरकार बन गई। नरेन्द्र सिंह जमुई और चकाई विधानसभा सीटों से जीत कर अपनी पहचान जमुई में कायम कर दिखाया। वर्ष 2014 लोकसभा चुनाव से ठीक पहले नरेन्द्र सिंह ने जीतनराम मांझी का नीतिश कुमार से दो-दो हाथ करबा कर अपनी पैठ बनाने का भरपुर प्रयास किया। हालांकि नरेन्द्र-जीतन की जोड़ी ने नीतिश को पराजित करने में नाकामयाब होने के बाद जीतन राम मांझी ने हम पार्टी का गठन कर लिया। हालांकि हिन्दुस्तानी आवाम मोंचा के नरेन्द्र सिंह किसी भी रूप में जिम्मेवारी नहीं सम्हाली थी। बिहार की राजनीति में गुमनाम की जिंदगी गुजार रहे नरेन्द्र सिंह जैसे ही देखा की जीतन राम मांझी ने महागठबंधन का दामन थामा एक बार फिर वे जदयू के तरफ विमुख हो गये। खुद हम के नेता बन कर अपने कुनवे समेत तथाकथित हिन्दुस्तानी आवाम मोंचा के कुछ नेताओं के साथ जदयू में विलय की घोषणा कर दिया और अगले ही दिन अपने बेटे पूर्व विधायक सुमित के साथ जदयू में शामिल हो गये।

अब आप देखेंगें कि इसका कितना असर जमुई के राजनीति पर परेगी तो यह कहने में कोई अतिश्योक्ती नहीं होगी कि एनडीए का पार्ट रहे नरेन्द्र सिंह आज भी एनडीए के तरफ ही हैं और आने वाला लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र के सहमती से ही उम्मीदवार जमुई लोकसभा सीट को मिलेगा।ं नरेन्द्र के बिना सहमती के चिराग भी जमुई से सीट नहीं निकाल सकते। वहीं नरेन्द्र सिंह के एक बेटे अजय प्रताप फिलहाल भाजपा के लिए कार्य कर रहे हैं तो दूसरे बेटे सुमित कुमार जदयू में शामिल होकर पूरी तरह से जदयू के लिए सर्मपित हो चुके हैं। सिकन्दरा सीट पर भी नरेन्द्र सिंह का प्रभाव होने के कारण देखना यह होगा कि सिकन्दरा विधायक बटी चौधरीं किस परिवेस में चलते हैं और नरेन्द्र सिंह से कितना लाभ ले पाते हैं। यहां एक बात और स्पष्ट करना लाजमी होगा कि नरेन्द्र जमुई के लिए खुद एक पार्टी हैं और उनके पास किसी पार्टी के उम्मीदवार को जिताने और हराने की क्षमता जरूर है भले वे अपने पुत्रों को जिताने की क्षमता नहीं रखते हों। विगत विधानसभा चुनाव में भी बंटी चौधरी जीत कहीं न कहीं नरेन्द्र सिंह का आशीर्वाद का ही परिणाम है। खैरा के एक मंच पर विगत लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र ने नीतिश कुमार के साामने खुले मंच पर बोले थे कि हम चाह लें तो जदयू उम्मीदवार उदय ना0 चौधरी की जमानत नहीं बचेगी। हालांकि उसका परिणाम यह हुआ कि उदय ना. चौधरी हार गये। जदयू के लिए सर्मपित रहे पूर्व मंत्री दामोदर रावत भी कहीं न कहीं यह जानते हैं कि जमुई की राजनीत में बने रहना है तो नरेन्द्र सिंह के बिना संभव नहीं है। वहीं हाल में जमुई स्थापना दिवस के मौके पर भी नरेन्द्र सिंह और जमुई प्रभारी मंत्री रहे मो0 खुर्शीद उर्फ फिरोज आलम से बकबास हो चुकी है। ऐसे में कोई यह नहीं कह सकता था कि नरेन्द्र सिंह का मुख्यमंत्री नीतिश कुमार से अंदर खाने क्या खिचड़ी पक रही होगी। पर अब फिर से नरेन्द्र सिंह के पलटी मारने के बाद नरेन्द्र जमुई जिले के बादशाह के रूप में उभर कर सामने आ चुके हैं। अब देखना यह होगा कि आने वाले लोकसभा चुनाव और विधान सभा चुनाव में नरेन्द्र सिंह की क्या भूमिका होती है। ●

चिराग पासवान

संस्कार और आचरण से विश्वगुरू बनेगा भारत : ई. संजय विनायक जोशी

दिनांक 28 मर्च, 2018 को बी. आइ.टी., नागपुर के पूर्व प्राध्यापक एवं भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय संगठन महामंत्री ई. संजय विनायक जोशी जी के मुख्य अतिथित्य एवं उद्घाटनकर्त्ता के रूप में सनातन धर्म जिला केन्द्रीय पुस्तकालय, सीतामढ़ी, बिहार के 100 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में शताब्दी वर्ष समारोह का आयोजन भव्य रूप से किया गया। इस अवसर पर एक राष्ट्रीय संगोष्टि, विषय-अध्ययन-अध्यापन एवं भारतीय वांगमय पर आयोजित की गई। समारोह के शुरूआत दीप प्रज्जवलन, मंगलाचरण एवं सरस्वती वंदना के साथ हुई। अतिथियों का स्वागत भाव-नृत्य के द्वारा सरस्वती विद्या मंदिर के बहनों के द्वारा किया गया। स्मारिका का प्रकाशन एवं विमोचन मुख्य अतिथि एवं मंचासीन विशिष्ट अतिथियों के द्वारा किया गया। साथ ही आर्यावत (सामाजिक एवं लोक कल्याणकारी संस्था) के द्वारा ई. संजय विनायक जोशी एक सिद्धांत' नाम के एक लघु पुस्तिका श्रद्धेय जोशी जी के जीवन सिद्धांतों एवं प्रयासों के अमूल्य क्षणों को चित्रें में संकलित कर वृत-चित्र पत्रिका का भी विवरण किया गया। ई. संजय विनायक जोशी ने अपने उद्बोधन में कहा कि-भारत वर्ष संस्कार और आचरण से ही प्राचीन काल से विश्व गुरू रहा है। इसके ज्ञान का भण्डार, वेद, पुराण, उपनिषदों एवं धार्मिक ग्रंथों की महता आज भी सम्पूर्ण विश्व अपना रहा है। हमें अपने आप को पहचानने की आवश्यकता है एवं पश्चिमी सभ्यता में शिक्षा का उद्देश्य केवल मात्र अर्थोपार्जन है, जबकि हमारे भारत वर्ष में शिक्षा का महत्व ज्ञान, संस्कार, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इत्यादि के लिए प्राप्त किया जाता है। यह मिथिला की धरती अनादी काल से ज्ञान की धरती रही है। यह आज भी ज्ञान की लौ जलाये रखा है। विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक, श्री रामकुमार जी ने कहा कि हमारे यहाँ अध्ययन-अध्यापन तो है लेकिन भारतीय वांगमय विलुप्तावस्था में है, जिसे बनाये रखने हेतु प्रयासरत रहना है। अन्य विशिष्ट अतिथियों में सत शुकदेव दास जी महाराज ने कहा कि हमें अपने सांस्कृतिक धरोहर को बचाये रखने हेतु प्रयासरत है। अन्य विशिष्ट अतिथियों में सत शुकदेव दास जी महाराज ने कहा कि हमें अपने सांस्कृतिक धरोहर को बचाये रखने की आवश्यकता है। प्रो. देवनारायण झा एवं प्रो. विद्याधर मिश्र (पूर्व कुलपति द्वय संस्कृत वि.वि., दरभंगा) ने ही कहा कि राष्ट्र की संस्कृति ही जीवनदायिनी होती है एवं विद्या प्राप्ति का उद्देश्य सिर्फ जीवनयापन न होकर चरित्र निर्माण होना चाहिए। बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी एवं मैथिली साहित्य अकादमी के अध्यक्ष सह निदेशक, श्री दिनेश चन्द्र झा ने कहा कि भाषा से ही सरकार और संस्कृति का ज्ञान होता है, इसके साथ ही डा. ऋषभचन्द्र जैन (निदेशक, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोधा संस्थान, वैशाली) श्री राकेश तिवारी (संरक्षक, वि.वि.प. सीतामढ़ी, शिवहर, पुपरी-सह-सदस्य समाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)ई. आदित्य झा प्रवासी भारतीय एवं अनेकोनेक विशिष्ट अतिथियों ने भी अपना उद्बोधन किया। कार्यक्रम का संचालन डा. बबिता कुमारी एवं संयोजन समन्वयन श्री संतोष कुमार झा, ये दोनों राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के परिवार के कार्यकर्त्ता है। मुख्य अतिथि एवं सभी विशिष्ट अतिथियों को मिथिला की परमपरागत पान, चादर, कुलगाल, पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह् देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा पचपन व्यक्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में योगदान हेतु मुख्य अतिथि संजय भाई जोशी के हाथों से स्मृति चिन्ह् देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. उमेश चन्द्र झा एवं समारोज में डा. वसंत मिश्रा, श्री अभय प्रसाद, प्रो. (डा.) उमेश कुमार, श्री हेमंत झा, श्री रामशरण अग्रवाल, श्री अभिषेक मिश्रा शिशु, श्री उमेश भवसिका, श्री नीरज गोयनका, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभिन्न आयामों के नेकोनेक कार्यकर्त्ता, विभिन्न प्रदेशों एवं क्षेत्रों से आये विद्वान, शिक्षक एवं प्रोफेसर एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति संख्या औसत संख्या 500 थी।●

कर्म एवं जन्म भूमि : ई. संजय जोशी

दिनांक 29 मार्च, 2018 को प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार, वैशाली, बिहार में श्री जगदीश चन्द्र माथुर की स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन श्री महावीर स्वामी 24वें तिर्थंकर के जयंती सुअवसर पर आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ई. संजय विनायक जोशी (पूर्व राष्ट्रीय संगठन महामंत्री भाजपा) विशिष्ट अतिथि डा. अनिल सुलभ (अध्यक्ष बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना) श्री राकेश तिवारी (संरक्षक-वि. वि.प. सीतामढ़ी, शिवहर, पुपरी-सह-सदस्य सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार) डा. महावीर शास्त्री, डा. विजय कुमार (विभागाध्यक्ष जैन शास्त्र विभाग, लंगट सिंह महाविद्यालय मुजफ्फरपुर) थे। इस संगोष्टि के विषय वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भगवान महावीर के उपदेश विषय पर मुख्य अतिथि ई. संजय भाई जोशी ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि पाचात्य सभ्यता के आव-भाव में आकर हम अपने पूर्वजों के दिये गये मार्गों को त्याग रह हैं उन्होंने भगवान महावीर की जन्मभूमि एवं भगवान के बुद्ध के कर्मभूमि की बारम्बार नमन करते हुए कहा कि अपने सामाजिक जीवन में भगवान के आदर्शों की समाहित करना एवं सद्मार्गों पर चलना चाहिए एवं अनावश्यक किसी को दुःख नहीं पहुँचाना चाहिए, (विशिष्ट अतिथियों में डा. अनिल सुलभ ने भी कहा हम इस वैशाली की धरा के गुणों को अपने में समाहित करें। इस कार्यक्रम की अथ्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. ऋषभ चन्द्र जैन ने किया। इस कार्यक्रम में अन्य उपस्थिति श्री श्री निर्मल कुमार जैन (अध्यक्ष जैन महासभा, नई दिल्ली), डा. उमेश कुमार डा. बबिता कुमारी, श्री संतोष कुमार झा, इत्यादि सैंकड़ों की संख्या में शिक्षक, शोधार्थी बुद्धिजीवि उपस्थित थे।

दलितों के रक्षा के लिए मरने को तैयार : राजेन्द्र कुमार राणा

● लक्ष्मीनारायण सिंह

राष्ट्रीय भीम सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष राणा राजेन्द्र पासवान ने कहा कि दलित मुद्दे पर किसी तरह के समझौता नहीं करेंगे। मैं दलितों के हितों के रक्षा के लिए मरने को तैयार हूँ। दलितों की अनदेखी हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसके लिए मुझे जो भी सजा मिलेगी मैं उसे स्वीकार करूँगा। उन्होंने कहा कि फतुहाँ, पटना एवं पूरे बिहार समेत सम्पूर्ण देश भर में सड़क, रेल यातायात एवं दुकान प्रतिष्ठान को जुलुश निकालकर बंद कराया गया। उन्होंने केन्द्र सरकार पर दलितों के साथ अन्याय करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि आरक्षण हम दलितों का जन्मसिद्ध अधिकार है। फतुहाँ में आरक्षण-विरोधी नीति और एस.सी., एस.टी. अत्याचार निवारण अधिनियम को छेड़-छाड़ करने के विरोधी में दलित संगठन राष्ट्रीय भीम सेना एवं राष्ट्रीय चौहरमल सेना के संयुक्त नेतृत्व के अलावा राजद, भाकपा माले, भाकपा ने भी सड़क पर उतर कर केन्द्र सरकार का विरोध किया। सड़क से लेकर रेल तक जाम किया एवं दुकान और प्रतिष्ठान भी भारत बंद के अवसर पर कराया गया।

भारत बन्द के अलावे फतुहाँ शहर में केन्द्र सरकार के आरक्षण-विरोधी नीति और एस.सी./एस.टी. अत्याचार निवारण अधिनियम को छेड़-छाड़ करने के विरोध में राष्ट्रीय भीम सेना और चौहरमल सेना के बैनर तले भारत बन्द के दौरान सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष राणा राजेन्द्र पासवान, दिलीप पासवान (दलित सेना) रणविजय पासवान, लालबाबु पासवान, अनिता पासवान

क संयुक्त नेतृत्व में सैंकड़ों समर्थकों के साथ जूलूस निकालकर घोषित भारत बन्द को सफल कराने के लिए शहर के दुकानों को बन्द कराया और महारानी चौक पर टायर जलाकर फतुहाँ-पटना, फतुहाँ-मोकामा और फतुहाँ-दनियावाँ सड़क मार्ग पर प्रदर्शन कर घंटो जाम कर दिया। इतना ही नहीं फतुहाँ रेलवे स्टेशन पर पहुँच कर रेल चक्का जाम किया, जिससे रेल परिचालन घंटो बाधित हुआ। ताज्जुब की बात है कि इस प्रदर्शन में भाजपा, लोजपा, जदयू के दलित नेता ही केन्द्र सरकार के विरूद्ध नारेबाजी की और आवाज लगाया कि जो दलित-पिछड़ा की बात करेगा वही देश पर राज करेगा। इसके अलावा इस आन्दोलन में नवल पासवान, सुधीर पासवान, संजय पासवान, सुनीता देवी, मुरारी राम, तपेन्द्र कुमार सुरज, नितिश भारती, अखिलेश पासवान, धुरी दास, दिलीप पासवान, प्रभाकर कुमार, दीना पासवान, राम प्रवेश दास, हेमा चौधरी, लाला नटराज आदि सैंकड़ों दलित परिवार के लोग भारत बन्द में सहयोगी के रूप में भूमिका निभा रहे थे। इसके अलावा भारत बन्द आन्दोलन में दलितों की हमदर्दी बटोरने के लिए राजद के दर्जनों कार्यकर्त्ता नगर अध्यक्ष डा. दयानन्द प्रसाद सिंह और युवा नेता धर्मवीर यादव के नेतृत्व में और भाकपा माले प्रखण्ड सचिव शैलेन्द्र यादव ने भी विरोध मार्च निकालकर भारत बन्द का समर्थन किया।

दलित नेता राणा राजेन्द्र पासवान, राष्ट्रीय भीम सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि समाज के कुछ लोग मानते हैं कि आरक्षण की वजह से देश बर्बाद हुआ है, तो राणा जी ने कहा कि ''लश्कर भी तुम्हारा है, सरदार भी तुम्हारा है। तुम झुठ को सच लिख हो अखबार भी तुम्हारा है।'' तुम जो कहो वो सच, हम जो कहें वो झुठ मुल्क में नफरत का ऐसा तुफान मचा डाला है।''●

किसान स्वास्थ्य मेला सराहनीय कदम : मंगल पाण्डेय

● लक्ष्मीनारायण सिंह

फतुहा विधान सभा क्षेत्र के फतेहपुर पंचायत के फतेहपुर हाई स्कूल में रोटरी सिटी सम्राट, रोटरी साउथ की ओर से स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राज्य के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डेय ने कहा कि राज्य सरकार केंसर, हार्ट, एड्स जैसे क्रॉनिकल मरीजों को नि:शुल्क चिकित्सा सेवा दे रही है साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी ऐसे मेला लगाकर ग्रामीणों को स्वास्थ्य जॉच व दवा भी दी जायगी। इस अवसर पर पथ निर्माण मंत्री नन्द किशोर यादव, संजीव यादव के कार्यक्रम को सराहते हुए उन्होंने कहा कि सड़कों पर बराबर जाम की समस्या से निजात पाने के लिए जीरो माईल से छोटी पहाड़ी, बैरीया, अबदुल्लाहचक, समपतचक, फतेहपुर गौरीचक होते हुए मसौढ़ी रोड को फोर लेन बनाने की बात कहीं इस अवसर पर आर एम आर आई के निदेशक डॉ प्रदीप दास की देख-रेख के यक्षमा, कालाजार, खॉसी की जांच की गई। स्वास्थ्य मेला में डॉ0 अभिषेक गोलवारा, डॉ0 ममता सिन्हा, डॉ0 टी0 पी0 गोलवारा, डॉ0 एस ए0 कृष्णा, डॉ वैभव राज, डॉ0 राजेश कुमार व रूबन हॉस्पीटल से आए चिकित्सकों ने हजारों लोगों के स्वास्थ्य के जॉच की।

भाजपा बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रभारी संजीव कुमार यादव ने बताया कि किसान स्वास्थ्य मेला में हजारों लोगो को स्वास्थ्य की जॉच कि गई तथा इसी तरह की योजना आगे भी चलाई जाएगी। उपस्थित लोगों ने संजीव यादव के बारे में प्रशंसा करते हुए बताया कि मृदु भाषा तथा हर समय सुलभ इनकी विशेषता रही है। इस अवसर पर संजय सिन्हा, बी0 एन0 कपुर, विजय कुमार यादव, सुधीर कुमार, सीताराम पाण्डे, उमेश सिंह, वरूण सिंह, रामजी सिंह, श्याम नन्द यादव, डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह, राजेन्द्र राणा, शत्रुघन सिंह, दिलीप सिंह, चितरंजन सिंह, अभिषेक शुक्ला, शैलेन्द्र सिंह, सीताराम पाण्डे, मनोज कुमार, श्रवण कुमार यादव, राजीव रंजन, संजय सिंह, विनय कुमार, सुधीर कुमार आदि मौजुद थे।

संजीव यादव के बारे में बताया जाता है कि समाज के हित में 24 घंटे मेहनत करते है। शायद ही कोई ऐसा दिन गुजरता हो जब किसी सामाजिक या राजनीतिक कार्यक्रमों में भाग नहीं लेते हो। युवाओं के सम्मान तथा सही दिशा मार्गदर्शन के लिए हर संभव सहयोग करते रहते है। अपनी दुरगामी सोच के कारण ये युवा वर्ग के बीच खास स्थान रखते हैं स्वच्छ राजनीति को आगुवाई के लिए ऐसे जनप्रिय समाजसेवी को आगे आना चाहिए ताकि युवा पीढ़ी को अच्छा पथ प्रदर्शक मिल सके। लोकप्रिय राजनेताओं के लिस्ट में पहली बार किसी समाजसेवी का नाम सामने आ रहा है। एक सर्वे टीम द्वारा शहर एवं गॉव में छोटे-बड़े मुहल्ले के लोगों से बात-चित की और पूछा कि कौन ऐसा चेहरा है जो आपके लिए कुछ करना चाहता है। यूवा वर्ग ने अपनी जुबान से संजीव यादव को सबसे अधिक लोकप्रिय माना है। ●

स्वतंत्रता सेनानी भुल्लर ठाकुर के याद में पुष्पांजलि एवं श्रद्धा-सुमन कार्यक्रम

वैशाली जिले के पटेढ़ी बेलसर प्रखंड अंतर्गत मानपुरा गाँव के पावन धरती पर आजादी में अहम भमिका निभाने वाले क्रांतिकारी, गाँधीवादी स्वतंत्रता सेनानी स्व. युगेश्वर प्रसाद ठाकुर उर्फ भुल्लर ठाकुर के याद में पुष्पांजलि तथा श्रद्धा-सुमन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी स्व. भुल्लर ठाकुर स्मृति फाउंडेशन के अध्यक्ष विक्रम कुमार ने कहा कि स्वतंत्र भारत का हरेक व्यक्ति आज इन वीरों और महापुरूषों का ऋणी है, जिन्होंने अपना सब कुछ छोड़ सम्पूर्ण जीवन गाथादेश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया। पटेढ़ी बेलसर विहिप के मंत्री संजय राय ने कहा कि इनकी जीवन गाथा हम सभी युवाओं को इनके संघर्षों की बार-बार याद दिलाता हरेगा, साथ ही हम सभी युवाओं को प्रेरणा देने का काम करता रहेगा। पटेढ़ी बेलसर विहिप् अध्यक्ष बिपिन ओझा ने भुल्लर ठाकुर के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए कहा कि मुझे गर्व महसूस हो रहा है कि मुझे गाँधीवादी स्वतंत्रता सेनानी भुल्लर ठाकुर के पुष्पांजलि सभा में शामिल होने का मौका मिला। इस पुष्पांजलि एवं श्रद्धा-सुमन कार्यक्रम के मुख्य रूप से अनिरूद्ध कुमार पासवान, विशाल कुमार, दीपक कुमार, विवेक कुमार, साहिल कुमार, चंदन गौरव, राहुल, आदित्य कुमार, नवीन कुमार सहित दर्जनों साथी मौजूद थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वतंत्रता सेनानी का प्रपौत्र अमित कुमार ने किया। ●

अपने संस्कार व संस्कृतियों के बदौलत भारत फिर बनेगा विश्वगुरु : स्वामी सुदर्शनाचार्य

● नवीन कुमार रौशन

ऋषि-मुनियों की यह धरती कालांतर में विश्व गुरू रहा है, इसके संस्कृति में तप और तपस्वियों की संस्कार समाहित है, अपने उन्हीं संस्कारों व संस्कृतियों को अपनाकर भारत एक बार फिर से निश्चय ही विश्व गुरू बनेगा। उक्त बातें अपने उद्घाटन भाषण में श्री श्री 1008 सुदर्शनाचार्य जी महाराज ने कहा। जहानाबाद शहर के राजाबाजार स्थित रामकृष्ण परमहंस विद्यालय के वार्षिकोत्सव का उद्घाटन मंगलदीप प्रज्जवलित करते हुए उद्घाटन भाषण में आगे कहा कि विदेशियों और इतिहासकारों के लाख प्रयासों के बावजूद हमारी संस्कृति और संस्कार अभी भी नष्ट नहीं हुई है। तभी तो आज भी स्वामी विवेकानन्द जैसे शिष्य पैदा करने वाले रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरू के नाम पर हमारे भारत भूमि पर आज भी शैक्षणिक संस्थानें स्थापित हैं। जहानाबाद में भी स्थापित यह संस्था निश्चित रूप से छात्रों में अपने आदर्श के नामों के अनुकूल ही संस्कार भर रहे होंगे, और देश में अब तक ऐसे संस्थान रहेंगे, हमारी संस्कृति को कोई समाप्त नहीं कर सकता और ऐसे संस्थानों से निकले संस्कारित बच्चों के बदौलत ही भारत फिर से एक बार विश्वगुरू बनेगा ये मेरा विश्वास और आशिर्वाद है।

वही इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित अपर पुलिस अधीक्षक संजीव कुमार ने कहा कि शिक्षा शांति और सद्भाव की खोज का मार्ग है। शिक्षित समाज विकसित समाज और विकसित समाज की नींव है। शिक्षा के बदौलत समाज ही नहीं विश्व में भी बंधुत्व स्थापित की जा सकती है। यह तभी होगा जब शैक्षणिक संस्थानें अपने यहाँ निखर रहे देश के भविष्यों में गुणवता के साथ-साथ संस्कारयुक्त शिक्षा को समाहित करें और मेरा यह मानना है कि ऐसे आदर्श महापुरूषों के नाम पर स्थापित विद्यालयों में ही यह कार्य ईमानदारी पूर्वक की जा सकती है।

वही कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मगध विश्वविद्यालय के मगही विभाग के विभागाध्यक्ष डा. भरत सिंह ने मगही में संबोधित करते हुए कहा कि हम बच्चों को सही मार्गदर्शन के लिए जरूरी है कि अभिभावक उन्हें केवल विद्यालयों के भरोसे नहीं छोड़ छोटी-छोटी बातों पर खुद मार्गदर्शन करें। विद्यालय के अलावे बच्चों को आज पारिवारिक मार्ग-दर्शन की कमी आज समाज में देखा जा रहा है। यही कारण है कि समाज आज नैतिक पतन की ओर अग्रसर है। समाज के नैतिक पतन छेड़खानी, बलात्कार आदि जैसी घटनायें समाचारों में अक्सर देखने को मिल रही है।

इनके अलावे कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के संस्थापक निदेशक चन्द्रभूषण शर्मा उर्फ भोला बाबू ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि रामकृष्ण परमहंस विद्यालय समाज में अपने उत्कृष्टता के बदौलत जो विश्वसनियता स्थापित की है वह अब शहर ही क्या जिले में किसी से छूपी नहीं है। विद्यालय ने अपने आज तक की सफर में कई सफलतायें हासिल की है। यहाँ से निकले हुए बच्चे कई क्षेत्रों में अपना परचम फहरा रहें है। मैं आज एक बार फिर उन अभिभावकों को आश्वस्त करना चाहूँगा कि आपके विश्वास पर हम निश्चित रूप से खरे उतरेंगे। लेकिन अपने बच्चों की प्रथम पाठशाला परिवार होता है, जहाँ उनकी संस्कारों की काउंसलिंग होता है, इसके प्रति आपको भी सजग रहना पड़ेगा। भोला बाबू ने जहाँ आगत अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर किया वहीं विद्यालय के छात्र-छात्रा आभा, निशा, शबनम, मीसा, आँचल, आकांक्षा, स्वाति एवं उनके साथियों ने स्वागत गीत गायें तथा सरस्वती वंदना से कार्यक्रम की शुरूआत की।

इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से, डा. सत्येन्द्र कुमार, जिला परिषद् सदस्या सुनीता देवी, आदी प्रमुख रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य अरविन्द कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ●

बुनियादि सुविधाओं के आभाव में जुझता अस्पताल

● मुन्ना पाण्डेय

स्थानीय अस्पताल में बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव है। जिसका खामियाजा मरीज एवं उनके साथ आए परिजनों को भुगतना पड़ता है। यहाँ तक कि मरीज व उसके परिजनों को पीने के लिए पानी भी बाहर से लाना पड़ता है।

हरनौत अस्पताल को बड़ा एरिया कभर करना पड़ता है। लंबी दूरी तक एन.एच. पर होने वाले छोटी-बड़ी दुर्घटना में घायलों को इसी अस्पताल में भर्ती कराया जाता हैं जहाँ बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव है। इस अस्पताल में न ड्रेसर है न एक्सरे। न ही पीने का पानी की व्यवस्था है। मरीज के परिजन क्या अस्पताल कर्मी भी एन.एच. 31 पार कर चापाकल से पानी लाकर प्यास बुझाते हैं। कई बार अस्पताल में सुविधा के आभाव में लोग सदर अस्पताल एवं पी.एम.सी.एच. जाते-जाते रास्ते में दम तोड़ जाते हैं। भवन के अभाव में रात भर मरीज के परिजन एवं स्वास्थ्यकर्मी बरामदा पर बैठकर रात बिताते हैं। कफ सिरप समेत कई आवश्यक दवाओं की कमी है। जिसके चलते जरूरी दवाएं बाहर से मंगवाना पड़ता है। अस्पताल परिसर में कई लाईट लगवाया गया था, लेकिन अभी सभी लाईट बेकार पड़ा है। शल्य कक्ष की व्यवस्था भी ठीक नहीं है। मुख्य दरबाजा वर्षो से खोलकर अलग रखा है।

इन समस्याओं पर अब तक कोई विशेष पहल नहीं किया गया। कुव्यवस्था के बारे में स्थानीय लोगों द्वारा बराबर वरीय अधिकारियों को सूचना दिया जाता है। यहाँ तक की कार्रवाई का आश्वासन भी मिलता है, पर आजतक आश्वासन के अलावा कुछ नहीं मिला।

★ **दवा का कमी** :- अस्पताल के आउटडोर एवं इंडोर में दवाओं का घोर कमी है। डॉ. अविनाश कुमार से पूछे जाने पर बताया कि आउटडोर एवं इंडोर मिलाकर लगभग 90 दवाओं की आवश्यकता है। जिसमें 25 दवाएं उपलब्ध है। कफ सिरप, सुगर, बी.पी., चर्म रोग के अलावे निडिल की कमी है। ठंढ के मौसम में इन सभी दवाओं का ज्यादा जरूरत पड़ता है। हैरत की बात है कि बुखार के मरीजों को बुखार जांचने के लिए थर्मामीटर भी नहीं है। अस्पताल में इमरजेंसी के अलावा अन्य मरीजों के लिए अपनी निडिल की व्यवस्था ही नहीं है।

★ **डॉक्टर हैं पर व्यवस्था नहीं** :- अस्पताल में एक डेंटल डॉक्टर तो है, लेकिन दांत के इलाज करने के लिए किसी प्रकार के संसाधन नहीं है। लोगों के दाँत की समस्या बढ़ती जा रही है। फिर भी कोई व्यवस्था नहीं है। जिसके चलते लोगों को दांत की समस्याओं का निदान नहीं हो पाता है। शायद यही कारण है कि डॉक्टर साहब अस्पताल में बहुत कम नजर आते हैं और सामान्य मरीजों को देखकर चले जाते हैं। इसी तरह आयुर्वेदिक डॉक्टर हैं, पर एक भी आयुर्वेदिक दवाएं उपलब्ध नहीं है।

★ **वर्षो से ड्रेसर का पद है रिक्त** :- अस्पताल में पिछले कई वर्षो से ड्रेसर का पद रिक्त है। जिसके चलते सड़क दुर्घटनाओं, मारपीट, गोलीबारी एवं जले हुए मरीजों का ड्रेसिंग या तो नन टेकनिशियन करते हैं या फिर चिकित्सक के सहयोग एवं आसपास के निजी क्लीनिक के प्रैक्टिशनर द्वारा किया जाता है। मरीज के परिजनों का बराबर शिकायत रहता है कि गंभीर अवस्था में डॉक्टर सही से प्राथमिक उपचार किए बगैर रेफर कर देते हैं। जिसके चलते मरीज का बुरा हाल होता चला जाता है। कितने लोग रास्ते में तो कितने अस्पताल में भर्ती होने के बाद दम तोड़ देते हैं। अगर इस अस्पताल में ठीक से प्राथमिक उपचार किया जाए तो शायद ऐसी घटनाएं कम हो सकती है।

★ **बाहर से लाते हैं पीने का पानी** :- अस्पताल में आए मरीजों व उसके परिजनों को प्यास बुझाने के लिए एक भी चापाकल सही नहीं है। अस्पताल में गाड़े गए सभी चापाकल बेकार पड़े हैं। मरीज के परिजन तो दूर अस्पताल कर्मी को भी प्यास लगता है, तो पीने के लिए पानी एन.एच. 31 पारकर नारायण सेवा सदन के बगल से पानी लाते हैं। डॉ. अविनाश ने बताया कि हमलोग पटना से पीने के लिए गाड़ी में 10 लीटर पानी लेकर आते हैं। रोगी कल्याण समिति के सदस्य चंद्र उदय कुमार ने बताया कि कई बार बैठक में खराब पड़े चापाकलों की मरम्मती की बात उठाई गई है। आरो मशीन लगाने का प्रस्ताव भी पारित है। अस्पताल प्रशासन द्वारा अबतक पहल नहीं किया गया है।

★ **अस्पताल में बराबर होता है हंगामा** :- सड़क दुर्घटनाओं में घायलों को अस्पताल में भर्ती कराने के बाद उचित उपचार के अभाव में बराबर हंगामा होता रहता है। कभी डॉक्टर के अनुपस्थिति तो कभी समय पर एंबुलेंस न मिलने के चलते लोगों का आक्रोश देखा जाता है। बता दें कि डॉक्टर रोस्टर ड्यूटी के अनुसार दूरदराज से आते हैं। बड़ी घटना घट जाने के बाद एक डॉक्टर से काम नहीं चलने पर आस-पास के निजी क्लीनिकों से लोगों को बुलाकर सहायता लिया जाता है। कई डॉक्टर अस्पताल कम और निजी क्लीनिक में ज्यादा समय देते हैं। इमरजेंसी मरीज आने पर डॉक्टर साहब को फोन कर बुलाया जाता है। उसके बाद इलाज शुरू किया जाता है। एक एम्बुलेंस रहने के चलते कभी-कभी मरीजों को खामियाजा भुगताना पड़ता है। इन सारी कुव्यवस्थाओं के चलते बराबर अस्पताल में हंगामा होता रहता है।

★ **ट्रामा सेंटर की है जरूरत** :- रोगी कल्याण समिति के सदस्य चंद्र उदय कुमार ने बताया कि हरनौत अस्पताल में बराबर छोटी-बड़ी दुर्घटनाओं में घायल मरीजों का आना होता है। कभी-कभी एक साथ कई मरीज आ जाने पर अस्पताल में व्यवस्था के अभाव के चलते अफरा-तफरी मच जाता है। किसी को बेड पर तो किसी को बरामदे में सुला कर इलाज किया जाता है। सुविधा के भाव में गंभीर अवस्था में घायल मरीजों का सही उपचार नहीं हो पता है। जिसके चलते कितने लोग अब तक काल के गाल में समा गए। इसलिए इस अस्पताल में ट्रामा सेंटर बनाकर लोगों का जान-माल का सुरक्षा किया जाना चाहिए। इस संबंध में कई बार स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारियों से फरियाद किया जा चुका है। बावजूद अब तक एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र लायक भवन का निर्माण भी नहीं किया गया है।●

हंगामें के बीच हुई पंचायत समिति की बैठक

● मुन्ना पाण्डेय

प्रखंड परिसर स्थित ट्रायसम भवन में पंचायत समिति की नोकझोंक व हंगामेदार बैठक हुई। बैठक में अधिकतर समय योजनाओं के लिये राशि के बंटवारे को लेकर ही भेंट चढ़ गया। कालांबा के पंचायत समिति सदस्य प्रवीण शंकर ने सदन में कहा कि पंचायत समिति की बैठक में प्रमुख के द्वारा योजनाओं की राशि बराबर-बराबर देने को कही गई थी, लेकिन राशि को हेर-फेर कर किसी को डेढ़ लाख तो किसी को तीन लाख राशि दे दी गई। इसके लिये पंद्रह योजनाओं को खोला गया, जिसमें अग्रिम भुगतान भी की गई। सदन में यहाँ तक कहा गया कि इस योजनाओं में कमीशन तक ली गई। सदन में सदस्यों के द्वारा पंचम वित्त में गलत ढग से राशि निकालने पर कमिटि बनाकर जाँच करने की मांग किया गया। सदन में बैठक के दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना, आवास सहायक एवं पर्यवेक्षक के द्वारा गड़बड़ी करने एवं लाभुकों का गलत रिपोर्ट देने पर जमकर हंगामा हुआ। स्थिति यह हो गया कि नेहुसा पंचायत समिति सदस्य बबिता देवी के पति चंदन कुमार भी सदन में घूंस कर आक्रोशित होकर बी.डी.ओ. से प्रधानमंत्री आवास योजना में गड़बड़ी रोकने को कहा। उन्होंने कहा कि भ्रष्ट आवास पर्यवेक्षक एवं आवास सहायक के मिलीभगत व गड़बड़ी के चलते गाँव में उन्हें बुरा भला सुनना पड़ता है। कमीशन के चलते गड़बड़ी की जाती है। आवास योजना का लाभ सही लोगों

को नहीं मिल पाता है। सदन में चेरण पंचायत समिति के सदस्य ने सवाल उठाया कि प्रारम्भ से ही स्थाई समिति की गठन नहीं की गई। जिससे जनता को नुकसान उठाना पड़ा। हालांकि प्रमुख के द्वारा स्थाई समिति गठन होने की बात कही गई। बैठक में पंचायत समिति सदस्यों के द्वारा स्थाई समिति की बैठक की कार्रवाई दिखाने को कहा गया। जिसे पटल पर नहीं रखा गया तथा सदस्यों के मांग पर स्थाई समिति को भंग करने की माँग की गई।

सोराडीह मुखिया रणविजय कुमार पटेल ने सदन में सवाल उठाया कि किस परिस्थिति में सोराडीह में आंगनबाड़ी केन्द्र सरकारी भवन रहते हुए भी निजी मकान में चलाया जा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक आंगनबाड़ी केन्द्र का अपना भवन पैंतालीस है, जिसमें मात्र सैंतीस भवन हीं कार्यरत हैं। शेष आठ भवन अवैध कब्जा, ध्वस्त होने व अन्य कारणों के वजह से खाली है। प्रखंड में किराए पर अब भी छप्पन भवन में केन्द्र चलाया जा रहा है। शेष अन्य सैंतालीस भवन दूसरे सरकारी भवन में संचालित है। दो सौ प्रति महीना के हिसाब से प्रति वर्ष सिर्फ किराया भुगतान में ही एक लाख चौबीस हजार आठ सौ रूपये खर्च हो रहे हैं। चेरो मुखिया राकेश पासवान ने पंचायत में पानी के लिये कनेक्शन एवं प्रधानमंत्री आवास योजना में फैली भ्रष्टाचार को लेकर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि पर्यवेक्षक व सहायक के मेल से पक्के लोगों को भी लाभुक बना दिया गया। बैठक के दौरान प्रमुख रेखा देवी, बी.डी.ओ. देवेन्द्र कुमार, मुखिया राकेश पासवान, रणविजय पटेल, धर्मशीला देवी, पंचायत समिति प्रवीण शंकर, बबिता देवी सहित अन्य लोग भी उपस्थित हुए। ●

पत्रकारों व बुद्धिजीवियों ने निकाला कैंडल मार्च

● मुन्ना पाण्डेय

हाल ही में पत्रकारों पर हुए हमला एवं हत्या के विरोध में स्थानीय पत्रकार एवं बुद्धिजीवियों के द्वारा कैंडल मार्च का आयोजन किया गया। बताते चलें कि पिछले दिनों मध्य प्रदेश एवं बिहार में पत्रकारों की हत्या कर दी गई थी, कैंडल मार्च का आयोजन फारूकी तंजीम के संवाददाता रवि कुमार के नेतृत्व में की गई। यह कैंडल मार्च बाजार के चंडी मोड़ से चलकर प्रखंड मुख्यालय तक जाकर सम्पन्न हो गई। कार्यक्रम के अंत में सभी मौजूद पत्रकार एवं बुद्धिजीवियों के द्वारा घटना का निंदा करते हुए मृतक पत्रकार के आत्मा के शांति के लिये मौन रखा गया। आयोजक रवि कुमार ने बताया कि पत्रकारिता को लोकतंत्र

का चौथा स्तंभ माना गया है। बावजूद पत्रकारों पर निरंतर जानलेवा हमला व हत्याकी जा रही है। सच दिखाने में उन्हें आये दिन अधिकारियों को भी झेलना पड़ता है। अधिकारी उन्हें अपना विरोधी मानते हैं। पत्रकारों के मौखिक शिकायत पर भी पुलिस व अन्य अधिकारियों को संज्ञान लेना चाहिये ताकि कोई बड़ी घटना नहीं हो सके। पत्रकार का सामाजिक विकास में अहम रोल है। वजूद कुछ अपराधिक किस्म के लोग पत्रकारों को हत्या तक कर देते हैं। ऐसे में उनकी जितनी भी निंदा की जाय कम है। उन्होंने सरकार से पत्रकारों की सुरक्षा का मांग किया है। इस दौरान रवि कुमार, सुनील कुमार, सुमन शेखर, चन्द्र उदय कुमार, परशुराम सिंह, धर्मवीर कुमार, निरंजन कुमार गुड्डू, रोहित कुमार, अनिल कुमार सहित सैंकड़ो बुद्धिजीवी भी मौजूद थे।●

सात सौ किलो गांजा किया बरामद

● मुन्ना पाण्डेय

थाना क्षेत्र के एन.एच. 31 पर पेट्रोल पंप के पास से नार्कोटिक्स विभाग के अधिकारियों ने दस चक्का ट्रक में बने तहखाने से पचहतर पैकेट गाँजा बरामद किया है। बरामद गाँजा का वजन सात सौ किलो है। बाजार में इसका कीमत पैंतीस हजार आंकी गई है। पटना में लिप्त मध्य प्रदेश निवासी ट्रक ड्राइवर को भी हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। ट्रक का रजिस्ट्रेशन नं. MP 9 HF - 5513 है।

★ तहखाने में रखा था गांजा :- ट्रक के नीचे वाले जगह को तहखाने का रूप दे दी गई थी, तहखाना इतना मजबूत था कि उसे वेल्डर मशीन से काटकर खोला जा सका। उसी तहखाने में सभी पहचतर पैकेट गांजा को ठिकाना लगाया गया था। ताकि ऊपर से पता नहीं चल सके। अधिकारियों ने बताया कि गया, बाराचट्टी, फतुहा, बेगूसराय जगहों पर पहले से ही विभाग का नजर है। नालंदा में इस तरह की बड़ी खेप का पहला मामला है।

★ नॉर्थईस्ट से आ रहा था गांजा :- विभाग के जाँच अधिकारी ए.एन. तिवारी ने बताया कि यह गांजा लदा ट्रक नॉर्थईस्ट के त्रिपुरा-अगरतल्ला से चलकर पटना जा रही थी। गुप्त सूचना के आधार पर यह कार्यवाई की गई है। उन्होंने बताया कि दविश के चलते गांजा तस्कर हमेशा अलग-अलग रास्ते से तस्करी का कार्य करे हैं। ताकि विभाग को पता नहीं चल सके। उन्होंने यह भी बताया कि विभाग का हमेशा प्रयास रहता है कि बड़ा कंसाइनमेंट पकड़ा जा सके। ट्रक देखकर कोई नहीं बता सकता कि इस ट्रक में गांजा लोड है। तहखाने के ऊपर फटा व पूराना तिरपाल बिछा दिया गया था, देखने में लगे कि खाली ट्रक जा रहा है। जाँच अधिकारी ने बताया कि बिहार में शराबबन्दी के बाद गांजा का प्रयोग बढ़ गया है। नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो, पटना इकाई के द्वारा इस बड़ी खेप को पकड़कर कड़ी मैसेज देने का कार्य किया है। भविष्य में भी इस तरह का बड़ी खेप पकड़ने की और संभावना है।

★ तीन दिन से कर रहे थे पीछा :- खबर के बारे में उन्होंने बताया कि गाड़ी के बारे में हल्की सूचना ही मिली थी। जानकारी के नाम पर सिर्फ इंदौर की गाड़ी बताई गई थी। गांजा ले जा रही ट्रक के जांच के लिये लाइन होटल व अन्य जगहों पर रात-रात भर रतजगा किया गया तब जाकर गांजा भरी ट्रक पकड़ में आया। हालांकि तस्करों पर विभाग के अधिकारियों के द्वारा पैनी नजर रखी जा रही है। इस दौरान इंजेलिजेंस पदाधिकारी ए.के. रॉय, एन.के. झा, सिपाही मनोज यादव, के.एम. पाण्डे भी मौजूद थे। ●

चोरी के सामान के साथ कई मामले के तीन आरोपित गिरफ्तार

● मुन्ना पाण्डेय

दो दिन पूर्व थाना रोड में एक मोबाइल दुकान से चोरी गई समान के साथ कई मामले के तीन अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। शनिवार की रात बाजार के थाना रोड स्थित मोबाइल दुकान से चोरों ने दरवाजा तोड़कर प्रिंटर बैटरी इनवर्टर समेत हजारों के समान चुरा ले भागा था। जिसे पुलिस ने चोरी गई समान के साथ तीन चोरों को गिरफ्तार कर लिया है। थानाध्यक्ष संजय कुमार ने बताया कि थाना रोड के हंसराज मोबाइल दुकान से लगभग आधा दर्जन चोरों ने ताला तोड़कर समान की चोरी कर लिया था। सोमवार को छापेमारी कर पोरई गांव के सुरेश महतो के पुत्र सूरज कुमार के घर से एक बड़े बैटरी इनवर्टर प्रिंटर मोबाइल का समान एवं बनाने वाला उपकरण के साथ बरामद किया गया। सूरज से पूछताछ के दौरान छः चोर मिलकर घटना का अंजाम देने की बात स्वीकार किया है। जिसके आधार पर सबनुहुआडीह निवासी दिनेश सिंह के पुत्र धीरेन्द्र कुमार एवं नियमातपुर गांव के अवधेश यादव के पुत्र श्याम कुमार को गिरफ्तार किया गया है। चोरों ने हरनौत एवं चंडी बाजार में कई घटना का अंजाम दे चुका है। थानाध्यक्ष ने बताया कि तीन चोरों को गिरफ्तार किया गया। तीन लोगों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। सूरज कुमार के खिलाफ चोरी अपहरण एवं मारपीट के मामला दर्ज है। जबकि ध ीरेन्द्र कुमार के खिलाफ पूर्व से शराब बेचने चोरी एवं आर्म्स एक्ट् समेत पाँच मामले दर्ज हैं। छापेमारी में कामेश्वर सिंह रामानुज सिंह मदन प्रसाद अजय सिंह व अन्य पुलिस बल शामिल थे। ●

शौच के लिए शौचालय नहीं, कैसे होगा खुले में शौचमुक्त

● मुन्ना पाण्डेय

दीपक तले अंधेरा वाली कहावत इन दिनों चरितार्थ हो रही है। स्थानीय हरनौत रेलवे स्टेशन पर इन दिनों यात्रियों के लिये सुविधा के नाम पर व्यवस्था जीरो है। जिसमें पेयजल एवं शौचालय बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। इसके अलावा यात्रियों को बैठने के लिए कुर्सी एवं गर्मी से बचने के लिए यात्री शेड में कुर्सी भी नहीं है। जिससे यात्रीगण जमीन पर ही बैठकर भोजन करते हैं। पूरे स्टेशन परिसर में एक भी चापाकल पेयजल के लिये उपलब्ध नहीं है। जिससे यात्रियों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। स्थिति यह बनी हुई कि रेल स्टेशन स्टाफ भी बगल के गांव से पानी मगवाकर काम चला रहे हैं। रेल कारखाना बनने के बाद यात्रियों में अवधारणा बन गई थी कि अब स्टेशन के दिन बहुरेंगे। स्टेशन यात्री सुख सुविधा से लैश हो जाएगा, लेकिन हुआ उल्टा पूर्व राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के द्वारा हरनौत आगमन से लेकर आज तक स्थिति ज्यों की त्यों है। इतने दिनों बाद भी आज तक स्टेशन परिसर पर एक भी शौचालय नहीं बनाया जा सका। ऐसे में सरकार द्वारा खुले में शौच से मुक्त अवधारणा सफल नहीं होगा। शौचालय नहीं रहने से महिला यात्रियों को सबसे अधिक फजीहत का सामना करना पड़ता है।

एम.एस.टी. पास धारक बेलछी मध्य विद्यालय के शिक्षिका ने बताया कि स्टेशन पर यात्री सुविधा बिल्कुल नहीं है। यहाँ पानी एवं शौचालय नहीं रहने से महिलाओं को सबसे अधिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। सी. एम. के गृह प्रखंड होते हुए भी यहाँ की स्थिति सबसे खराब है। स्थानीय आर.पी.एस. कॉलेज में पदस्थापित एम.एस.टी. धारक श्याम सिंह ने बताया कि बगल में रेल डब्बा कारखाना बनने के बाद लगा था कि स्टेशन पर सुविधा बढ़ेगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं, जबकि यह कमाऊ स्टेशन है। गर्मी में पंखा की बात तो दूर है, स्टेशन पर न ही पानी के लिए चापाकल है और न ही बैठने के लिए बेंच है।

स्टेशन प्रबंधक सुजीत कुमार ने बताया कि एक वर्ष पूर्व से ही समरसेबल बोरिंग का मोटर जला हुआ है। स्टेशन परिसर में चार चापाकल में वर्तमान में एक भी चापाकल चालू नहीं है। स्टेशन का निर्माण होने के बाद से आज तक परिसर में एक भी शौचालय भी नहीं है। उन्होंने बताया कि डी.आर.एम. दानापुर के द्वारा स्टेशन परिसर के निरीक्षण के दौरान यात्री सुख सुविधा को लेकर जानकारी की गई थी। डी. आर.एम. के द्वारा कंसरनिंग अधिकारी को दो दिन के अंदर पेयजल उपलब्ध कराने को कहा गया था। बावजूद एक वर्ष बीत जाने के बाद भी पेयजल उपलब्ध नहीं हो सका है। उन्होंने बताया कि बैठने के बेंच टूट गया है। जिसके बारे में भी वरीय अधिकारी को जानकारी दी गई है। बावजूद अब तक कोई कार्यवाई नहीं की गई है।●

अपराध करने वाला अपराधी ही होता है

मुजफ्फरपुर पुलिस को विशेष छापेमारी अभियान द्वारा 222 लोगों को गिरफ्तार कर महत्वपूर्ण सफलता हाथ लगी है। अपराध एवं अपराधियों पर नकेल कसने वाले एस.एस.पी. विवेक कुमार ने लगतार कारवाई कर जिले में अमन, चैन एवं शांति का माहौल कायम कर रहे हैं वहीं अपराधियों में यह भी संदेश जा रहा है जब एस.एस.पी. विवेक कुमार यहां हैं, हमारी खैर नहीं। इनका मानना है कि अपराध बड़ा हो या छोटा, अपराध करने वाला अपराधी ही होता है और अपराधकर्मियों को तत्काल सजा दिलाने और नवीन चुनौतियों से लड़ने के लिए मुजफ्फरपुर पुलिस अपने को पूरी तरह तैयार कर ली है। शराब एवं शराब माफियाओं सहित सक्रिय असंगठित गिरोहों पर भी नकेल कसने में मुजफ्फरपुर पुलिस कोइ कसर नहीं छोड़ती। इसी क्रम में कल शाम विशेष छापेमारी दल द्वारा विभिन्न थानों से 222 लोगों को गिरफ्तारी की गई। जिसमें महत्वपूर्ण शामिल है, सीरियल नंबर में क्रमशः 22, 23 एवं 24 परमानेंट वारंटी है, जिसमें 2 लोग 20 वर्षों से फरारी थे। गिरफ्तार 77 अपराधियों को जेल भेजा जा चुका है। 111 अजमानतीय वारंट तथा 38 जमानतीय वारंट सहित 13 कुर्की वारंट का भी निष्पादन हुआ। विभिन्न गिरफ्तार अपराधियों के पास से 8.650 लीटर विदेशी शराब 2 मोटरसाइकिल एवं एक बालू लदा ट्रक की भी बरामदगी हुई है। **प्रस्तुति - श्रीधर पाण्डेय**

न्याय के लिए भटक रही महिला की दर्द भरी दास्तां

कहाँ हैं मुख्यमंत्री और कहाँ गये आपके दहेज विरोधी कानून

● मिथिलेश कुमार/मनीष कमलिया

मसला यह नही कि मेरा दर्द कितना है सवाल यह है कि तुझे परवाह कितनी है। किसी कवि कि युक्ति कितनी सटीक बैठती है मासूम पति की प्रताड़ना एवं जलालत झेलकर घर की दहलीज से बाहर कर दी गयी प्रगति भट्ट की जो अपने हक की लड़ाई के लिये खुद सवाल बन कर रह गयी है। प्रगति भट्ट के जीवन की प्रगति वैसे हालात में ठहर सी गयी है जहॉ मौजुदा स्थिति में अभिशप्त जीवन जीने को विवश है। किस्सा कितना भी अजीब है प्रगति भट्ट को शिकायत है अपने पति से, ससुराल वालों से बिहार सरकार के पुर्व मंत्री सह बिहार कॉग्रेंस के पुर्व अध्यक्ष मधेपुरा जिला अर्न्तगत आलम नगर निवासी विधाकर कवि से जो प्रगति के पति के सगे परिवार है साथ ही साथ इस समाज से सरकार से खास कर शीर्ष पर पहूँचें बिहार एवं केन्द्र की राजनीति करने वाले नेताओ सें जिसके पास एक बार नही अनेकों बार पति की प्रताड़ना और दहेज के लिये तंग करने की शिकायत करने के बाबजुद इसे किसी प्रकार की सहायता की बात तो दुर उल्टे प्रगति के भाई प्रकाश भट को अनुसूचित जाति अत्याचार कानून का अभियुक्त बना दिया। प्रकाश का कसूर सिर्फ इतना था कि अपनी बहन की स्थिति देख कर प्रगति के ससुराल वालों से अपनी बहन के हक और अधिकार की याचना पर साजिश के तहत अनुसूचित जाति की महिला से ससुरालवालों के द्वारा मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया जाता है। मै पाठको को ऐसे शख्सियत के बारे में बताना चाहूगॉ जिसे जानकर आप भी सोचने पर मजबुर हो जायेगें कि आखिर इस भौतिकवादी एवं पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के समाज में पल रहे सामाजिक कुरीतियों, भूख, गरीबी, बेरोजगारी, किसान मजदुरों और समाज के अंतिम पायदान पर जीवन बसर कर रहे परिवारों के हक के लिये लगातार पॉच दशक तक साम्राज्यवाद के खिलाफ अकेले लड़ाई लड़ने वाले नवादा जिले के सुरेश भट की बेटी की कहानी जो अपने देश और समाज के लिये समर्पित होकर अपने आपको को न्योछावर कर दिया। वही सुरेश भट की तीसरी पुत्री प्रगति भट के जीवन की कहानी। यह एक महिला के जीवन की दर्द भरी दास्तान और कहानी उसी की जुबानी आपलोग के समक्ष रखने का प्रयास कर रहा हूँ।

प्रगति भट्ट

☆ **क्या है मामला, प्रगति भट्ट कौन है** :– यहॉ बता देना जरूरी है कि प्रगति भट किसी मामूली इंसान की बेटी नही है यह नवादा जिले के अपने जमाने के प्रभावशाली

अपने पिता के लिये अभिमान है सुरेश भट्ट की बड़ी बेटी

हिमांशु कवि

प्रगति भट की बड़ी बहन असीमा भट जो नेशनल स्कुल ऑफ ड्रामा की छात्रा रह चुकी है। और अपने पिता को अपना आर्दश मानते हुये संघर्षो के दौर से गुजरते हुये अपने पिता की सेवा वैसी परस्थिति में अनवरत करते रही जो पिता अपने पिता होने का फर्ज पुरी तरह से निभा नही सके थे। अपने बच्चों की परवरिश और उसके शिक्षा की जिम्मेबारी उन्होनें अपने पिता होने की हैसियत से कभी नही उठाया था। पिता को देखने के लिये बर्षो ऑखे तरस जाती थी। लेकिन असीमा ने अपने अभिनय के साथ साथ अपने पिता की सेवा ओल्ड ऐज होम में करती रही। अपनी प्रतिभा के दम पर राज्य और देश का नाम कई टीवी सिरियल एवं रंगमंचो के माध्यम से रौशन करनेवाली असीमा भट अपने पिता की मृत्यू से विचलित हो गयी। पिता की खैर खबर हमेशा उसके जेहन में रहती अचानक उनके मौत की खबर उसे सुन्न कर दिया और जिस व्यक्ति ने अपने जीवन के अनेक बसंत देश और समाज के लिये न्योछावर कर दिया। उसके मृत्यु पर केवल उसकी बड़ी बेटी ही उसे पुत्र होने का दायित्व निभाते हुये मुखाग्नि दी। आज असीमा किसी के परिचय की मोहताज नही है। वह अपने पिता पर केन्द्रित एक पुस्तक **मन लागो मेरो यार फकीरी में** का प्रकाशन कर अपने पिता को फिर से जिन्दा करने का प्रयास किया है। इस पुस्तक का विमोचन भी हाल के दिनों मे ही पटना में कई बुद्विजीवीयों और साहित्यिक हस्तियों की उपस्थिति में किया गया है। लेकिन असीमा अपने बहन को न्याय दिलाने में भी कोई कोर कसर नही छोड़ रही है। अपनी बहन प्रतिभा भट्ट के साथ अपनी छोटी बहन को न्याय दिलाने में सफल होगी की नही यह तो गर्त में डुबी बात है। लेकिन इतना जरूर है कि असीमा अपने पिता के लिये अभिमान और अरमान दोनो बन चुकी है, जो अपने पिता की कृतियों को संयोग कर यादगार बनाना चाहती है।

व्यक्ति सुरेश भट की छोटी पुत्री है। सुरेश भट्ट के बारे में जिक्र करना इसलिये आवश्यक हो रहा है कि क्या यही हश्र होता है समाजसेवियों के परिवारवालों का उसको न्याय के लिये दर दर की ठोकरे खाना पड़ता है। सुरेश भट्ट वैसे व्यक्ति थे जो भौतिकवादी और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में अपना घर और परिवार के साथ अपने करोड़ो रूपयें के व्यापार को समाज के लिये कुर्बान कर देने वाले वैसे शख्स थे जिन्हे आज के वर्तमान राजनीति में शीर्ष पर पहूँचे बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालु प्रसाद यादव हो या वर्तमान मुख्यमंत्री नीतिश कुमार भी उन्हे अपना राजनीतिक गुरू मानते थे। भारत के पूर्व रक्षा मंत्री जार्ज फर्नाडीस भी इन्हें अपना गुरू मानते थे। इनके चाहने वाले सैकड़ों में नही हजारों में थे। स्वभाव से अक्खड़ पहनावे से फकीर लेकिन चेहरे पर अजीब सी चमक, समाज को बदलने की धुन सवार, सामाजिक बुराईयों को जड़ से हटाने की हनक ,गरीब गुरबों, रिक्शा चालकों ,फुटपाथी दुकानदारों, उत्पीड़न की शिकार महिला संगठनों , किसान मजुदरों के सच्चे हितैसी थे। 1977 के जयप्रकाश आन्दोलन में अपनी अदभुत क्षमता का प्रर्दशन करते हुये उन्होनें कई क्षेत्रों के नामचीन हस्तियों के साथ देश सेवा से जुड़े रहे। कम्युनिष्ट विचार धारा से जुड़कर कई आन्दोलन में भाग लिया और कई वर्ष जेल में रहे। जेपी आन्दोलन में अहम भुमिका निभाने वाले सुरेश भट्ट हमेशा साम्राज्यवाद और सामंतियो के खिलाफ लड़ाई लड़ते रहे। नवादा जिले के रजौली विधान सभा क्षेत्र से सीपीआई का प्रतिनिधित्व करने वाले कम्युनिष्ट नेता गणेश शंकर विधार्थी के साथ भी काम किया। आगे जाकर वैचारिक मतभेद के बाद उन्होनें अलग राह पकड़कर भुमिगत होकर समाज के लिये कार्य करने लगे। लेकिन जब वे रोग ग्रस्त हो गये तो उनका जीवन एकाकी हो गया। क्या अपने क्या पराये सभी बेगाने हो गये। दिल्ली के ओल्डऐज होम मे पॉच वर्षो तक रहकर अपना दर्द पीने वाले सुरेश भट्ट की मौत 2012 में हो गयी। नवादा जिले के मशहुर क्रान्तिकारी एवं साम्राज्यवाद के खिलाफ आजीवन लड़ाई लड़ने वाले सुरेश भट की पुत्री प्रगति है इसकी शादी मधेपुरा जिले के आलम नगर में रईस घरानें से तालुकात रखने वाले बिहार प्रदेश कॉग्रेंस के पुर्व अध्यक्ष सह पूर्व मंत्री विधाकर कवि एवं पुर्व एमएलसी विभुति कवि के परिवार सनत कवि के साथ हिन्दु रीति रिवाज के साथ 20 जनवरी 2007 को हुई थी।

शादी के छःमाह बाद से ही ससुरालवालों ने प्रगति से सहरसा में जमीन और मकान के ऐवज में अपने नैहर से पैसा मांगने का दबाब बनाना शुरू कर दिया। मांग पुरा नही किये जाने पर प्रगति के साथ तरह तरह की यातनायें ससुराल वालों ने देना प्रारंभ कर दिया यहॉ तक कि कई बार घर से निकाल भी दिया गया। घर से निकाले जाने के बाद प्रगति अपने नैहर नवादा में ही रहने लगी। प्रगति भट का भाई प्रकाश भट अपनी बहन की वेदना और अभिशप्त जीवन का दर्द नही सहा गया। वही अपनी बहन को उसका हक और अधिकार दिलाने के वास्ते 12 दिसम्बर 2017 को आलम नगर अपने बहनोंई सनत कवि के घर बहन को साथ लेकर गया। परन्तु ससुराल वालों ने प्रकाश की बहन को प्रगति से पिंड छुड़ाने के लिये प्रकाश पर ही घर में आया का काम करने वाली दलित महिला उर्मिला देवी पति ऋषिदेव से अनुसूचित जाति अत्याचार अधिनियिम के तहत केस दर्ज करवा दिया। जिसका थाना कांड संख्या 289/17 एवं भारतीय दंड संहिता की धारा 341, 823, 354, 504, 506, 3(1)5 है। उसके बाद प्रगति को घर से बाहर कर दिया। प्रगति ने हार नही मानी और आखिरकार पति के विरूद्व प्रताड़ित एवं दहेज मांगने का आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज करवाई। आलम

नगर थानाध्यक्ष सुनील कुमार ने सनत कवि को थाना बुलाकर समाज के लोगो के द्वारा सुलहनामा करा दिया। हालांकि पुलिस ने प्रगति के ससुराल वालों के विरूद्व दहेज अधिनियम के तहत मामला दर्ज कराया है जिसका थाना कांड संख्या 292/17 है जिसमें प्रगति के पति सनत कवि, जेठ शैलेश महाराज, संजय महाराज, गोतनी अरूणा देवी एवं नुतन देवी को नामजद अभियुक्त बनाकर खानापुर्ति कर दिया। सुलहनामा के बाद भी प्रगति को ससुराल वालों ने समाज के लोगों के द्वारा किये गये फैसले के विरूद्व उसके अधिकार से वंचित कर दिया। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद भी पुलिस के द्वारा अबतक कोई कारवाई नही की गयी है। प्रगति का कहना है कि हमारे पति और ससुराल वालों का क्षेत्र में खासा प्रभाव है जिसके कारण पुलिस पति का पक्ष ले रही है। मौजुदा हालात में पुलिस पति का पक्ष लेकर काम कर रही है। प्रगति ने बताया कि हमारे पति हमसे पिंड छुड़ाने के लिये हमारे उपर कई गंभीर आरोप लगाकर सीजीएम कोर्ट में तलाक का आवेदन भी दिनांक 7 जनवरी 2017 को दे चुके हैं। जब हमारे द्वारा केस किया गया तो सुलहनामा करने को तैयार हो गये लेकिन हमारे साथ कभी भी इनका व्यवहार ठीक नही रहा। प्रगति ने बताया कि अपने पैरवी और पैसा के बदौलत एक मामले में जमानत भी करा चुके हैं। सवाल उठता है कि 11 वर्षो से लगातार उत्पीड़न झेल रही प्रगति को इंसाफ कौन दिलायेगा। स्थानीय अखबारों में कई बार इस मामले को लेकर खबरे भी छप चुकी हैं लेकिन पति के उपर कोई फर्क नही पड़ता है।

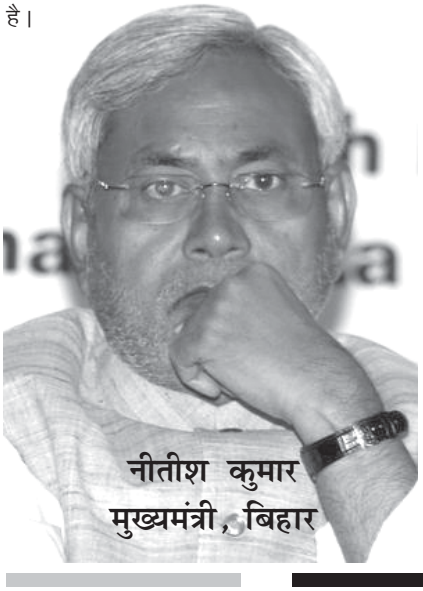
नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री, बिहार

सिद्धार्थ मोहन
एवं विभूति कवि

★ क्या सरकार प्रगति को उसके ससुराल वालों से न्याय दिला पायेगी?

:– बिहार सरकार हाल के दिनों में दहेजबंदी के विरूद्व बनाये गये कानून को और प्रभावी बनाया है और इसका पालन सख्ती से करने का आदेश दिया गया है, परन्तु बिहार में रोज दिन दहेज की बली बेदी पर बेटियॉ चढ़ रही है। दहेज दानवों के द्वारा बेटियों को उसके हक और अधिकार से वंचित कर अभिशप्त जीवन जीने को विवश कर रहा है। प्रगति भट्ट ने बिहार के आलाअधिकारियों समेत, महिला आयोग, मानवाधिकार आयोग, मुख्यमंत्री, पुलिस महानिदेशक, बिहार के साथ साथ मधेपुरा के सांसद सह जनाधिकार पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पप्पु यादव से भी न्याय की गुहार लगा चुकी हैं। प्रगति को न्याय मिल पायेगा यह बड़ा सवाल है। न्याय के साथ विकास का प्रतिनिधित्व करने वाले और दहेज प्रथा के खिलाफ जंग छेड़कर आमलोगो को जागरूक करने वाले माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का कानून क्या कर रही है?

ऐसे हालात में भारत के प्रधानमंत्री के द्वारा चलाये जा रहे बेटी बचाओं और बेटी पढ़ाओं अभियान का क्या हश्र होगा? क्या यह सफलीभुत हो सकेगी? कई सवाल जेहन में बन कर खड़े हो रहे हैं। पिता कैसे अपनी बेटी को मेरी बेटी मेरा अभिमान कह सकेंगें? बेटी के अरमानों के साथ घिनौना खेल खेलने वाले दहेज दानवों की टोली हर एक कदम पर प्रशासन और न्यायालय को पंगु बना रही है। क्या दहेज की बलि बेदी पर चढ़ने के बाद ही प्रगति को न्याय मिल सकेगा? क्या पैसा और पहूँच के बल पर शिकार होते रहेगी बेटियॉ? बेटी के अरमान और अस्तिव की रक्षा उसके पिता के लिये चुनौती बन जायेगी? बहुत सारे सवाल बनते जा रहे है। क्या सामाजिक कार्यकर्ता और देश के लिये कुछ करने की तमन्ना रखने वालों को यही हश्र होता है? प्रगति भट्ट अपने जीवन से हार चुकी हैं। वह उत्पीड़न झेलते झेलते उब चुकी हैं। उसके जीने की लालसा समाप्त हो चुकी है। उसकी सुनी ऑखें मुरझाये चेहरे और ढ़हते अरमान नासूर बन चुके हैं। ऐसी परस्थिति में उसके जीवन का सवेरा कब सूर्यास्त में तब्दील हो जायेगा कहना मुश्किल है। अगर उसकी मौत होती है तो उसके जिम्मेवार उसके ससुराल वालों में हिमांशु कवि, सिर्दाथ मोहन तथा विभुति कवि जो प्रगति के पति को सरंक्षण दे रहे है। इसके साथ प्रशासन के अधिकारी जो उसके ससुराल वालों को सह दे रहे हैं? जिसमें वहॉ के जिलाधिकारी, एसपी, एसडीपीओ, थानाध्यक्ष, समाज और सरकार भी जिम्मेवार होगें। बहरहाल समाज एवं सरकार को प्रगति को न्याय के साथ इसके जैसे हजारों प्रगति जो दहेज की बली बेदी पर चढ़ने के लिये तैयार है, वैसे मासूमों की रक्षा दिलाने के लिये समाज को आगे आना होगा, तभी कह सकेगें मेरी बेटी, मेरा अभिमान और बेटी बचाओं और बेटी पढाओं। ●

गोंदापुर में प्रतिमा तोड़ने के बाद उग्र हुए लोग

जिला प्रशासन के सहयोग से साम्प्रदायिकता की आग में जलने से बचा नवादा

● अरविन्द मिश्र

मजहब नहीं सीखता,आपस मे बैर रखना, हिन्दु, मुस्लिम, सिख इसाई आपस में हैं भाई–भाई के स्नेहहील नारें हमारे मन के मरूस्थल के मरूधान की छटायें नवादा मे नहीं छिटका सकी। सामाजिक सौहार्द के सुमन के कुचलने वाले असामाजिक तत्व व अमन के दुश्मनों ने सुफी संतो की घरती महावीर व बुद्ध की धरती, लोक नायक जयप्रकाश व सहजानंद की पावन कर्मस्थली दानवीर कर्ण की मोती, कन्हाईलाल साहू, अंतराष्ट्रीय स्तर के महान फुटवाउलर मेवालाल की पावन धरती को मजहबी सम्प्रदायिकता के आग में झोकने का प्रयास किया। लेकिन नवादा के कर्मठ, उर्जावान जिलाप्रशासन के रहनुमाओ, नवादा जिले शांतिप्रिय जनता, मीडिया बंधु ने कष्टो के, खड़गधार पर पलते हुए शंकर की भांति हलाहल बिष पीते हुए हर चोट को खाते हुए असंख्यक निर्दोषो, निरपराधो को नवादा के धरोहरो को जानमाल की रक्षा कर आतातायियो के मनसूबों को चकनाचुर कर दिया। आज बुद्ध, महावीर ,सुफी संतो की करूणामयी पावन धरती सम्प्रदायिकता के दावानल को बचाने के अभिनव प्रयास जिला प्रशासन के रहनुमाओ के माध्यम से हुआ। इसके लिए जिला–प्रशासन के साथ ही नवादा के न्यायप्रिय भी बहुत ही बधाई के पात्र है।

अगर अग्निपथ पर दृढ इरादे के साथ जिला प्रशासन के कर्मठ पदाधिकारीगण थोड़ा भी बिलम्ब करते तो सम्प्रदायिकता के रक्तबीज नवादा के पावन धरती को इंसानियत को सामाजिक सदभाव को, धरोहर को छिरोच्देन करने मे सफल हो जाते।

31 मार्च 2018 नवादावासियों के लिए जिला प्रशासन के लिए मनहूस दिवस साबित हुआ। जब आतातायियो ने बलवाईयो और शिरकापरस्त तत्व और भ्रष्ट राजनेताओ ने नवादा को अमन, शांति, सदभाव और भाईचारे व विकास को तहस नहस करने के उदेश्य से नवादा के गोंदापुर मे स्थित बजरंगवली की प्रतिमा को विखंडित कर दिया। फिर क्या सोशल मीडिया पर खबर आने के बाद गोंदापूर बाईपास चौक के पास जबरदस्त रोड़ेबाजी हुई। वाहनो को निशाना बनाया। दो सम्प्रदाय प्रतिशोध की ज्वाला मे जलने लगी। हालत बेकाबू होता चला गया। हिंसा, आगजनी, झड़प चारों ओर अराजकता की मौहाल बनते देख जिला प्रशासन सक्रिय होकर तुरंत गोंदापुर वाई पास चौक पर पहुचें। नवादा के अमन, शांति सुरक्षा के लिए डीएम कौशल कुमार, पुलिस अधिक्षक विकाश बर्मन और नवादा जिले में दृढ़ इरादे के धनी, मिलनसार एसएसपी अभियान (नक्सल) आलोक कुमार, सदर डीएसपी विजय कुमार झा, अनुमंडल पदाधिकारी राजेश कुमार सहित आए हुए अधिकारीगण सभी लोगो ने शांति,सदभाव बनाये रखने के लिए नवादावासियों से करते रहें। किन्तु आतातईयो को अपील

का कोई असर नहीं हुआ। लाचारीवश पुलिस को कई राउण्ड हवाई फायरिंग करनी पड़ी। आनन–फानन में इंटरनेट सेवा बंद कर दिया गया। जिले मे विधि व्यवस्था बनाये रखने के लिए शहर पुलिस छाबनी मे तब्दील करना पड़ा। आईजी रिजर्व पुलिस बल, सीआरपीएफ, एसएसबी, बीएमपी, एसटीएफ, बीएमपी के जवानों की आधा दर्जन से अधिक कम्पनियो को शहर के चप्पे चप्पे तैनात करना पड़ा, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड पर भी मातमी सन्नाटा पसरा रहा। शहर मे कर्फ्यू जैसी नजारा था। जिले के सभी थानो में हाई अलर्ट कर दिया गया। आतातायियो ने पत्रकारो को भी नही बख्शा, समाचार संकलन करने गये पत्रकार और छायाकार के कैमरे को तोड़ फोड दिया। वही मगध की पुकार सप्ताहिक समाचार पत्र की सम्पादक राजकुमार की वाहन को क्षतिग्रस्त कर दिया। घटना की जानकारी मिलती ही मगध रेंज के कमिश्नर जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, डीआईजी विनय कुमार ने गोंदापुर स्थित घटनास्थल का जायजा लिया। डीएम एसपी समेत सभी पदाधिकारियो को शांति व्यवस्था के साथ आमजनता के सुरक्षा के लिए कई आवश्यक दिशा निर्देश दिया और स्वयं गश्त कर हालत की समीक्षा करते रहें। किसी तरह की कोई अप्रिय घटना नहीं घटे। डीएम, एसपी ने जिले के 25 संवेदनशील दंडाधिकारियो, पुलिस पदाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की। इसके अलावे चार गश्ती दल मे आठ दंडाधिकारियो की प्रतिनियुक्ति की गयी। इस दौरान 24 घंटे पेट्रोलिंग करते रहे। इसके अलावे समाहरणालय कक्ष मे नियंत्रण कक्ष की भी स्थापना की गयी। जिसके प्रभारी डीपीआरओ परमिल कुमार, वरीय उपसमाहर्ता मंजूषा चंद्रा को दायित्व सौंपा गया। नियंत्रण कक्ष मे दंगा विरोधी बल, बाटरकैनन, ब्रजवाहन, अग्निशामक दस्ता, एम्बुलेंस आदि की भी व्यवस्था की गयी। विधि व्यवस्था के

प्रभार मे डीडीसी एसएम कैसर सुल्तान, डीएसपी मुख्यालय अशोक कुमार दास को बनाया गया। प्रमंडलीय आयुक्त जितेन्द्र श्रीवास्तव, डीआईजी विनय कुमार स्वयं ही घटनाक्रम का समीक्षा में लगे रहे। साथ ही उन्होंने कहा है कि उपद्रवी को चिन्हीत कर कार्रवाई की जायेगी। बंद दूकानों को खुलवाने का प्रयास जारी रहा। आखिर कठोर इरादे, शख्ती अभियान और जनता के सकरात्मक प्रयास से छिटपुट घटनाओं को छोडकर नवादा एक फिर सम्प्रदायकता के आग से जलने से बच गया। बाजार में पूर्व के तरह आवागमन शुरू हुआ। दूकानें भी खूलना शुरू हो गया। वही जबांज और सिंघम नामो से चर्चित एएसपी अभियान आलोक कुमार से केवल सच के पत्रकारों ने नवादा के इस घटनाक्रम के बारें में मुस्कुराते हुए कहा–मिट गयी दुश्मनों की ऐ दुश्मनी, चोट खाके भी हम मूस्कुराते रहे, उनकी जिद है की काबा को ढाते रहे, मेरी जिद है कि काबा को बनाते रहे। वही नवादा में नवादा सासंद भारत सरकार में लधू एवं सूक्ष्म राज्य मंत्री गिरिराज मंत्री बिहार विधान सभा के सचेतक सह हिसूआ विधान सभा के कर्मठ विद्यायक अनिल सिंह, समाजसेवी राजीव सिन्हा, अधिवक्ता सह पूर्व लोकसभा प्रत्यार्शी राजेन्द्र सिंह, मो0 कमरान, आरपी साह, जैकी हैदर, अफसर नबाब उर्फ छोटा लालू, सुमन्त मिश्र सरपंच, पुष्पा देवी, राजद जिलाध्यक्ष महेन्द्र यादव, व्यवसायिक प्रकोष्ठ अध्यक्ष संदीप कुमार चुन्नू, राजद नेता अनिल सिंह, ब्रजेश राय सहित सैकडो़ समाजसेवी, राजनेता, जनप्रतिनिधि, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया के पत्रकारों ने भी नवादा के जनता से अमन शांति, सद्भाव, भाईचारे बनाये रखने के लिए लगातार प्रयास करते रहे। वही साहस व विद्वता के धनी नवादा डीएसपी विजय कुमार झा, पालीगंज डीएसपी मनोज कुमार पांडेय, डीएसपी संजय पांडेय, पकरीबरवां डीएसपी श्रीप्रकाश सिह, रजौली डीएसपी उपेन्द्र यादव, नवादा बीडीओ प्रभाकर सिह का भी काफी सराहणीय प्रयास विधि व्यवस्था को

लेकर रहा। लेकिन बार बार प्रश्न कहता है कि आखिर कौन है, जो सम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर नवादा के विकास को सदभाव को बाधित कर रहा है? ●

मच्छरों से निजात पाने का एकमात्र तरीका है सफाई : सिविल सर्जन

भोजपुर जिले के आरा स्थित सदर अस्पताल के सिविल सर्जन डा. रास बिहारी सिंह ने एक साक्षात्कार में बताया कि मच्छरों को भगाने तथा उनके प्रजनन को कम करने का एक मात्र साधन एवं तरीका है स्वच्छता, क्योंकि स्वच्छता एवं सफाई के बिना ये समस्या लगातार बढ़ रही है। पहले तो कुएँ, जलाशयों एवं नाली-गलियों में डी.डी.टी. का छिड़काव स्वास्थ्य विभाग करती थी, किन्तु अब सिर्फ वैसे ही जगहों पर इसका छिड़काव किया जाता है, जहाँ कालाजार हो। राज्य स्वास्थ्य समिति, डी.डी.टी. का छिड़काव सभी जगह नहीं करवाते तो ऐसे में हम अपने आस-पास के जगहों को साफ रखकर मच्छरों के आतंक को कम कर सकते हैं। इन्हीं मुद्दों पर केवल सच पत्रिका के विशेष प्रतिनिधि मणिभूषण तिवारी ने साक्षात्कार किया। प्रस्तुत है इसके प्रमुख अंश :-

★ आप इस जिले में सिविल सर्जन के पद पर कार्यरत हैं, यहाँ पर मच्छरों की बढ़ती जनसंख्या एवं लोगों पर होने वाले प्रभाव के बारे में बतायें?

मच्छरों की जनसंख्या तो दिनों-दिन बढ़ते जा रही है। मगर इसके रोकथाम तभी संभव है, जब सभी लोग स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता को अपनाएं एवं अपने आस-पास के इलाकों में साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। कुड़ा-कर्कट कुड़ेदान में ही डाले। वैसे मैं आपको जानकारी के लिए बता दूँ कि नगर निगम फौगिंग सिस्टम के जरिए मच्छरों को मारने का काम किया करती है, शहरों में मगर वो भी नियमित नहीं होता। अगर नियमित रूप से होता तो ज्यादा बेहतर होता। गंदगी सब जगह है, इसपर ध्यान देने की आवश्यकता है।

★ क्या फौगिंग सिस्टम मच्छर मारने के लिए पूरी तरह सक्षम यंत्र प्रणाली है?

नहीं एक दो दिन तक इसका असर रहता है, किन्तु इसका भी नियमित छिड़काव हो तब न। सबसे तो जरूरी है कि गंदगी के स्रोत को कम करें। रही बात डी.डी.टी. के छिड़काव की तो ये व्यवस्था सिर्फ उसी गाँव में किया जाता है, जिस गाँव में कालाजार का प्रकोप हो।

★ क्या राज्य स्वास्थ्य समिति की ओर से कोई ऐसा पहल हुआ है, लोगों को जागरूक करने के लिए कोई सेमिनार अथवा मिटिंग-सिटिंग?

ऐसे तो सभी जगह स्वच्छता अभियान पूरे भारत में चल रहा है, परन्तु राज्य स्वास्थ्य समिति सिर्फ कालाजार से पीड़ित स्थानों को टारगेट करती है, मलेरिया के लिए कोई छिड़काव नहीं किया जाता है। इसके लिए जिला कालाजार पदाधिकारी सक्षम हैं।

★ क्या आपने कभी महसुस किया है कि जो भी ब्लॉक या अनुमण्डल स्तर के अस्पताल है, वहाँ जीवन रक्षक प्रणाली होनी चाहिए या नहीं?

सभी जीवन रक्षक दवाईयाँ एवं प्रणाली नहीं रहेगी तो ऐसे में डॉक्टर क्या करेंगे। अगर पहले के अपेक्षा आज बहुत कुछ बदला है। पहले मरीजों को भोजन नहीं मिलता था वो मिलने लगा। प्रतिदिन बेड या चादर बदला जाता है। शुद्ध पानी की व्यवस्था की गई है, जो कि 2005 से पहले नहीं था।

★ क्या आपने कभी ये महसुस किया है कि सदर अस्पताल जो 150 मानक से नवाजा गया अस्पताल है और यहाँ पर सिरियस रोगियों को नहीं रखकर पी.एम.सी.एच. भेज दिया जाता है और वह मरीज रास्ते

में ही दम दोड़ दंते हैं?

पी.एम.सी.एच. वाली व्यवस्था तो यहाँ नहीं है, मगर फिर भी अगर ज्यादा सिरियस रोगी को यहाँ रखकर परिजनों के हंगामे का शिकार कभी ना कभी कोई ना कोई डॉक्टर या नर्स को होना पड़ता है। फिर भी ऐसा नहीं है कि सभी रोगियों को पी.एम.सी.एच. ही भेज दिया जाता है, मगर मान लिजिए किसी को गोली लगा हो और ब्रेन या रीढ़ की हड्डी को पार कर गया हो या फंस गया हो ऐसे कंडीशन में यहाँ पर क्या व्यवस्था है। हाँ अगर हाथ पैर में लगी हो अंतरी में लगी हो तो उसका तो यहाँ ऑपरेशन हो जाता है, किन्तु ज्यादा सिरियस होने पर तो पी.एम.सी. एच. भेजना जरूरी हो जाता है।

★ क्या सभी पी.एच.सी. या आरा सदर अस्पताल में कुत्ता, बंदर, सियार और साँप काटने से बचाव के टिके सभी जगह उपलब्ध है?

2-3 महीने से बहुत दिक्कत थी हमलोग ऑर्डर करने में कमी नहीं करते हैं, परन्तु सप्लाई में कमी थी जो कि पिछले एक सप्ताह से उपलब्ध है और मुझे लगता है कि आने वाले दिनों में इसकी कमी नहीं होगी। माँगते थे दस हजार तो 5 हजार इंजेक्शन ही मिलता था या फिर 7-8 हजार ही मिलता था।

★ क्या आप मानते हैं कि यहाँ के डॉक्टर ज्यादातर बाहर की दवाईयाँ लिखते हैं?

मैं मानता हूँ और ये गलत है कोई-कोई डॉक्टर ऐसा करते हैं। मगर मैं आपका बता दूँ कि जरूरी दवाईयों में 30 से 85% तक यहाँ उपलब्ध रहता है। किन्तु कुछ मरीज जल्दी ठीक होने के लिए बढ़िया दवाई के चक्कर में शहर चले जाते हैं।

★ यहाँ पर अल्ट्रासाउण्ड और एक्सरे का पैसा क्यों लगता है?

पिछले कुछ सालों से राज्य स्वास्थ्य समिति ने एक्सरे-अल्ट्रासाउण्ड वाले को पैसा नहीं दे रही थी, तो ऐसे में हमने राज्य स्वास्थ्य समिति को कई पत्र लिखा, इस सम्बन्ध में कि अल्ट्रासाउण्ड एवं एक्सरे के पैसे का बकाये बिल का भुगतान किया जाए, परन्तु कोई जवाब नहीं मिला तो मजबुरन हम लोगों ने ये निर्णय लिया कि कुछ पैसा लेकर मरीजों का अल्ट्रासाउण्ड और एक्सरे किया जाए। बहुत सारे पुलिस केस आते हैं, किसी को गोली लगी है और बाहर जाएगा जाँच करवाने अगर गलत रिपोर्ट मिल गया तो हम फंस जायेंगे हमारा अस्पताल बदनाम हो जाएगा। फलस्वरूप ये निर्णय लेना पड़ा। फरवरी-मार्च 2018 में इनके बकाये बिल का भुगतान राज्य स्वास्थ्य समिति ने 70 से 75% तक कर दिया है और अब भी अगर वो मरीजों से पैसा लेते हैं तो आप हमें बतायें उसपर कार्रवाई होगी।

★ मीडिया के क्रिया-कलापों के बारे में आपकी क्या राय है?

मीडिया के बारे में ज्यादा कुछ तो नहीं परन्तु इतना जरूर कहूँगा कि कुछ गलतियाँ हममें भी है और ये अस्पताल आपका है, इसके विधि -व्यवस्था के बारे में आप हमें बतायें उस पर ध्यान दिया जाएगा।

★ क्या आपको लगता है कि सभी पी.एच.सी. में जितना होना चाहिए डॉक्टर उपलब्ध है या फिर कमी है। अगर कमी है, तो क्यों?

प्रखण्डों में डॉक्टर की कमी है, क्योंकि 1990 के बाद बहाली हुई ही नहीं। मगर सदर अस्पताल में डॉक्टरों की कमी नहीं है। यहाँ जितने डॉक्टर होने चाहिए उतने हैं।

झोपड़ी वाले आज भी कोसो दूर है इंदिरा आवास से : अनीता देवी

● **मणिभूषण तिवारी**

भोजपुर जिले के चरपोखरी प्रखण्ड के उप प्रमुख अनीता देवी ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कही है कि इन्दिरा आवास योजना में आज भी सरकारी मुलाजिमों के सुस्त रवैये के कारण झोपड़ी में रहने को मजबूर है लोग। उनका कहना है कि इस सम्बन्ध में मैंने उप विकास आयुक्त को भी पत्र लिख कर अवगत करा चुकी हूँ। बावजूद इसके कि झोपड़ी वालों को इन्दिरा आवास योजना का लाभ मिलता सरकारी बाबू की मेहरवानी उन पक्के मकान वालों पर आज भी बरसती है। सम्बन्ध में जब बी.डी.ओ. साहब से जानना चाही कि ऐसा क्यों हो रहा है, तो उन्होंने महिला हो महिला की तरह रहो। ऐसा सम्बोधन करके मेरी आवाज को दबाने का काम किये। क्या ये पढ़े लिखे लोगों के तथा सरकारी कुर्सी पर बैठे लोगों को शोभा देती है। ऐसे में नारी सशक्तिकरण और समान दर्जे का क्या मतलब निकलता है। प्रखण्ड में अफसरशाही एवं दलाली थमने का नाम नहीं ले रही क्यो, यही सुशासन है। आपको यह जान कर हैरानी होगी कि विगत पाँच वर्षों से कन्या विवाह योजना की राशि का वितरण इस प्रखण्ड में नहीं हुआ और इस पर किसी ने भी आवाज उठाने का काम नहीं किया। तो मैंने फैसला किया कि जनता के साथ ये अन्याय नहीं होने दूँगी। समय आने पर धरना और प्रदर्शन भी किया जाएगा। प्रखण्ड में उन सभी कार्यों में शिथिलता बरती जा रही है, जो लोक कल्याणकारी एवं जनतापोषक है। अब ऐसे पदाधिकारी और कर्मचारी से जनता क्या उम्मीद रखेगी। जब जनप्रतिनिधि को ही अपने ही प्रखण्ड में जनसरोकार से जुड़े मामले को लेकर प्रताड़ित होना पड़े तो ऐसे में सुशासन तो एकमात्र जुमला ही होगा।

प्रखण्ड उपप्रमुख के प्रतिनिधि सत्यनारायण साह उर्फ बगेदन साह ने बताया कि जिनका घर बन गया है, उन्हें भी दोबारा इन्दिरा आवास योजना का लाभ दिया गया है। जबकि आये दिन कोई ना कोई गरीब-लाचार एवं वृद्ध व्यक्ति प्रखण्ड मुख्यालय का चक्कर लगाते नजर आते हैं, जिनका की कच्चा मकान है और उनको इस योजना का लाभ नहीं मिलता। इन्दिरा आवास योजना में इस प्रखण्ड में काफी धांधली किया गया है। ये अफसर गरीबों को उनका सही लाभ नहीं दे सकते। इसका उदाहरण वृद्धापेंशन, विकलांगता पेंशन, एवं विधवा पेंशन की राशि के लिए अनेकों लोग भटकते-भटकते भगवान को प्यारे हो गये। अब उनके परिजन मृत्यु सहायता के लिए भटक रहे हैं। पता नहीं क्या होगा इस देश का पता नहीं क्यों सरकारी योजनाएँ आती है। सिर्फ लोगों को उलझाने के लिए तो इन योजनाओं को सरकार को चाहिए कि वो बंद कर दें। आखिर जब जरूरतमंद को इन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल सकता तो गैरजरूरतमंद को इसका लाभ पहुँचाकर सरकार क्या साबित करना चाहती है। क्या इस जुमलेबाजी को सरकार बढ़ावा देना चाहती या फिर गरीब लाचार लोगों के नाम पर आवंटित राशि को अमीर लोगों में बाँट कर वोट बैंक बनाना चाहती है। आने वाले समय में अगर ऐसा होता रहा तो पब्लिक चुप नहीं रहेगी। हम जनप्रतिनिधि इसके लिए आंदोलन करेंगे। ●

दबंग कर्मचारियों की बहुलता आई.सी.डी.एस. बक्सर में

● बिन्ध्याचल सिंह

समेकित बाल विकास परियोजना समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित होती है। जिसमें स्कूली पूर्व शिक्षा दी जाती है जिसमें आधे से अधिक केन्द्र कागज पर संचालित होती है कागज पर संचालित होने वाले केन्द्र का मुख्य कारण है कि किसी प्रखण्ड की समेकित बाल विकास परियोजना पदाधिकारी दबंग है तो किसी केन्द्र की सेविका तो किसी प्रखण्ड के प्रधान लिपिक दबंग है तो आइये, जाने किस–किस प्रखण्ड में कौन कौन दबंग। प्रथम–बाबा ब्रमेश्वर नाथ की नगरी ब्रहम्मपुर में पदस्थापित बाल विकास परियोजना पदाधिकारी श्रीमति रत्ना कुमारी जो सूचना का अधिकार की धज्जियॉ उडाती है। सी0डी0पी0ओ0 ब्रहम्पुर के कार्यालय में मिलना चाहेगें तो कार्यालय कर्मचारियो से जबाव मिलेगा कि पदाधिकारी क्षेत्र में गई है। जबकि सी0 डी0 पी0 ओ0 कार्यालय में पदस्थापित प्रधान लिपिक जिनसे पत्रकार बन्धु डरते है जैसा कि प्रखण्ड कार्यालय के कर्मचारियो ने केवल सच प्रतिनिधि को जानकारी दी। इतना ही नही प्रधान लिपिक माह में पॉच–छः दिन कार्यालय में रहते हैं। अगर कार्यालय से कॉल किया जाता है कि क्या आप कार्यालय आ रहे है तो जबाव देते है 'हॉ' और कुछ ही समय के बाद कॉल करके कहते है कि गाडी विलम्ब से है मैं नही आ सकता हुॅ और लौटकर घर जा रहा हूं संबंधित बात के लिये किसी अन्य व्यक्तियो के मोईबाल का प्रयोग करते हैं ताकि दुबारा उस नम्बर से बात न हो सके, साथ ही प्रखण्ड में संचालित न होने वाले केन्द्र का भी वाउचर बनाते रहते है जो जॉच का विषय है। दूसरा– सिमरी प्रखण्ड में स्थित आंगनबाडी केन्द्र की संख्या–15 की सेविका श्रीमति दुर्गावती देवी जो समाजसेवी को मोबाईल से भला–बुरा कहती हुई गाली देती है। जिसका प्रमाण समाजसेवी के मोबाईल से प्राप्त की जा सकती है। तीसरा–बक्सर प्रखण्ड की समेकित बाल विकास परियोजना पदाधिकारी श्रीमति गुंजन कुमारी जिसने सुश्री पुष्पा रानी की दबंगतापूर्ण रास्ते पर चल रही है जिसका प्रमाण ग्रम–अर्जुनपुर की सेविका संजु राय पर किये जा रहे व्यवहार व आई0 सी0 डी0 एस0 की तार–तार होती नियम से प्राप्त कर सकतें है। सी0 डी0 पी0 ओ0 ''बक्सर'' के आदेश से बिनोद कुमार विगत 12 वर्षो से प्रखण्ड के सेविकाओ से अवैध राशि वसूली कर रहे है जबकि विभाग में उनका कोई अस्तित्व नही है अगर है तो एक दलाल के रूप; जो अवैध है। अप्रैल के तृतीय सप्ताह में केवल सच प्रतिनिधि को जानकारी हुई कि सी0डी0पी0ओ0 बक्सर के जुबान पर लगाम ही नही है। चौथा– जैसा की जानकारी सूत्रो के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार सी0 डी0 पी0 ओ0''राजपुर'' अपने अधिकार व कर्तब्य की घज्जियॉ उडाती हुई एक सहायिका को/जो पंचायती चुनाव हार चुकी है/सेवा में पुनः रख चुकी है' जिसका केन्द्र संख्या–35 है। जो जॉच का विषय है। पॉचवा– सी0डी0पी0ओ0 ''इटाढी'' जिन्होंने सेविका के उपर डंडे से वार करती है।जिनके व्यवहार से सभी कर्मचारी त्रस्त है। पॉचवा– आपको बताते चले कि आई0 सी0 डी0 एस0''बक्सर'' में एक अपवाद पदाधिकारी समेंकित बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पदस्थापित है जिनका नाम बोलने में आई0सी0डी0एस0 के कर्मचारी बहुत ही आदर्श सूचक शब्द का प्रयोग करते हैं चाहे कर्मचारी जिले के किसी भी प्रखण्ड में पदस्थापित हों। प्रिय पाठकगण मैं जानकारी देना चाहता हुॅ कि उस पदाधिकारी का नाम है–डॉ0 चॉदनी। जिन्होंने अपनी सेवा समेकित बाल विकास परियोजना पदाधिकारी ''चक्की'' के रूप में सेवा कर रही हैं। जैसा कि जिले के कर्मचारी केवल सच प्रतिनिधी को जानकारी उपलब्ध करा चुके हैं कि प्रखण्ड के सेविकाओं के सामने मजबुरियॉ जो भी हो हर हाल में सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनओ का लाभ बच्चो व लाभावुको तक पहुॅचाना होता है। डॉ0 चॉदनी की नाम सुनते ही सेविकाओ को यकीन हो जाता है कि कलियुग में ईमानदारी अभी जीवित है।●

ज्वलंत मुद्दा आरक्षण : डॉ. सैनी

● बिन्ध्याचल सिंह

आजकल पुरे भारत में एससी/एसटी आरक्षण मुद्दा देश की सबसे बडी समस्या है जैसा कि मीडिया जगत में छाया हुआ है परन्तु आरक्षण खत्म करना संविधान का उल्लघंन ही नही अपितु बाबा भीमराव अम्बेंदकर को अपमान करना है इस बात की जानकारी सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के बिहार प्रदेश प्रभारी डॉक्टर एस0 के0 सैनी ने केवल सच प्रतिनिधि को अपने आवास पर दी। श्री सैनी ने आरक्षण के बारे में जानकारी दी की आरक्षण केवल प्रतियोगिता में अंक की होती न कि किसी प्रशिक्षण या कार्यालय के कार्यो में। कुछ चन्द लोगो ने/जो उच्च पद पर आसीन है।संविधान को बदलने का काम करतें आ रहे है। बाबा भीमराव अम्बेदकर ने संविधान का निर्माण धरातल की सोच के साथ निर्माण किये है, परन्तु आज सुखी सम्पत्र लोग कमरे में बैठे–बैठे नियम कानून की बात करते है। आरक्षण खत्म करना दलित परिवार को रसातल में ले जाने वाली बात होगी। उन्होंने डुमरॉव प्रखण्ड के अरियॉव गॉव के दलित परिवार की दयनीय स्थिति का हवाला देते हुये केवल सच प्रतिनिधी को जानकारी दी कि दलित परिवार को दो जुन की रोटी नसीब नही हो रही है जबकि सरकार द्वारा चलाई जानेवाली योजनाओ का लाभ उन्ही चन्द लोगो के परिवार को लाभ मिलता है क्योकि प्रखण्ड/अनुमण्डल/जिला स्तर के पदाधिकारी भी उन्ही के परिवार है। डॉ0 सैनी अफसोस भरा शब्द में बोले कि जब आरक्षण है तो अरियॉव गॉव की दलित परिवार खाने बिना मर रही है तो अगर आरक्षण को हटा दिया जाय तो क्या स्थिति दलित परिवार को होगी। अर्थात दुसरे शब्द मेंः– आरक्षण हटाना दलित परिवार को गुलाम बना कर रखने की सोच है। सरकार की नीति और नियत बनी रही तो वो दिन दुर नही जब एससी/एसटी हटाने के बाद ओ0 बी0 सी0 आरक्षण पर तलवार लटका दी जाएगी। ●

दोषी कौन : व्यवसायी या सरकार

● **बिन्ध्याचल सिंह**

जिले के चर्चित बाजारो में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका बिहिया बाजार बिहार सरकार की राजस्व अर्जित करने में अहम स्थान रखता है जहॉ रोजमर्रा के सामान से लेकर कृषि यंत्र की बडे पैमाने पर निर्माण होता है जिसमें बिनोद इंजिरियरिग का नाम चर्चित है। जिन्हें कृषि विभाग बिहार सरकार से कई सम्मान पत्र व प्रशस्ति पत्र प्राप्त हो चुके हैं जो जॉच का विषय है। इतना ही नही बिहिया बाजार में बिनोद इंजिरियरिंग व किसान दालमोट दर्जनो श्रमिको के शुभ–चिंतक भी हैं। अर्थात दुसरे शब्द में:– किसान दालमोट और इंजिरियरिग वर्क्स शॉप में दर्जनों श्रमिको के परिवारो का दाल–रोटी चलता है। आपको बताते चलें कि केवल सच प्रतिनिधि 17/04/2018 को किसान दालमोट के मालिक से कुछ जानकारी प्राप्त कर रहे थे कि एक बाल श्रमिक किसान दालमोट कार्यालय पर दस्तक दिया जहॉ श्री गोपाल जी बैठे थे। प्रतिनिधि के बातो का विराम देते हुए मालिक ने बोला क्या बात है छोटु? बाल श्रमिक ने बोलना प्रारम्भ किया–मालिक मेंरा घर दोघरा है मैं आपके यहॉ काम के लिये आया हुॅ क्योकि मुझे नौवी कक्षा में नामांकन कराना है। मालिक ने बोले–मुझसे ले लो। बाल श्रमिक ने जबाब दिया–मालिक मैं आपसे सहयोग लेने नही आया हुॅ मैं आपके यहॉ काम करने आया हुॅ क्योकि मेंरे पिता जी दुनिया छोड चुके हैं। मॉ बिमार रहती है। मुझे पढाई के साथ दो जून रोटी की व्यवस्था करनी है। अतः आपके यहां कार्य की इच्छा लेकर आया हुॅ सहयोग नही? इतना सुनते ही बोले– बैठो। फिर प्रतिनिधि से बात करने लगे। बात–चीत के दौरान किसान दालमोट के मालिक श्री गोपाल जी ने प्रतिनिधि से जानकारी लेना चाह रहे थे कि आखिर दौषी कौन है? एक ओर सरकार बाल श्रमिक से कार्य लेने से मना करती है दुसरी ओर, न जाने कितने गरीब भुखे मर रहे हैं जैसा कि आपके सामने बैठा श्रमिक सहयोग लेने से मना कर कार्य की इच्छा रखते हुए ऑख से ऑसू निकाल रहा है। क्या इस श्रमिक को उल्टे पॉव लौटा दिया जाये या बाल श्रमिक को कार्य देकर जेल की हवा खायी जाये। सवालो का पहाड खडा करते हुये–बोले कि क्या बिहार सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाएॅ गरीब असहाय के लिये नही है? प्रिय पाठकगण आपको जानकारी देना चाहता हूॅ कि किसान दालमोट गरीब श्रमिको के लिये प्रथम और बिहिया में दुसरे स्थान का व्यवसाय है जहा श्रमिको को दिन में तीन बार खाना खिलाया जाता है जबकि दिन के दस बजे चाय कि व्यवस्था है। जिसकी जानकारी कार्यरत श्रमिक से प्राप्त कर सकते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि किसान दालमोट में कार्यरत कुल श्रमिको में सौ में सतर ऐसे श्रमिक हैं जो माह पुरा होने के पहल ही अपना मजदुरी ले लेते हैं। जिसका मुख्य कारण है श्रमिको की गरीबी और मालिक की उदारवादिता। शायद किसान दालमोट के मालिक की पहली सोच होगी कि–श्रमिक खुश तो हम और हमारा परिवार खुश। ●

भू-अर्जन विभाग भूमिगत क्यों : अमिताभ

जिला भू–अर्जन विभाग'बक्सर' के कार्य पद्वति से आश्चर्य चकित होकर लीलावति देवी के पुत्र अमिताभ कुमार ने केवल सच प्रतिनिधि को जानकारी दी कि लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी ''बक्सर'' के लगातार सुनवाई व पत्र निर्गत करने के बाद भी जिला भू–अर्जन विभाग सुनवाई के दौरान क्यो नही उपस्थित हो रहा है। क्या भू–अर्जन विभाग के कर्मचारी सहित प्रधान लिपिक का मुख्य भुमिका है जिसके मिलिभगत से करोडो का जमीन मुआवजा फर्जी लोगो को दे दी गई। लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी का लगातार सुनवाई व भू–अर्जन विभाग का उपस्थित न होना भ्रष्टाचार का चस्मदित गवाह व मिलि–भगत का प्रमाण है जो विभाग के प्रधान लिपिक की देन है। अगर ऐसा नही है तो मैं अमिताभ कुमार भू–अर्जन विभाग से बार–बार निवेदन करता हुॅ कि विभाग के कर्मचारियो द्वारा मानवीय भूल हुई हो तो जमीन की जमीनी हक्कीकत जॉच कर मुझे जमीन की मुआवजा मुहैया कराई जाये।

प्रस्तुति :–बिन्ध्याचल सिंह

आप भी बनें पत्रकार

भ्रष्टाचार एवं भ्रष्टों के खिलाफ बेझिझक कलम उठाईये। बेरोजगारी के अभिशाप को मिटायें। देश के सभी प्रदेश की राजधानी और देश के सभी प्रदेश के शहरों में संवाददाता की आवश्यकता है। कर्मचारी नहीं हिस्सेदार बने। जितना श्रम उतना पारिश्रमिक पायें।

सम्पर्क करें:-

9431073769/9308727077

पत्रकार, मैं तुम्हे बर्बाद कर दूंगा : एच.आर. रामको

● बिन्ध्याचल सिंह

रामको, बिहार के भोजपुर जिला में स्थित बियाडा क्षेत्र बिहिया के घनी आबादी में सिंमेट की चादर बनाती है जिसका मुख्यालय चेन्नई में स्थित है। केवल सच के प्रतिनिधि को जुलाई–2017 में पता चला कि रामको में प्रतिवर्ष करोडो–करोड रूपये की अनियमिता है। जिसकी जानकारी के लिये केवल सच समय–समय पर रामको में दस्तक देते हैं और मोबाईल का नम्बर मिलाते रहते है परन्तु रामको के कोई भी पदाधिकारी प्रतिनिधि से मुलकात नही करते हैं। जब कभी भी दस्तक देते हैं; सुरक्षा गार्ड कहते है पदाधिकारी व्यस्त हैं जैसा कि पदाधिकारी से मोबाईल से बात करते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुये मैं 13/04/2018 को रामको के एच0आर0 चन्द्रशेखर सिंह के कम्पनी मोबाईल नम्बर पर दिन के ग्यारह बजकर दस मिनट पर कॉल किये। कॉल रिसीव/प्राप्त किये। प्रतिनिधि–पत्रकार बिन्ध्याचल सिंह बोल रहा हुँ' क्या मेरी बात आदरणीय बख्शी साहब से हो रही है। जवाब आया–नही, मैं पत्रकार का दुश्मन एच0 आर0 चन्द्रशेखर सिंह बोल रहा हूँ। तू; मुझे बहुत परेशान कर रहा है प्रतिनिधि–ठीक है। माफ किजीएगा मुझे अमरेन्द्र कुमार बख्शी से बात करनी थी। फिर जवाब आया–तु व्यक्गित परेशान करता है' मैं तुम्हे बर्बाद कर दूँगा? प्रतिनिधि–ठीक है सर कर

पीड़ित श्रमिक, रामको

चन्द्रशेखर सिंह, एच.आर., रामको

दिजिएगा। और एच0 आर0 मोबाईल बन्द कर दिये। प्रिय पाठकगण आपलोगों को अवगत करना चाहता हुँ कि मैं अक्टुबर–2017 से रामको के पदाधिकारियो से मिलने के लिये रामको के गेट पर दस्तक देते थे' देते हैं और देते रहेंगें; क्योकि मुझे जानकारी मिली है कि रामको में पदाधिकारियो के द्वारा सालाना करोडो रुपये की क्षति/घोटाला करते आ रहे हैं जिसकी जानकारी के लिये केवल सच प्रतिनिधि रामको में दस्तक देते है और देते रहेंगे जबतक सच्चाई का पता न चल जाये। इसके लिये रामको के एच0 आर0 चाहे जो कदम उठा लें। रामको के पदाधिकारियो से निम्न बिन्दु की जानकारी लेने की इच्छा प्रतिनिधि रखते हैं। पहला–क्या रामको में कार्यरत विद्युत श्रमिक से लगातार 96 घंटा काम लेने का नियम है? दुसरा– क्या श्रमिकों के नाम से भविष्य निधि जमा किया जाता है। तीसरा–क्या श्रमिको को दी जाने वाली चाय में सुबह डेढ लीटर और शाम में एक लिटर दुध का प्रयोग किया जाता है। चौथा– क्या रामको परिसर में धरती में लगभग 3 फिट से 20 फिट के बीच; नीचे टुटा हुआ सिमेंट का चादर दबाया गया है। पॉचवा–मशीन संचालित होने वाले बेल्ट/पट्टा का प्रयोग साल में कितना होता है कि जानकारी संख्या में जानना चाहतें हैं; जहॉ तक बात रही व्यक्गित परेशान करने की तो केवल सच और केवल सच टाइम्स ऐसी कोई भी खबर प्रकाशित नही करती है जिसे किसी व्यक्ति विशेष की क्षति या परेशानी हो क्योकि पत्रिका की अपनी एक सिद्धांत है। आदरणीय एच0 आर0 साहब आपकी सोच ठीक है क्योकि बिहिया में स्थित रामको के आप सर्वेसर्वा हैं। अतः लाजमी है कि कोई भी जिम्मेवारी आपकी बनती है परन्तु आपकी व्यक्गित नही है। शायद आपको जानकारी हो या न हो आपके रामको बिहिया में ऐसे पदाधिकारी कार्यरत हैं जो महज चार से पॉच साल में छः से सात ट्क के मालिक बन चुके हैं, जो जॉच का विषय है। मैं आपको जानकारी देना चाहता हुँ कि रामको मे कार्यरत एक श्रमिक' व्यक्गित प्रयोग के लिये तीन बाइक का प्रयोग करते हैं जो उनका तीनो बाइक खरीदी हुई है। न कि दहेज या दान में मिला है। श्रमिक द्वारा दी गई जानकारी और 13/04/2014 को आपसे हुई बातचीत की तुलनात्मक चिन्तन से सचमुच मुझे यकीन हुआ कि आप और आपके अधीनस्थ पदाधिकारी द्वारा किये जा रहे कर्तव्यनिष्ठता' अथक है। इसको नकारा नही जा सकता। आप मुझे बर्बाद करेगे! ये आपका विवेक है परन्तु मैं केवल सच पत्रिका के झारखंड में होने वाले कार्यक्रम के समय आपके दो पदाधिकारी–पहले पदाधिकारी के मकान का तस्वीर जो झारखंड में स्थित है और दुसरा पदाधिकारी के मकान और ट्क का तस्वीर जो रामको में कार्यरत है। बशर्ते आपकी दबंगतापूर्ण आर्शीवाद की इच्छा रखता हुँ। जरा सोचियेः–आपलोग उत्तर प्रदेश; झारखंड और बिहार के पटना जिला से आकर मुझे बर्बाद करेंगे और मेरी कलम आपलोगो की तस्वीर रुपी घोटाले श्रमिको की उत्पीडन को आरती गायेगी। अन्त में आपको बताते चलें कि मेरे पास कुल आठ प्रमाण उपलब्ध है जो आपके द्वारा नन्दु गोहलत को दी गई घोर अपराध की परिभाषा के लिये ''नहला पर दहला'' है। ●

घोर अपराध की परिभाषा, कर्तव्यनिष्ठ सुपरवाईजर, रामको